हिन्दी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका

वर्ष -1, अंक-3 (जनवरी -मार्च 2021)

हिन्दी की गूँज

2021

हिन्दी की गूंज अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका

संरक्षक एवं संपादक

रमा शर्मा (जापान)

हिन्दी की गूंज
Saqib Majeed
अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका
संरक्षक एवं संपादक
रमा शर्मा
जापान
日本

संरक्षक एवं सम्पादक

डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा

जापान

उप संपादक

शामलाल पुरी

लंदन

साहित्य सम्पादक

कपिल कुमार

बेल्जियम

वेब संपादक

जे पी द्विवेदी

गाजियाबाद

सलाहकार सम्पादक

विनोद पाण्डेय

गाजियाबाद

वरिष्ठ परामर्शदाता

डॉ हरीश नवल

प्रकाशन :

हिन्दी की गूँज

जापान

हिन्दी की गूँज

♦ सभी पद अवैतनिक हैं। ♦

नोट : पत्रिका में प्रकाशित किसी सामग्री के लिए संपादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा सक्षम न्यायालय द्वारा किया जाएगा।

अनुक्रम

संपादकीय

अपनी बात- डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा /5

आलेख/शोध लेख/निबंध

अंतहीन का अंतहीन मानवतावादी दृष्टिकोण- डॉ शुधांशु कुमार शुक्ल /7&11

खुलना पत्तों का-हरीश नवल /33

श्रीकृष्ण तिवारी जी की रचनाधर्मिता–एक अध्ययन डॉ जयशंकर शुक्ल /48&52

प्रेमचंद रचित उपन्यास'सेवासदन' में नारी पात्र सुमन की मानसिकता-एक अनुशीलन- डॉ सुविद्य धारवाडकर /52&55

गुरु नानक देव द्वारा रचित आदर्श समाज की संकल्पना-प्रो हरप्रीत कौर /56&61

जन्म शताब्दी वर्ष शंकुत माथुर-डॉ शुभा श्रीवास्तव /62&64

सतगुरु नानक प्रगटया मिट्टी धुंध जग चानन होया-विवेक शर्मा /64&66

कविता /गीत /गजल

गजल-कपिल कुमार /6

2020 का साल-नीविया /12

यहाँ पुरुष क्यों उदास होते हैं-नीविया /12

संजय कु त्रिपाठी की कवितायें- संजय कु त्रिपाठी /13

हिन्दी पर दोहे-सूर्य प्रकाश सोनी /13

क्रोध-बोधमिता /14

गीत-गजल-अंकुर शुक्ल 'अनंत' /14

गीत-विश्वनाथ तिवारी 'विश्व' /15

गजल-डह पूनम माटीया /15

गजल-कामना मिश्र /16

गजल-तान्या सिंह /16

जिंदगी-उपासना सियाग /17

नदी- डॉ सुधा मिश्र द्विवेदी /17

नारी तेरे कितने रूप-बजरंगी लाल /18

तन-मन को जीवंत करो- शुभदा वाजपेयी /18

चाणक्य प्रतिज्ञा-कमलेश पाण्डेय'कमल' /20

खुसियों वाला सेंटा-नरेंद्र सिंह निहार /20

वाह वाह रे इंसान-डॉ सीमा भाँति'नीति' /21

पुरुष होना आसान नहीं होता-डॉ सुधा मिश्र द्विवेदी /21

राकेश छोकर की कवितायें-राकेश छोकर /22

गीत-श्रीभगवान पाण्डेय /23

बुरे समय की आधियाँ-प्रियंका सौरभ /23

पंकज मिश्र 'अटल' की कवितायें- पंकज मिश्र 'अटल' /24

पूर्णता का आभास-पूनम गौतम /28

कविता क्यों लिखती हूँ-सारिका श्रीवास्तव /28

सुधीर केवलिया की कवितायें- सुधीर केवलिया /29

समय- भगत सिंह /30

एक मोची-अनुराधा अच्छवान /30

रिस्ते-रितु कुलश्रेष्ठ /32

प्रेम-विष्णु सिंह /36

राह झूठ के हैं कई-महेंद्र कुमार वर्मा /36

राम भजो-विनोद पाण्डेय/37

मेरा बचपन-अमलेंदु शुक्ल /37

गाँव की स्वर्णिम यादें-ब्रह्म स्वरूप मिश्रा 'ब्रह्म' /40

लाल देवेन्द्र श्रीवास्तव की कवितायें- लाल देवेन्द्र श्रीवास्तव /40&41

परिवर्तन-चेतन रामकिशन 'देव' /41

क्या भूलूँ क्या याद रखूँ-वीरेंद्र जैन /43

संयम से समाधि तक-वीरेंद्र जैन /43

सत्तर पार की औरतें-पूर्णिमा शर्मा /44

बड़े बेटों सी बेटियाँ- तृप्ति मिश्रा /44

मन से बचपन नहीं गया है- डॉ जयप्रकाश मिश्र /68

दीप जलाने आ जाना- डॉ जयप्रकाश मिश्र /68

बन सौरभ तू बुद्ध-डॉ सत्यवान सौरभ /69

भिखारी-अमिताभ पाण्डेय /69

हौसला-ज्योति /69

गाँधी तेरे देश में- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /70

संस्मरण /कहानी/लघुकथा

हिंग्लिश-डॉ ममता श्रीवास्तवा 'सरूनाथ' /26

माँ की सीख-डॉ दीप्ति जोशी गुप्ता /26

माँ-रत्ना श्रीवास्तव /27

कफन-डॉ सुरीति रघुनंदन /27

नजारिया-अन्नपूर्णा वाजपेयी /27

मुआवजा-मनीष कुमार सिंह /31&32

मुफलिसी से जंग-अन्नपूर्णा वाजपेयी /46

साथी-अरुणा कुमारी राजपूत'राज' /46

शिवोहम-दीपक श्रीवास्तव /47

व्यंग

केमद्रुम योग-उपासना सियाग /19

बत्तीसी पुराण-प्रेम गुप्ता 'मानी' /34&35

पकौड़ा दिवस पर नेताजी का उद्बोधन-अरविंद पथिक /42&43

समीक्षा

हास्य-व्यंग के डंडे से विसंगतियों पर चोट है 'बम-बम भोले'-अरविंद पथिक /25

रोचक और आनंदवर्धक पहेलियों की पुस्तक : 51 बाल कहानियाँ-ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' /45

समाचार

हरियाणा की बेटी डॉ एस अनुकृति /38

अंतराष्ट्रीय विचार गोष्ठी /39

शोभना फिल्म फेस्टिवल 2020 का हुआ सफल आयोजन /66&67

अंतरराष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता में रितु कुलश्रेष्ठ रही प्रथम /70

संपादकीय

अपनी बात

नया वर्ष नयी उम्मीदों को लेकर आया है। वो सारी उम्मीदें जो 2020 में डगमगायी थी उन्हें अब रास्ता मिलने की सम्भावना है। उम्मीदों और विचारों का बड़ा गहरा सम्बन्ध है। सकारात्मक विचार , उम्मीदों को और मजबूत बनाते हैं और सकारात्मक विचार आत्मा की शुद्धता से मस्तिष्क में प्रवाहित होते हैं। यही हमें दृढ़ बनाते हैं। पिछले वर्ष तमाम आशंकाओं के बीच भी हिंदी और साहित्य के प्रवाह में कमी नहीं आयी। हमने साहित्य और तकनीकी का समन्वय देखा ,हमने कविता और सोशल मीडिया का समन्वय देखा। प्रवासी साहित्यकारों और भारतीय रचनाकारों का मिलाजुला जबरदस्त प्रयास देखा जो भविष्य में और भी कई रंग दिखाएंगे। यही कारण है कि हिंदी साहित्य के लिए आने वाला समय और सुखद होगा जिसकी शुरुआत 2021 से होगी। समय कितना भी कठिन हो बीत जाता है ,ऐसे ही 2020 भी बीत गया। बस बुरी बात कुछ न कुछ सिखा जरूर जाती है जो हमें 2020 भी सिखा गया और हमारा पुराना समय हमें याद दिला गया कि कैसे स्वच्छता का और अधिक ध्यान रखना है, दूरी से मिलना है पर दूर नहीं होना है।अब 2021 का स्वागत होना चाहिए। कोरोना वैक्सीन भी आ चुकी है ,जल्द ही इस बीमारी से छुटकारा पाने की मुहीम रंग लाएगी। 2020 में हमनें जो सपने अधूरे रह गये हैं उन्हें और अधिक जोर शोर से 2021 में सच करना होगा। सोशल मीडिया अब वैश्विक हिंदी के प्रचार-प्रसार में सबसे यंत्र बन चुका है। इसका और बारीकी से उपयोग करना है ताकि वैश्विक स्तर पर हिंदी और साहित्य को मजबूत बनाने वाले साहित्यकारों के अभियान को बल मिले। यह तो हिंदी को लेकर नए वर्ष से उम्मीदें किन्तु हम मनुष्यों के लिए भी यह वर्ष सुखदायी होगा ऐसा मेरा ही नहीं हम सब का विश्वास है और ये विश्वास रंग लायेगा। जैसे जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं वैसे ही वैश्विक स्थितियों में भी परिवर्तन होता है। कोरोना का खत्म जल्द निकट है। तमाम बुरी शंकाओं को अब त्यागने का वक्त आ गया है। मिलजुल कर आगे बढ़ने का वक्त आ गया है। हिंदी की गूँज को और अधिक तेजी से गुंजायमान करना है ये बीड़ा हम सब को उठाना है।

हिंदी की गूंज से जुड़े सभी साहित्यकारों और पाठकों को 2021 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

आप सब के लिये एक नई और सुखद सूचना है कि हिंदी की गूंज का यूट्यूब चौनल तैयार है, जिस भी रचनाकार की रचना छपेगी उन सब से अनुरोध है कि अपनी रचना का विडियो बना कर भी भेजें, चाहे मेल करें या मेरे नम्बर पर 818038529320 पर अवश्य भेजें, उनकी रचनायें यूट्यूब पर भी अपलोड होंगी और दुनिया देखेगी और सुनेगी आप को।जिसकी रचना छपने से रह जाती हैं वो कृप्या मुझे सूचित करें और अपनी रचना की विडियो बना कर भेज दें हिंदी की गूंज को समर्पित करते हुए।

आप सब के सुझाव सादर आमंत्रित हैं
hindikeegoonj@gmail-com पर

आप की अपनी
रमा पूर्णिमा शर्मा,
जापान

डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा
मुख्य संपादक
जापान

गजल

ये दिले बेकरार बाकी है
जिन्दगी का खुमार बाकी है

वक्त ने ख्वाब सारे तोड़ दिए
डूबी कश्ती , सवार बाकी है

में भी हारा नहीं हूँ जख्मी हूँ
जंग भी आर – पार बाकी है

सारे दरबार खटखटा आए
सिर्फ तेरा दयार बाकी है

जुल्म तुमने बहुत किए लेकिन
अब भी ये जां निसार बाकी है

कपिल कुमार
बेल्जियम

कपिल कुमार
बेल्जियम

'अंतहीन' का अंतहीन मानवतावादी दृष्टिकोण

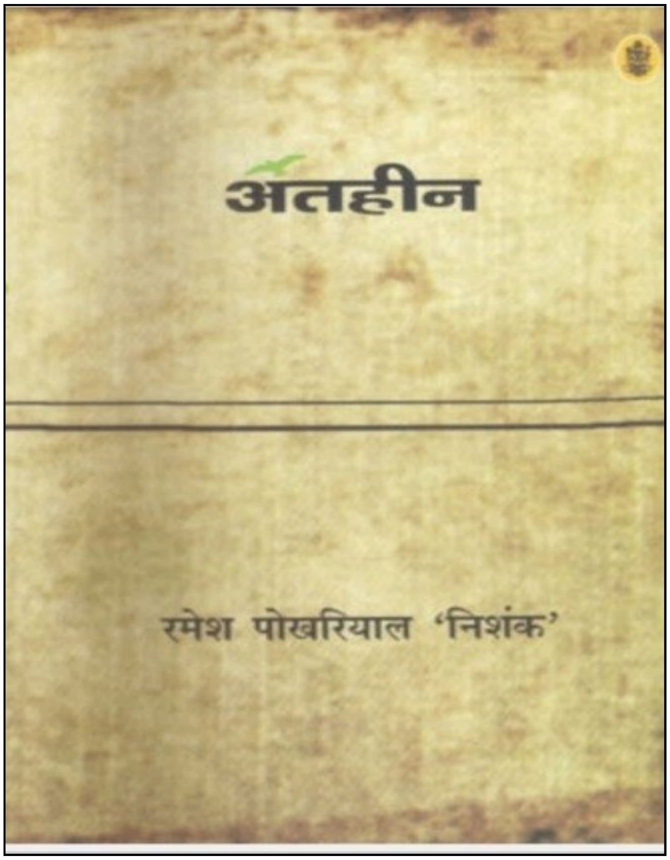

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक जी के कहानी संग्रह अंतहीन को 12 अविस्मरणीय कहानियों का दस्तावेज कहना ठीक है, इससे भी अधिक यदि यह कहा जाए कि यह कहानी संग्रह सांस्कृतिक-बोध और मानवीय-रिश्तों की अद्‌भुत गाथा है, तो अधिक सटीक होगा। कहानीकार का कवि मन कहानी के साथ-साथ भाषाई-सौंदर्यबोध, उत्तराखंड के सुरम्य प्राकृतिक सुषमा को चित्रित करता चला जाता है। यही कारण है कि वाह! जिंदगी कहानी संग्रह पर चर्चा होने के तुरंत बाद बेचौन कंडियाल जी के द्वारा उपलब्ध कराई गई। इस कहानी संग्रह पर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरा पर डह. विनय पाठक और श्री बी. एल. गौड़ जैसे संतों के समक्ष साहित्य की मंदाकिनी की कल-कल ध्वनि की गूँज न केवल छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालयों में गूँजी अपितु इसका नाद सौंदर्य भारत की सीमा को बेधता हुआ, विदेशी विश्वविद्यालयों को भी आनंदित कर गया। यहाँ रमेश पोखरियाल जी की ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं-

देख निर्धन को सबने हैं, कुचला जहाँ
ढोंग का बन गया है, व्यक्ति पुतला वहाँ
आज मानवता पहचान, खोती है।
क्यों न मानवता की, बात होती है।

अधिकांश साहित्यकारों ने तो विमर्शों की चर्चा-परिचर्चा के माध्यम से जीवन के खंडित रूप पर चर्चा करके अपनी विद्वता को लोगों के समक्ष रखा, अनूठी शैली में चित्रित किया। ऐसे समय में जीवन को समग्रता के साथ देखते हुए, जीवन की कला सिखाते हुए, सहज भाव से स्वयं को अर्थात् पाठक को आईना दिखा कर मुस्कुराते हुए चलते ही जाने का नाम रमेश पोखरियाल है। कहीं कोई भी कहानी उपदेशक जैसी नहीं लगती है, शिक्षा के वास्तविक अर्थ, साहित्य के वास्तविक अर्थ को उद्‌घाटित करती हुई स्वयं की कहानी लगती है।

अंतहीन नामकरण की सार्थकता को सिद्ध करती हुई ये कहानियाँ पाठक मन को सोचने समझने को प्रेरित करती हुई, अनेक प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए बाध्य करती हैं। यही कारण है कि इनकी कहानियाँ और इनके पात्र देशकाल की सीमाओं से परे सार्वभौमिक, सार्वदेशीय बन जाते हैं। साधारणीकरण की यह प्रक्रिया सुखद अनुभूति देती है।

अतीत की परछाइयाँ कहानी मात्र माता-पिता से बिछुड़े सरजू की कहानी नहीं है, अपितु यह कहानी भागीरथी और रामरथ के एकमात्र पुत्र को विदेशी दंपत्ति को बेचे जाने की दर्द भरी कहानी है। कहानीकार ने जहाँ उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में भटकते लालची लोगों द्वारा बच्चों को उठाकर विदेशियों को बेचने की समस्या को चित्रित किया है। वहीं अपने बेटे की याद में जीवन काटने पर अचानक नीदरलैंड से आए विदेशियों के झुंड में एक बालक को दे खकर हू-बहू अपने बेटे का चेहरा देखकर रामरथ व्याकुल हो उठता है। जब वह पूरी घटना पत्नी को बताता है तो वह भी व्याकुल हो उठती है। युवकों का दल वापस लौटकर आयेगा, इस बात को ध्यान में रखकर भागीरथी का मातृहृदय विकल हो उठता है, माँ की ममता पुत्र से मिलने के लिए बेचैन हो उठती है, सुख के मारे अंतः चेतना जागृत हो जाती है, मृतप्राय में मानों एक बार फिर प्राण संचार हो गया हो ऐसा लगने लगता है। प्रातः से शाम तक चाय की दुकान पर उससे मिलने की आशा में बैठती है। एक दिन आ जाने पर और पूछने पर किस देश से आए हो अपने बेटे को पहचानने-जानने पर भी अपनी ममता को दबाकर वह शब्दहीन हो जाती है। वह सोचती है कि अगर वह यहाँ होता तो चाय की दुकान पर ही बैठता। उसका बेटा जिंदा है, खुश है यही भागीरथी और रामरथ की खुशी, महिमा है। 'जीवन एक बार फिर पुराने ढर्रे पर चल निकला। लेकिन एक अंतर भागीरथी के जीवन में जरूर आ गया था, अब वह रोज पति के साथ चाय की दुकान पर बैठने लगी। आखिर उसका बेटा फिर आने की जो कह गया।' (पृष्ठ-12) भागीरथी और रामरथ नाम के पात्र उस मर्मस्पर्शी ममत्व की कुर्बानी की याद दिलाते हैं, जिन्होंने मानवता के हित में ही काम किया। भागीरथी और रामरथ भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। भागीरथी गंगा की पावनता को धारण किए हुए बच्चे के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान करने के लिए तैयार है। रामरथ भी पिता के पितृत्व को धारण किए हुए है। यह कहानी डॉ.

रामकुमार वर्मा की एकांकी ‘प्रतिशोध’ की याद दिलाती है। संसार में माँ की ममता को नापने वाला थर्मामीटर ही नहीं बना है। यह कहानी श्री बी.एल. गौड़ की कहानी ‘प्रतिशोध’ की भी याद दिलाती है। जहाँ माँ अपने राष्ट्र अपने स्वाभिमान के लिए बलात्कारी अमेरिकन सैनिक से जन्मे पुत्र को ठंडे पानी में डुबोकर मार डालती है।

अनजान रिश्ता कहानी वास्तव में ससुर-बहू के अनोखे रिश्ते की दास्तान है। मेरे जीवन की यह बेमिसाल कहानी है, जहाँ बहू सुलक्षणा दीनानाथ के बेटे से शादी करना चाहती थी, शादी से ठीक पहले ही अनुपम की मृत्यु हो जाने पर अनुपम के पिता दीनानाथ को अपने पिता के रूप में मानकर, अपनी पूरी जिंदगी उनकी सेवा में लगा देती है। यह मानवता की एक अद्भुत मिसाल है। रमेश जी को सुविख्यात साहित्यकार भी बनाती है। यह कहानी कई सारी बातें एक साथ पाठक के मन-मस्तिष्क पर अपना प्रभाव छोड़ती है। ‘इस घोर कलयुग में ऐसा भी होता है क्या? जहाँ लोग खून के रिश्तों को भी नहीं निभा पाते वहाँ दीनानाथ जी और सुलक्षणा ऐसे रिश्ते को निभा रहे थे, जो कभी बना ही नहीं।‘ (पृष्ठ-20) यह कहानी अंतहीन चिंतन-मनन करने और स्वयं को देखने परखने को मजबूर करती है। जहाँ बेटे और बहू वृद्धों को वृद्धाश्रम छोड़ रहे हैं, उनका बुढ़ापा नरक बना रहे हैं। स्त्री विमर्श, वृद्ध विमर्श से भी ऊपर भारतीय संस्कृति में मानवता की विशद् व्याख्या है, जो आज अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है, उसे लाने का प्रयास, उसकी बेचैनी साहित्यकार के साहित्य और आचरण में दिखलाई पड़ती है। यह कहानी विकलांग व्हीलचेयर पर बैठे ससुर की सबलता को दर्शाती है। उनकी मानवतावादी दृष्टिकोण, उनकी दूरदर्शिता को दर्शाती है। सुलक्षणा की दृढ़ता और प्रतिबद्धता से डरे दीनानाथ अपनी बिन ब्याही पुत्र वधू को अपनी बेटी की तरह आगे पढ़ाकर प्रोफेसर की नौकरी तक पहुँचा देते हैं। यह अद्भुत कहानी समाज में रिश्तों की ताजगी, पवित्रता, कर्तव्यनिष्ठता, परायणता का संचार करती है। यह कहानी विकलांग विमर्श की अद्भुत कहानी भी कही जा सकती है। विकलांग की छठी इंद्रिय का प्रभाव और उनकी जिजीविषा को यह दर्शाती है।

संपत्ति कहानी में नालायक पुत्र की नालायकी और भू-माफिया की चालबाजी देखने को मिलती है। ‘प्रहपर्टी के लिए नकली वसीयतनामें, फर्जी प्रमाणपत्र लगाकर भी लोग संपत्ति हस्तांतरण को चले आते.... प्रहपर्टी का तो चक्कर ही ऐसा है ये तो मुर्दे को भी कब्र से उठाकर खड़ा कर देता है और जिंदे को भी कब्र में गाड़ देता है।‘ (पृष्ठ-21) कहानीकार अगर कहानी को यहीं तक दिखाता तो कहानी सामान्य बन कर रह जाती। कहानीकार का उद्देश्य तो पति-पत्नी के झगड़ों से पुत्र की बर्बादी का रास्ता दिखाना मात्र भी नहीं है। अपने पुत्र के लिए रिटायरमेंट के बाद भी जमा पूँजी लगा देने वाला प्रशांत संबंधों की एक नई पकड़, एक नई राह में बंधकर सुमंगला नामक नारी के नारीत्व और प्यार को भी दिखाना चाहता है। शायद विवाह के बंधन में ना बंधकर भी एक साथ रहने वाली सुमंगला को प्रशांत का बेटा घर से निकाल देता है। सुमंगला को ढूँढते हुए प्रहपर्टी अधिकारी जब वृद्धाश्रम पहुँचते हैं, तब सुमंगला कहती है, ‘वो प्रशांत का बेटा है और प्रशांत मेरे लिए सब कुछ था। जो कुछ प्रशांत ने मुझे दिया वह मेरे लिए अमृत के समान है। उसी अमृत के प्रभाव और उनके साथ बिताये समय के सहारे मैं अपना शेष जीवन गुजार लूँगी। प्रशांत की हर चीज मेरी अपनी है, इसलिए बेटा और बहू भी मेरे अपने हैं। अपनों को कुछ देकर बहुत संतोष मिलता है बेटा।‘ (पृष्ठ-33) संपत्ति प्रशांत के नाम हो गई। भारतीय समाज में नारीत्व की पराकाष्ठा को दर्शाती यह कहानी आज के समय में और भी अधिक उपयोगी लगती है। जैसा नाम वैसा गुण, सुमंगला अर्थात् सुमंगल की कामना धारण करने वाली सावित्री, सीता जैसी नारियों के देश को गौरवान्वित करती है। लगभग 11 साल से प्रशांत के साथ रहने वाली सुमंगला प्रशांत को ही नहीं उसके बेटे को भी अपना मानती है। अपनी जमा पूँजी भी प्रशांत के लिए अर्पित कर देती है। भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति के चितेरे कहानीकार के द्वारा ऐसे समय में ऐसी नारी पात्र की संकल्पना गढ़ कर समाज को दिशा देते नजर आते हैं। खून से भी बढ़कर ममता का, मानवता का संबंध होता है। साथ ही साथ माँ, माँ होती है। वह कभी भी कुमाता नहीं बन सकती, पुत्र कुपुत्र हो सकता है। कहानीकार ने यहीं तक दम नहीं लिया, वह तो इस कहानी के साथ-साथ सरकारी कार्यालयों में होने वाली बकरा हलाल की रस्म को भी दर्शाते हैं। संपत्ति ट्रांसफर होने वाले कार्य की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है। साथ ही साथ कुछ ईमानदार लोगों के कारण दुनिया चल रही है, यह भी दिखता है। प्रहपर्टी विभाग में महिला अधिकारी की सजगता, कहानी को ही आगे नहीं बढ़ाती है, वह उस संवेदना की मूर्ति है, जो गलत होते हुए को देखना पसंद नहीं करती है। उसकी संवेदना हकदार के पक्ष में है, यह बहुत बड़ी बात है। एक महिला अधिकारी का सच्ची हकदार को ढूँढना, उससे वृद्धाश्रम में जाकर मिलना, कर्तव्य बोध की पराकाष्ठा है।

‘बदल गई जिंदगी‘ फ्यूँली नामक पात्र की कहानी है, जिसका पति बकरियाँ चराते-चराते स्वयं खाई में गिर कर मर गया। बदलते समय में भी हिम्मत न हारने वाली फ्यूँली पहाड़ों की मूसलाधार बारिश में गाँव के स्कूल में फँसे अपने छोटे बच्चों को भी खो देती है। सरकार द्वारा दिए गए पैसों को न लेकर उसने सरकार से कहा, मुझे पैसा नहीं चाहिए साब, बच्चों के स्कूल में नौकरी दे दो, मेरी दो वक्त की रोटी भी चल जायेगी और स्कूल के बच्चों में अपने बच्चों को ढूँढ लूँगी। (पेज-39) आया की नौकरी में दूसरों के बच्चों में खुश होकर वह अपनी खुशी ढूँढती है, उन्हें अपना समझती है। यह एक ऐसे नारी पात्र की कहानी है, जिसने अपना सब कुछ खोकर इस पूरे संसार को पा लिया था। त्रासदी से भरी कहानी में भी सकारात्मक सोच को दर्शाना साहित्यकार की दिव्य दृष्टि होती है। अपना सब कुछ खो जाने के उपरांत दूसरों के

बच्चों में अपने बच्चों की झलक पाकर आनंदित होना नारी के देवी रूप को दर्शाता है। फ्यूँली दूसरों के बच्चे की जी जान से स्कूल में देखभाल करती है। कहानीकार ने फ्यूँली के माध्यम से कार्य की महत्ता, उसके कर्तव्य बोध से होती है, यह संदेश भी दिया है। साथ ही साथ जीवन के विषम दिनों में धैर्य रखना मानव का धर्म होना चाहिए। दिल को छू लेने वाली आया समुदाय का प्रतिनिधित्व यह कहानी करती है। 'बच्चे तो भगवान का रुप होते हैं मैडम वह सबके होते हैं।' (पृष्ठ–35)

'गेहूँ के दाने' कहानी कालाहांडी की याद दिलाते उन निर्धन लोगों की दास्तां है, जो कूड़े करकट को बीन कर जीविका चलाते हैं। दूसरी ओर काला बाजारी के कारण सड़ा गेहूँ भी शराब की फैक्ट्रियों में बेचकर धन कमाया जाता है। यह कहानी एक विनायक की नहीं, उन युवकों की है, जो यह सब दे खकर आग बबूला होते हैं, समाज जिन्हें पागल कहता है। उड़ीसा से पलायन करके आए मजदूर विनायक की ही यह कहानी नहीं है, यह कहानी गाँवों से पलायन करने वाले किसान, मजदूर के विमर्श को भी चित्रित करती है। गरीबी, भुखमरी के कारण कीड़े–मकोड़ों की तरह जिंदगी जीने वाले इंसानों की यह कहानी है। अंतहीन लालच, जमाखोरी का भयावह चित्र मस्तिष्क पर अपने आप ही उभर आता है।

पूँजीपतियों द्वारा जमाखोरी की स्थिति का चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है। समाज मूक बना हुआ केवल और केवल इसके बारे में सोचता है, यह अति निंदनीय है। कहानीकार ने बरसात के कारण उच्च मध्यम वर्ग और मजदूर वर्ग के घर की स्थिति का मर्म स्पर्शी चित्रण किया है। 'पानी बरस रहा है तो सब कुछ बंद है। ना दूध की सप्लाई न सब्जी की। उच्च और मध्यम वर्ग को तो इस बारिश से बहुत अधिक असर नहीं हुआ। इतना जरूर हुआ कि चार दिन से वही आलू, प्याज और दालें खाकर वह ऊब जरूर गए थे। लेकिन एक ऐसा तबका भी था, जो रोज कुआँ खोदकर पानी पीता और ये वे लोग थे जो दिहाड़ी मजदूरी कर रोज कमाई करते और उसी से इनका चूल्हा जलता। लेकिन इस बारिश ने तो इन झुग्गियों को पूरी तरह तबाह कर दिया था। जगह–जगह इन झुग्गियों से बि खरा हुआ सामान तैर रहा था।' (पृष्ठ–40) कैसे संबंध लिव इन रिलेशनशिप पर केंद्रित कहानी है। कहानीकार की दृष्टि पाश्चात्य संस्कृति के भारत में पसरते पाँवों की ओर भी है। किस प्रकार इस संस्कृति ने स्वतंत्रता की आड़ में विकृति फैला दी है। हमारे महानगरों में युवा इसमें फँसते जा रहे हैं अर्थात् इससे प्रभावित भी हो रहे हैं। माता-पिता के लिए ऐसे रिश्ते गले की फाँस या हड्डी बन गए हैं। यही कारण है कि पलक की माँ स्वप्ना को यह सब अच्छा नहीं लगता है। 'बेटा इसे कोर्ट ने मान्यता दी है पर क्या समाज ने भी मान्यता दी है इसे। कोर्ट चाहें कुछ भी कहे, आखिर रहना तो इसी समाज में है ना। क्या करेंगे उस कानूनी मान्यता का जिसे समाज नहीं मानता?... कानून में न्याय मिल सकता है, प्यार और अपनापन नहीं। कानून जबरन यह नहीं कह सकता कि माँ–बाप बच्चे को प्यार करें या बच्चे माँ–बाप की भावनाओं का ध्यान रखें।' (पृष्ठ–50)

पिछले कई वर्षों से सिद्धार्थ के साथ रह रही बेंगलुरु में पलक डिप्रेशन में आकर नींद की गोलियाँ खा लेती है। कारण सिद्धार्थ ने दूसरी जगह शादी तय कर ली। अब वह केवल दोस्त बन कर रह सकता है। पलक के नहर्मल होने पर स्वप्ना उसके लिए एक रिश्ता ढूँढती है। सिद्धार्थ को जब पलक देखती है कि वह दूसरी शादी के लिए आया है, उसकी पत्नी मर गई है। वहाँ से पलक उठ कर चली जाती है। 'सिद्धार्थ को उसके द्वार पर एक बार फिर भेज कर ईश्वर ने उसके साथ न्याय किया है। ईश्वर की सत्ता पर विश्वास होता दिखा उसे, अब ना बोलने की बारी पलक की थी।' (पृष्ठ–56)

कहानीकार की दृष्टि में या फिर भारतीय संस्कृति में नारी-पुरुष के संबंध का मतलब उसके लिए पिता-पति या भाई का संबंध है। मित्रता के नाम पर, दोस्ती के नाम पर, मौज मस्ती के नाम पर लिव इन रिलेशनशिप की व्याख्या नारी का अधिकांश रूप से शोषण ही है। जिम्मेदारी ना उठाने का प्रतिफल भोगना पड़ता है, जिसे युवा भोग भी रहा है। भारतीय संस्कृति में विवाह दो व्यक्तियों के बीच रिश्ते का ही नहीं, दो परिवारों का मेल है। यहाँ पर पति-पत्नी की प्रतिबद्ध ता, लगाव, एक दूसरे के प्रति बना रहता है। दोनों अपनी-अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। हमारे यहाँ मित्रता का बोध खजाने, औषधि के रूप में होता है, दोहन के लिए नहीं।अंतहीन कहानी गरीबी, मजबूरी, लाचारी की विशद् गाथा है। ना जाने कितने वर्षों से दूसरों के घरों में काम करके जीविका चलाने वाली पावन महिलाओं के अथक परिश्रम और यातना का दस्तावेज है यह कहानी। गरीबी, मजबूरी की मार के साथ-साथ लुभायाराम जैसे पति पाकर झुमकी की माँ जैसी औरतों को शराब के नशे में मार–पीट की यातना भी झेलनी पड़ती है। इस वर्ग की विकट जिजीविषा और संघर्षरत नारी का प्रतिनिधित्व करती झुमकी को इस कहानी की नायिका या केंद्रित पात्र कहा जा सकता है। कीचड़ में कमल की तरह खिली झुमकी को घर की परिस्थिति के कारण विद्यालय देखने का मौका तक ना मिला। 'अपने चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी झुमकी के कंधों पर अपने भाई बहनों की देखरेख का भार पड़ गया यूं तो झुमकी की उम्र अभी 15 वर्ष की ही थी लेकिन ईश्वर ने कद काठी कुछ ऐसी तराशी थी कि वह अपनी उम्र से दो-तीन वर्ष बड़ी ही लगती।' (पृष्ठ–60) लाला सुखराम गरीबों को ब्याज पर उधार पैसा देता और सामान भी उधार देता। जो केवल अपना स्वार्थ खोजता है। लालची प्रवृत्ति का यह इंसान झुमकी जैसी लड़कियों को आपना शिकार बनाता है। यह कहानी अनमेल विवाह, ऋण की समस्या, दहेज प्रथा, नारी शोषण, रिश्तों की अमानवीयता, कामुक पुरूष की लालसा को दर्शाती है। साथ ही साथ गरीब महिलाओं की जिजीविषा को भी दर्शाती

है। यही अनमेल विवाह निर्मला उपन्यास में देखने को मिलता है। वहाँ दहेज न दे पाने के कारण निर्मला की आहुति होती है। इस कहानी में झुमकी अपने माता-पिता का उधार चुकाती है। वह एक साधन के रूप में दिखलाई पड़ती है। झुमकी भी एक पात्र न रहकर मजबूरी का प्रतिनिधित्व करती है। झुमकी का बचपन, यौवन सब स्वाहा हो जाता है। लाला की ही बेटियों के साथ वह खेल नहीं सकती, केवल लाला की हवस और लाला के शंकालु स्वभाव के कारण पिटने का माध्यम मात्र रह जाती है। झुमकी के शरीर के प्रति लाला की दानवी भूख ने झुमकी का हर दृष्टिकोण से शोषण किया, दैहिक भी और मानसिक भी। झुमकी वारिस लाला को देती अवश्य है, उसके रोगी शरीर को दे खकर लाला का प्रेम झुमकी के प्रति कपूर बनकर काफूर हो जाता है। लाला फिर से कर्जदार की तलाश में है जहाँ कोई बेटी हो और लाला बाप बेटी दोनों का उद्धार कर सके। (पृष्ठ-65) कहानीकार ने सैकड़ों वर्षो से चली आ रही मजबूरी में किए गए विवाह को संस्कार न मानकर शोषण-यातना की जीती जागती फिल्म के रूप में चित्रित किया। इस कहानी को पढ़कर रोटी, कपड़ा और मकान फिल्म याद आती है। यह विवाह नहीं बल्कि शारीरिक शोषण किए जाने जैसी ही घटनाओं को दर्शाती है। यह अंतहीन कहानी है लाला के द्वारा सताए गए कर्जदार की कुर्बानी की, झुमकी का ललाईन की तेरहवीं पर अच्छा भोजन मिलेगा यह सोच कर जाना। 'झुमकी ने ऐसा स्वादिष्ट खाना पहले कभी नहीं खाया था, बड़े मनोयोग से यह रायते की पत्तल चाट रही थी। रायता तो खत्म हो ही चुका था, साथ ही पत्तल पर पड़े उसके निशान भी झुमकी के उदर में समा चुके थे। लेकिन उसका मन नहीं भरा, ललचाई हुई आँखों से वह लाला के कारिंदो की ओर देख रही थी।' (पृष्ठ-60) कुपोषण, आधा पेट भोजन, उदर पूर्ति की भीषण समस्या और फिर स्वादिष्ट भोजन और मीठे की ललक मंदिरों के, गुरुद्वारों के आगे मंगलवार या पर्व के समय पर, लंगर के समय पर देखी जा सकती है। तमाम लोगों के बीच झुमकी जैसे कितने ही पात्र बैठे नजर आयेगे। अकर्मण्य, नशाखोर, अमानवीय पिता अपने कर्ज के लिए अपनी बेटी की देह का भी सौदा कर देता है अर्थात् लाला के साथ झुमकी का विवाह होना। भरपेट भोजन ना पाने वाली बेटी अपने पिता का कर्ज चुकाने का साधन बनती है। यह भयंकर शर्मनाक समस्या है। अंतहीन कहानी में मानवीय रिश्तें तार-तार होते नजर आते हैं।

'कतरा कतरा मौत' पलायन से जुड़ी कहानी है। एक तरफ गाँव से शहर की ओर भागते युवाओं का आकर्षण है, तो दूसरी ओर मंगसीरू की पत्नी कुंती का ग्रामीण जीवन के प्रति लगाव आकर्षण और संघर्ष है। पलायन का मर्मस्पर्शी चित्रण देखिए- 'पिछले कुछ वर्षों से जो पलायन का दौर आरंभ हुआ उसने पूरे गाँव को सूना कर दिया। अच्छे पैसे वालों के बच्चे जो एक बार पढ़ाई के बहाने शहर गए फिर गाँव ना लौटे। वृद्ध माता-पिता जब असहाय हो गए, तो वह भी बच्चों के साथ चले गए।' (पृष्ठ-67) विवशता और लाचारी के कारण मजदूरों-कृषकों का पलायन उन्हें शहरी षड्चंत्र का शिकार बना लेता है। बड़ी कोठी पर मंगसीरू चौकीदारी की नौकरी करके खुश है। उसे नहीं पता किस प्रकार झुग्गियों की जवान बेटियों को उठाकर, फुसलाकर व्यभिचार भी होता है। पुलिस की जाँच पड़ताल में मालिक और नौकर दोनों पकड़े जाते हैं। मालिक तो धन के बल पर छूट जाता है और मंगसीरू को दोषी घोषित कर दिया जाता है। कुंती और उसके बच्चे तो अब घर से बाहर नहीं निकलना चाहते। जहाँ जाओ एक ही बात कुंती को सताती है, जैसे गुनाह उसके पति ने नहीं बल्कि स्वयं उसने किया है। ...निरपराध कुंती को किस बात की सजा मिल रही है। यह सोचने समझने को कोई तैयार नहीं है और कुंती है कि तिल-तिल मरने की सजा भुगत रही है। (पृष्ठ-75) यह कहानी पौराणिक पात्र कुंती की तरह संघर्षमयी और ताने-बानों से भरी जीवन जीती दिखलाई पड़ती है।

इसी प्रकार रामकली कहानी भी निरपराध भोली-भाली ग्रामीण महिला की कहानी है। जिसका पति सुमेरु एड्स की बीमारी से मर जाता है। अशिक्षित ग्रामीण रामकली का लोग बहिष्कार कर देते हैं। एड्स को छूत की बीमारी समझने के कारण रामकली का बहिष्कार उसकी जान ले लेता है। उसने भी कोई अपराध नहीं किया, परंतु समाज उसे दोषी मानकर सजा देता है। 'अरे बाहर करो इसे कोई। अपने पति का रोग लेकर घूम रही है। हाँ इतना ध्यान सबने रखना है कि कोई उसे छू ना पाए। रामकली का अनपढ़ होना इस समय उसके लिए वरदान बन गया। पढ़ पाती तो यह पीड़ा प्रसव पीड़ा से कहीं अधिक होती। जब पढ़े-लिखे ही इसे पढ़कर समझ ना पाये तो अनपढ़ रामकली की क्या समझ में आता।' (पृष्ठ-113-114) कहानीकार ने बुद्धिजीवियों पर भी चोट की है। पढ़ना और पढ़ कर उसे जीवन में उतारना अलग अलग बात है। 'दहलीज' कहानी संबंधों की महत्ता को दर्शाती है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता क्षमा करना है। क्षमा करने से भूला-भटका घर आता है तो संबंध टूटते नहीं है। सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसका स्वागत करना यह कहानी सिखाती है। गरीब परिवार की अनुराधा के सौंदर्य और नृत्य से प्रभावित अन. ुकूल पिता से कहकर अनुराधा से शादी कर लेता है। अनुराधा की जिद से वह घर से भी अलग हो जाता है। एक दुर्घटना में घायल हो जाने के कारण अनुकूल का व्यापार ठप्प होने लगता है, ऐसे समय में अनुराग के मित्र अभिषेक का आना और अनुराधा के साथ अधिक रहना, अनुराधा का घर, बच्चों और पति अनुकूल की ओर ध्यान न देना। अभिषेक के प्रति अंधा विश्वास रखकर धोखा खाना इत्यादि घ टनाएँ अनुराधा को मायूस बना देती हैं। एक कटिबद्ध, सच्चा पति होने के कारण अनुकूल टूटी हुई अनुराधा को सहारा, अपनापन देकर फिर से जीवित कर देता है। यह कहानी एकल परिवार की त्रासदी और संयुक्त परिवार की विशेषताओं पर ध्यान आकर्षित करती है।

'फिर जिंदा कैसे' पहाड़ी नारी के संघर्षमयी जीवन की गाथा है यह कहानी। बिंदिया भोली भाली अल्हड़ पहाड़ी झरनों की

तरह इठलाती खिलखिलाती पहाड़ी सेब की सी लालिमा धारण किए हुए पति सुनील के साथ टिहरी गढ़वाल में आशियाना बनाती है। पति की बढ़ती आमदनी, पैसों की चकाचौंध से देहरादून में रहकर दाम्पत्य जीवन जीने लगते हैं। बढ़ती आमदनी से पनपे शराब पार्टी के कारण सुनील ने बिंदिया को मित्रों के सामने गँवार, अनपढ़ कहकर जलील करना शुरू कर दिया। यातना से कराहती बिंदिया एक दिन अपने जीवन को समाप्त कर लेती है। वह लड़का बताता है कि सुनील कभी-कभी चिल्लाता है कि उसने बिंदिया का खून कर दिया है। उसने मारा है उसे, हत्यारा है वह। पत्नी की असमय मौत ने उसे पागल कर दिया है। लेकिन यह तो सुनील जानता है या बिंदिया की आत्मा की कौन सी व्यथा ने सुनील को पागल किया है। (पृष्ठ-105) अपराध बोध से ग्रस्त सुनील की कहानी ही नहीं यह तो भारतीय नारी के समर्पण की कहानी है। ग्रामीण और शहरी संस्कृति को यह कहानी दर्शाती है। यह कहानी गलत तरीके से कमाए धन के प्रभाव को चित्रित करती है।

'एक थी जूही' की नायिका अपाहिज पिता, घरों में काम करने वाली माँ की बेटी जूही है। जूही भी झुमकी की तरह कीचड़ में खिले कमल की तरह सुगंधित और पावन है। शारीरिक सौंदर्य की स्वामिनी और उस पर सरस्वती की कृपा भी है। अपने भाई बहनों की देखरेख करने वाली जूही को निम्मो आंटी के यहाँ काम करने का मौका मिलता है। वहीं आगे बढ़ने के लिए सुमित के नौकरी दिलवाने, अंग्रेजी-हिंदी टाइप सिखाने के मकड़जाल में पड़कर उसका शारीरिक शोषण, उसके साथ सुमित व्यभिचार कर बैठता है। उसे इस कार्य में आने का निमंत्रण देकर वह पैसा कमाने का सबसे आसान और उत्तम साधन बताता है। कहानीकार की विशिष्टता यहीं स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। गरीबी मजबूरी है, लेकिन व्यभिचार द्वारा पैसा कमाना अपराध है, पाप है। यही कारण है कि जूही आने के बाद निम्मो आंटी को सब कुछ बता कर पुलिस की सहायता से सुमित को पकड़वा देती है।

आज के समय में जहाँ अपने शौक पूरा करने के लिए अच्छे घरों की लड़कियाँ इस देह व्यापार में नजर आती हैं। इसे कहानीकार अपसंस्कृति कहता है। साथ ही साथ धोखे में, मजबूरी में, लाचारी में किया गया कार्य पाप नहीं होता है। यह कहानी भोली-भाली लड़कियों के मर्दन की पीड़ा को बताती है। साथ ही साथ यह कहानी जीवन की जिजीविषा को भी दर्शाती है। कहानीकार ने दूसरों को धोखा ना मिले, उनको बचाना भी नागरिक का कर्तव्य बताया है, यह लेखक का मानवतावादी दृष्टिकोण ही है।

रमेश जी की कहानियाँ मानवतावादी सोच को दर्शाती है। कहानी की विशेषता का प्रथम गुण जिज्ञासा, निरंतरता होता है। जिज्ञासा के कारण नीरसता कहीं भी नहीं आती है। अंत भी कथानक की चरम सीमा पर होता है। पाठक चिंतन मनन करता है। इनकी कहानियों में चित्रात्मकता और सौंदर्यबोध का प्रभाव देखने को मिलता है। यह कहानीकार के कवि हृदय का प्रभाव कहा जा सकता है। चित्रात्मकता का एक उदाहरण देखिए, गुलाबी होंठ, काली और बड़ी-बड़ी आँखें, तीखी नाक, बचपन से ही वह गोल मटोल गुड़िया सी लगती थी।(पृष्ठ-115)कहानियाँ पहाड़ी परिवेश के लोकतत्व को उजागर करती हैं। खासतौर पर पौड़ी गढ़वाल का परिवेश है। जहाँ उमड़ती नदियों का वेग, साँप की भाँति लहराती पहाड़ी सड़कें और ग्रामीण समाज में संतों का प्रभाव देखने को मिलता है। नारी को शोभायमान करने-मानने वाले कहानीकार ने अपनी संस्कृति का प्रमाण नारी पात्रों के नाम से व्यक्त किया है। यथा नाम तथा गुण वाले पात्र भागीरथी, सुमंगला, सुलक्षणा, सुरभि, झुमकी अनुराधा जूही आदि हैं। कहानीकार ने विवाह को संस्कार और लिव इन रिलेशनशिप को स्वच्छंदता और फन बताया है। कहानीकार युवाओं को बिन उपदेश के सहज, सरल भाषा में जीवन के प्रति आस्था, कर्म के प्रति लगाव और बुराइयों से बचना सिखाता है। इन कहानियों की श्रेष्ठता त्रासदी में भी सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना है। समाज में हाशिए पर आए लोगों के जीवन की संघर्षमयी गाथा के साथ-साथ उनकी पावनता को चित्रित करना कहानीकार का उद्देश्य है। सहज सरल देशज शब्दों के साथ मुहावरों का प्रयोग चार चाँद लगा देता है जैसे- पत्थर होना, बदहवास स्त्री, कहर टूटना, आसमान की ओर ताकना, चील की मानंद झपटना, हृदय फटना, ऊँट के मुँह में जीरा, आसमान से आग बरसना, सब्जबाग दिखाना आदि।

निशंक जी की कहानियाँ काव्यशास्त्रीय दृष्टि से साध ाारणीकरण का निर्वाह करती है। संवेदना के भाव को उजागर करती हैं। इनके पात्र पाठक को अपने इर्द-गिर्द मिल जाएँगे। इनकी कहानियाँ पठनीय ही नहीं संग्रहणीय भी हैं। अमेरिकन साहित्यकार डेविड फ्राउले इनकी कहानियों को समस्त विश्व के पिछड़े वर्ग के संघ ार्ष की जीती जागती मिसाल कहते हैं। युगांडा के प्रधानमंत्री रूहकाना मानवीय संवेदनाओं की अतुलनीय मीसल कहते हैं। ये कहानियाँ लोगों को आईना दिखाने का काम करती हैं। अंतहीन की अंतहीन गूँज पाठक के मानसपटल पर अंकित होती है। विश्व साहित्यकारों की गरिमा को शोभायमान करती है। जो वास्तविकता के धरातल को साथ लेकर चल रही हैं। कहीं भी पाठक टूटता या ऊबता नहीं है। शब्दों की बयार, वाक्य संरचना, पाठक में नई ऊर्जा पैदा कर देती हैं।

डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला
चेयर हिंदी,
आई.सी.सी.आर.
वार्सा यूनिवर्सिटी,
वार्सा पोलैंड

२०२० का साल

कुछ सुबहें अनायास ही
झकझोर कर जगा देती है

खिड़की के कांच से
खटखटाता कोहरा
बुक्कल भरे सिसकता है
नर्म आगोश को

कुछ आईने अपने ही अक्स से
धुँधला जाते है
बमुश्किल नजर आता है
कोई साफ चेहरा

कोई कानो में जुम्बिश कर
काश सुना जाए एक प्रेम गीत
अर्सा हुआ इन आँखों ने कोई बसन्त नही देखा
पीले फूलों का इतराना
नीले फूलों को जबरन छेड़ जाना
लाल फूलों का नववधू सा शरमाना

ऐसी भीगी सुबह शायद
किसी पहाड़ी शहर की
उस स्त्री को अक्सर सपनों में
अक्सर ही दिखाई देती होंगी
जो सूनी आंखों से देखती है
अपने शहर को वीरान प्रस्तर खंडों में बदलते हुए

बीता काल अकेलेपन का रहा है
वसंतोत्सव इस बरस के कलेंडर में नहीं था ....

निविया

यह पुरुष क्यों उदास होते है

जबकि इनके पास रहता है
सब सामान
ऊब से निपटने का

एक पैग महंगी दारू का
उसकी उसकी तेरी मेरी वाली का जिक्र
किसी लम्बी छुट्टी पर जाने का ख्वाब
और भी न जाने क्या क्या

स्त्री उदास होती है
लेकिन समय नही है
उसके पास उदास रहने का
सोच झटक देती है विचार

पति के आने पर मुस्कुराती है
बच्चों को बहलाती है
बुजुर्गों की सौ बार सुनी बार
एक सौ एकवि बार दोहराती है

उदास होना भी शगल है आजकल
फैशन मे कहना यार थोड़ा उदास है मन
सीने में होने लगी है जलन
कुछ ऐसा हो कि नाच उठे तन बदन

लेकिन किसका
उदास है मन
एक पुरुष का
और अब पूरा घर उदास है

- **निविया**

हिन्दी की गूँज

संजय कुमार त्रिपाठी की कवितायें

1-

किसी के भी प्रति
कोई भी भाव
कभी भी उसी दशा में
स्थिर होकर नही रहता
जिस दशा में वह शुरू हुआ था
वह अमूर्त रूप में अपना प्रतिरूप
भिन्न भिन्न अवस्था और अवसरों के अनुसार
सदैव बदलता रहता है
जहाँ किसी के सम्मोहन से
क्षणिक लोलुपता का भाव जन्म लेता है
तो वही दूसरी तरफ
उस मृगतृष्णा से मोहभंग होने पर
मुक्ति की पथ प्रदर्शन कराने वाली
समाधि गुफा का मार्ग भी खोल देता है...

2-

जीवन के इस खूबसूरत गणित में
हमारी कई कोशिशों के बाद
हम दोनों के रिश्तों में, कभी भी..
वो ठहराव नही आया
जो हमें एक वृत्ताकार रूप दे कर
हमें हमेशा के लिए एक कर सके
जहाँ जीवन के एक निश्चित पथ पर
हम दोनों एक दूसरे पर आकर रुक जाए..
पर जब भी हम
कोई ऐसी घटना होती है
जहाँ हम खुद को टूटा या हारा हुआ महसूस करते,
या खुद को जीवन के प्रारम्भिक बिंदु पर खड़ा हुआ पाते तो
हमें जीवन के अगले किसी बिंदु तक ले जाने वाली
एक गतिमान रेखा के रूप में
आपसी अस्तित्व को
हम दोनों सहर्ष स्वीकार कर लेते है,
शायद प्रेम का यही स्वरूप
हम दोनों के लिए प्रारब्धिक है..

3-

तुमको खुद के भीतर
हर दिन रग रग में
तलाशता हूँ
पता नही मन के
किस कोने में
तुम घात लगाकर बैठी हो...
पर तुम्हें खुद में तलाश लेने तक
तुम्हारा प्रतिबिंब अपने अंदर
पहचान लेने तक
मैं लगातार करता रहूँगा अन्वेषणय
आखिरी साँस तक
साँस से खींची
मृत्यु की लकीर तक..

संजय कुमार त्रिपाठी
परास्नातक हिंदी
तेनुहवॉ, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश

हिंदी पर दोहे

जन्म लिया है हिन्द में , हिंदी है उपहार।
है आचार-विचार में , हिंदी का संचार।१।

हिंदी कोमल भाव है , हिंदी ही श्रृंगार।
हिंदी मेरी चेतना , चिंतन का संसार।२।

बोली अपनी है मृदा , हिंदी बनी कुम्हार।
गढ़ती साँचे ज्ञान के , अनगढ़ शब्द सम्हार।३।

हिंदी मेरा प्राण है , हिंदी प्रेम पुकार।
बिन हिंदी निष्प्राण हूँ , जीना है बेकार।४।

हिंदी मेरे स्वप्न को , करती है साकार।
मन उगते हर भाव को , गढ़ देती आकार।५।

हिंदी ही अभिमान है , हिंदी ही संस्कार।
हिन्दी तन-मन गूँजती , बन भारत झंकार।६।

लेता हूँ संकल्प मैं , कर हिंदी जयनाद।
जयतु हिन्द का नाद कर , सदा रखूंगा याद।७।

सूर्य प्रकाश सोनी

क्रोध

टिक टिक कर समय
अपनी गति से चल रहा था
समय बताती छोटी सुइयाँ
बिना रुके बिना थके
एक ही रफ्तार से
चलती ही जा रही थी
उनके नाजुक कंधो पर
संसार को चलाने की
जिम्मेदारी जो थी
उन्हें कहाँ पता था
हम दोनों एक दूसरे को
टक - टकी लगाये
देख रहे हैं चुप - चाप
क्रोधाग्नि हम दोनों के
अंदर जल रही है
और हम है मौन
सन्नाटा तोड़ने का
साहस हम दोनों के
पास नहीं ।
विचारों की आँधी में
हम काल चक्र
रोक लेना चाहते हैं,‘
हमारे साथ खड़े हैं
बहुत से विरोधाभास
जो चुप्पी तोड़ने के लिए
मचल से रहे हैं
विरोध से बस
क्रोध ही उत्पन्न होता है
क्रोध को पी जाना ही
मनुष्यता है
मैने अपने मौन को
साध रखा है
तुम भी साधोगे न
अपना मौन ।

• **बोधमिता**

गीत / गजल

१

पल भर में तू चौन सुकूँ खोता क्यों है?
जरा जरा सी बातों पर रोता क्यों है?

हार,जीत तो लगी रहेगी जीवन में,
आशाओं का दीपक जला ले तू मन में,
मन आखिर इतना बोझिल होता क्यों है?
जरा जरा सी बातों पर रोता क्यों है?

सागर के उस पार उतरना है तुझको,
दुनिया से हट के कुछ करना है तुझको,
बीज निराशा के मन में बोता क्यों है?
जरा जरा सी बातों पर रोता क्यों है?

समय स्वयं ही भर देगा सब घावों को,
देता जा आकार हृदय के भावों को,
घावों को इन अँसुवन से धोता क्यों है?
जरा जरा सी बातों पर रोता क्यों है?

२

चाहे अब बेशक सताएँ गम किसी भी तौर पर
टूटने देंगे न खुदको हम किसी भी तौर पर

एक ठोकर भी जरूरी है सँभलने के लिए
मत मनाओ हार का मातम किसी भी तौर पर

मुस्कुराकर सामना करते रहो हालात का
आँखों को करना न हरगिज नम किसी भी तौर पर

जिंदगी है नाव तो पतवार है इसकी यही
खोने मत देना यहाँ संयम किसी भी तौर पर

हम सृजन के बीज हैं अंकुर हमें कहते हैं सब
आँकना हरगिज न हमको कम किसी भी तौर पर

अंकुर शुक्ल ‘अनन्त’
कानपुर,उत्तर प्रदेश(भारत)

गीत

जिस दिवस से प्रिय तुम्हारे,
चरण चौखट पर पड़े हैं।
उस दिवस से प्रेम की ही,
राजधानी हो गया मन।।

आस चातक कुछ दिनों से,
शून्य नभ को ताकता था।
जो पिपासा को मिटा दे,
बूँद वो ही मांगता था।

जिस दिवस से प्रिय तुम्हारे,
नेह के दर्शन हुए हैं,
उस दिवस से झूमकरके,
आसमानी हो गया मन।

मौन का निर्जन बसेरा,
हो चुका था हृदय में।
मत्स्य की हो रहा तकता,
मनु खड़ा भीषण प्रलय में।

जिस दिवस से प्रिय तुम्हारा,
मुग्ध आलिंगन हुआ है।
उस दिवस सुरभित हुआ सा,
रातरानी हो गया मन।

विश्वनाथ तिवारी 'विश्व'
उन्नाव उत्तर प्रदेश

गजल

खुद ही रोयें, खुद मुस्काने लगते हैं
इश्क में डूबे लोग दिवाने लगते हैं

चार ही लोगों का किस्सा है सारे दिन
जब चाहे तब बात बनाने लगते हैं

आकर बैठो पास मेरे और सुन लो तुम
कैसे-कैसे ख़्वाब सताने लगते हैं

जगते हैं दिन रात न जाने क्यों ये लोग
मुझको तो ये लोग दिवाने लगते हैं

तेरे प्यार में पड़कर हमने ये जाना
खुश होकर क्यों अश्क बहाने लगते हैं

रूप बदल लेने से आखिर क्या होगा
रंग असल ही लोग दिखाने लगते हैं

रिश्तों पर पैसे ने अपना काम किया
हर मौके को लोग भुनाने लगते हैं

मीठे पर इक रोक लगी है, जब से ही
रसगुल्ले सपनों में आने लगते हैं

हाथ में लेकर हाथ चले थे मीलों हम
अब तो केवल स्वप्न सुहाने लगते हैं

बैठे-बैठे खो जाते हैं सपनों में
सारी दुनिया से अनजाने लगते हैं

बात बनाना कौन है मुश्किल, उनको जो
हाथों पर ही पेड़ उगाने लगते हैं

खत में लिख कर भेज तो दें हम सब दिल की
पढ़कर हम खुद ही शरमाने लगते हैं

सारी-सारी रात जगाए याद उनकी
दिन निकले पर हम सुस्ताने लगते हैं

डॉ पूनम माटिया
दिल्ली, भारत

गजल

पाने की आरजू थी उसे, अब नहीं रही
खुशियों भरे वो दिन वो हसीं शब नहीं रही

जाने हुआ है क्या कि मेरा प्यार खो गया
मैं भी, अगरचे, पहले थी जो अब नहीं रही

किस्मत से लड़ रही हूँ, शिकायत कभी न की
दुश्वारी आदमी को भला कब नहीं रही

रखती नहीं जियादा उमीदें किसी से मैं
तुझ से भी कुछ तवक्को, मेरे रब, नहीं रही

(तवक्को = आशा)

हसरत, न आरजू, न तमन्ना, न जुस्तजू
मन में किसी की 'कामना' ही अब नहीं रही

कामना मिश्रा
दिल्ली, भारत

गजल

१

जब भी हयात आब को बिसयार देती है
माँ की दुआ इलाह को ललकार देती है

रुलाये ख़्वाब भी ना कोई उसके बच्चे को
जब माँ सुलाती है तो वो, थुथकार देती है

पल भर में भूल जाता है वो अपने दर्द को
माँ देख कर यूँ बच्चे को पुचकार देती है

बेरोजगारी तो यूँ ही बदनाम फिरती है
फिलहाल रोजगार भी अफकार देती है

कुर्सी के आस-पास अगर पहुँचे अर्जियाँ
तो मेज पे दबा भी ये सरकार देती है

२

परिंदे हो,थककर जमीं पर गिरोगे,
तो पैसों के दम से कहां तक उड़ोगे

मिलेंगे तजुर्बे जो तुमको समय से
उसे उम्र भर साथ ले कर चलोगे

किताबों को फुटपात पे बेचते हो
मगर जूते अलमारियों में रखोगे

गरीबी तो फुटपाथ पे भूखी सोती,
दवाई ,अमीरी की खाकर मरोगे

कोई है जो रोता, भरोसे के खातिर
रुलाये वो जिस पे भरोसा करोगे

किसी खतरे में ना, बुजुर्गी पड़े अब
अदब छोटों का, डर से करते रहोगे

मेरे साथ जितना भला कर रहे हो
बुरा बाद में तुम भी उतना करोगे

तान्या सिंह
गोरखपुर, उत्तर-प्रदेश
भारत

जिन्दगी

जिन्दगी में
मिलता नहीं कुछ भी
जब जो भी चाहा ...

जिन्दगी में
मिल जाता है वह सब
जो कभी नहीं चाहा ...

जिन्दगी में
चाह और अनचाह का
विकल्प होता है किसी
और के पास ...

जिन्दगी में
मिलता नहीं मौका
दुबारा फिर कभी

जिन्दगी में
गए पल फिर नहीं मिलते
ना ही मिलता उन पलों पर अधिकार ही

जिन्दगी में
बिताएं पलों पर भी
और
आने वाले पलों पर भी
अधिकार किसी और
का होता है

जिन्दगी में
मिलता कहाँ है
कोई अपना और अपनापन
देने वाला

जिन्दगी में
बस जीना होता है
जैसे बेजान कठपुतलियाँ सी
किसी और के हाथों डोर थमाए ..

उपासना सियाग

नदी

पहाड़ से उतरकर ,
लड़खड़ाती डगमगाती,
बहती चली जाती .
निश्छल कलकल ,
रजत सी धवल ,
प्यारी सी जलधारा .
देखो कैसी नटखट .
नटनी सी चटपट .
पासे बदलती,
चट्टानों पर उछलती ,
चली जा रही यह.
धरती को,
हरित वसन
पहनाने .
तनिक न घबराये ,
बस चलती जाये,
डरो न राही ,
यह है सिखाये ....

सुधा मिश्रा द्विवेदी ,
कोलकाता ,भारत

नारी तेरे कितने रूप

हे!नारी तुम रखती हो निज कितने ही रूप,
सृष्टि में जो कुछ दिखता है सब है तेरा स्वरूप,
तेरे बिना जग तिमिरयुक्त है दिखे कहीं ना धूप,
तेरे ममतामयी करों से निखरा जग का रूप
माता बनकर सृष्टि सजाती देती सबको नेह,
तेरे बिना जग सूना-सूना,सूना लगता गेह,
तूँ ना होती है जिस घर में होता सब वीरान,
तेरे कदम पड़ जाएं घर में बढ़ जाती है शान
नारी तूँ है शक्ति-स्वरूपा सभी गुणों की खान,
अम्बे,गौरी,श्री,शारदा सब तुझमें विद्यमान,
तेरे चरण की पूजा करते ब्रह्मा,विष्णु महान,
तेरे प्यार में तांडव करते हैं शंकर भगवान
जननी,सुता,भगिनी,भार्या,माँ अम्बे का रूप,
सबको तुमने जना है चाहे राजा,रंक या भूप,
तेरे प्यार की छाया में ही पाया सबने रूप,
जो भी दिखता है इस सृष्टि में सब है तेरा स्वरूप,
हे! नारी तुम रखती हो निज कितने ही रूप,
जननी,सुता,भगिनी,भार्या,माँ अम्बे का स्वरूप

बजरंगी लाल
डीहपुर दीदारगंज आजमगढ़
उत्तर प्रदेश

तन- मन को जीवंत करो

इस जीवन मे संघर्षों की बहती अविरल धारा है ।
जो थामे पतवार धर्म की मिलता सहज किनारा है ।।
दृढ़ निश्चय मन में जो कर लो, तन को भी जीवंत करो ।
बनो दिवाकर अँधियारे का ,इस दुनियाँ से अंत करो ।।

आशाओं का दीप जले नित, विश्वासों की बाती हो,
गर्वित होता भाल हृदय में , प्रणय मधुरता भाती हो,
खुशियों के झूलों में झूलो,स्वर को भी किलकन्त करो ।
बनो दिवाकर अँधियारे का , इस दुनियाँ से अंत करो ।।

अमृत घट जीवन दाई है, आज प्राण में भरने दो ,
शुष्क धरा है कहीं प्रतीक्षित, उसकी पीड़ा हरने दो,
श्वांस-श्वांस परिमल सिंचित है, लक्ष्य आज अरिहंत करो ।
बनो दिवाकर अँधियारे का ,इस दुनियाँ से अंत करो ।।

गुप्त सरीखा कवि समाज मे , कहाँ अभी तक संत हुआ,
मात शारदे कलम विराजीं , नाम निराला पंत हुआ,
मन वीणा के गुंजित उपवन, सब मिल इसे बसंत करो ।
बनो दिवाकर अँधियारे का , इस दुनियाँ से अंत करो ।।

पराधीनता से उत्तम है संघर्षों की डगर चलो ,
मन मे धवल भावना रखो, और दिए की भाँति जलो ,
शुद्ध -बुद्ध जीवन अपना कर, मन को साधू-संत करो ।
बनो दिवाकर अँधियारे का ,इस दुनियाँ से अंत करो ।।

- **शुभदा वाजपेयी**
कानपुर (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा--परास्नातक,कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर
कार्य-गृहिणी,गीत,गजल,छंद,मुक्तक,दोहा,आदि लेखन

केमद्रुम योग

जन्म कुंडली केमद्रुम योग तब बनता है जब चन्द्रमा से बाहरवें और दूसरे स्थान (भावध्दर) में कोई ग्रह ना हो। यह योग किसी भी मनुष्य को प्रगति के पथ पर जाने को रोकने वाला होता है। जीवन में हर जगह बाधक होता है। बार-बार प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिलती है। कई बार निराशा, व्यग्रता, तथा असफलता व्यक्ति को संतप्त कर देती है।

जब चन्द्रमा से गुरु द्वादश या षडाष्टक हो या चन्द्रमा अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तथा शुभ ग्रहों और पूर्व जन्म का पुण्य फल ना हो तो इस योग की अशुभता में प्रचुर वृद्धि होती है।

विद्वानों के शोधानुसार यदि चन्द्रमा किसी शुभ ग्रह से युक्त हो तो अशुभ प्रभाव में कमी तो आ सकती है लेकिन सम.ाप्त नहीं होगा। किसी भी कुंडली में चाहे कितने भी राजयोग क्यों ना बनते हो य केमद्रुम योग के विद्यमान होने के कारन शुभ योगों में कमी आ सकती है।

यह योग जीवन में दु:ख के अनेक कारण उत्पन्न करता है। प्रयास निष्फल होते हैं। संतान,पत्नी और सम्बन्धी भी व्यथा के कारन बनते हैं। निरर्थक यात्रा,धन का अपव्यय प्रायः उदास और निराश कर देती है। सभी प्रकार के सुख होते हुए भी मनुष्य स्वयं को उदासीन करता जाता है। धन कमाने और संचय करने में भ्रम की स्थिति रह कर अक्सर विपरीत चाल चल पड़ता है।

विभिन्न ज्योतिष शास्त्रों और विद्वानोंने अपने -अपने ढंग से इसकी व्याख्या की है और इसे जन्म कुंडली मंह बाध ाक योग स्वीकार किया है।

ज्योतिषतत्वम के अनुसार चन्द्रमा के दूसरे और बाहरवें स्थान में सूर्य के अतिरिक्त को ग्रह ना हो तो , केमद्रुम नामक दरिद्र योग निर्मित होता है। लग्न या सप्तम में चन्द्रमा हो और उसे वृहस्पति ना देखता हो तो :--

१). सभी ग्रह अल्प रेखा से युक्त हो और बल हीन हों।

२). यदि शुक्र और शनि शत्रु राशि में हों , पाप राशि या नीच राशि में हो य दोनों परस्पर देखते हो या एक साथ स्थित हो।

३). चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो कर पापराशि तथा पाप नवांश में हो।

४). रात्रि का जन्म हो और निर्बल चन्द्रमा दशमेश से दृष्ट हो।
५). नीच का चन्द्रमा यदि पापग्रह से युक्त होकर नवमेश से दृष्ट हो।
६). रात्रि का जन्म हो और क्षीण चन्द्रमा यदि नीच राशिगत ग्रह से युक्त हो तो उक्त केमद्रुम योगों से उत्पन्न राजवंश का जातक भी दरिद्रता प्राप्त होता है।

केमद्रुम भ३्ग योग :--

केमद्रुम योग कुछ विशेष स्तिथियों में बेअसर हो जाता है। उसकी अशुभता का असर नहीं होता और इसका बाधक प्रभाव जीवन पर नहीं पड़ता है। ज्योतिषतत्वम के अनुसार य केंद्र में चन्द्रमा और शुक्र हों और वह गुरु से दृष्ट हो तो :--

१) . चन्द्रमा यदि ग्रह से युक्त हो तो केमद्रुम दरिद्र योग भ३्ग हो जाता है ,
२). लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो और वह शुभ ग्रह से युक्त हो।
३). दशम भाव में उच्च का चन्द्रमा हो और वह गुरु से दृष्ट हो तो केमद्रुम योग भ३्ग हो जाता है।

केमद्रुम योग का शमन :--

शिव उपासना या शिव जी की शरण ले कर सम्पूर्ण समर्पण कर देना ही इसका एक उपाय है। चन्द्रमा के तांत्रिक मन्त्र ' " ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः " का जप करना चाहिए।

सोलह रत्ती ताम्बा , बारह रत्ती चाँदी एवं दस रत्ती सोना , इन तीन धातुओं की अंगूठी पुष्य-नक्षत्र में बना कर धारण की जाये तो कैसी भी दरिद्रता हो , धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है।

भगवन विष्णु की उपासना करें।

दस या बीस रत्ती से अधिक का मोती अनामिका में धारण करें। मोती धारण करने से पूर्व अपनी कुंडली अच्छे से विश्लेषण करवा लें। क्यूंकि अगर चन्द्रमा 6]8]12 भावों में हो तो मोती धारण नहीं किया जा सकता है।

चन्द्रमा के दान हेतु मोती,कपूर, गाय का दूध , दही , सफेद बैल या गाय , चीनी ,चाँदी , खीर , बताशे , रेवड़ी , चावल , सफेद कमल , सफेद वस्त्र, बाँस का पात्र ,धन आदि का दान सोमवार या पूर्णमासी की शाम को करना चाहिए।

सोमवार का व्रत करना चाहिए। पूर्णमासिका व्रत करना भी उपयुक्त रहेगा। जिस सोमवार या चित्रा नक्षत्र को पूर्णिमा आती है य उस दिन से व्रत का संकल्प ले कर 48 पूर्णिमा यानि चार साल व्रत करना चाहिए। सारा दिन निराहार रह कर शाम को पूजन कर खीर का भोग लगा कर , चन्द्रमा को अर्ध्य दे कर भोजन ग्रहण करना चाहिए। भोजन में सामान्य नमक का प्रयोग किया जा सकता है।

शिव जी का पूजन - दर्शन करना चाहिए। शिवलिंग का दूध से अभिषेक करना चाहिए। रुद्राभिषेक करवाने से भी इस योग के प्रभाव में कमी आ सकती है।

ॐ शांति।

उपासना सियाग

चाणक्य प्रतिज्ञा

वर्षों से अवरुद्ध, रोष का कोश खुल गया,
हे नंद! मुझे सौगंध, शिखा का बंध खुल गया।
नंद - वंश का अंश भी, जब तक बचा रहेगा,
शिखा-बंध भी तब तक, यूं ही खुला रहेगा।

सत्ता - मद में चूर नंद, तुम भूल रहे हो,
अपने धन और सेना बल पर, फूल रहे हो।
प्रजा के दम पर धन,बल,वैभव, टिका तुम्हारा,
दरबारी जै कार में, शायद भूल रहे हो।

कर ले अत्याचार, अभी लाचार प्रजा है,
खून चूस कर प्रजा का, यह दरबार सजा है।
जिस दिन भान हुआ जनता को, भेद तुम्हारा,
धन, बल, वैभव पल में होगा, ढेर तुम्हारा।

प्रलय और निर्माण खेलते, अंक में जिसके,
देव, मनुज, दानव, नत-मस्तक होते जिसके।
कर न सका सम्मान, किया अपमान गुरु का,
तुझे सिखा दूंगा, क्या होता मान गुरु का।

सरल मार्ग को छोड़ विप्र, जब कुटिल चलेगा,
विष्णुगुप्त, चाणक्य-पुत्र, कौटिल्य बनेगा।
होगा हाहाकार, मगध में प्रलय मचेगा,
जो होगा सच का अनुगामी, वही बचेगा।

छोड़ कमंडल जामदग्ण्य, अब परशु धरेगा,
जल-अभिषेक नहीं, अब रिपु का रक्त बहेगा।
अरि - मुंड के झुंड से पूरित, पूरा रण होगा,
त्राहिमाम स्वर से गूंजित, कण-कण होगा।

बंधु - बांधव, भार्या, कोई साथ न होंगे,
चाटुकार दरबारी दल भी, पास न होंगे।
खड़ा अकेला महलों में, तब घबराएगा,
विष तक तुझको देने वाले, दास न होंगे।

जब घुटनों के बल, पैरों में पड़ा रहेगा,
मैं बैठूंगा आसन पर, तू खड़ा रहेगा।
जब सारे अपराध का तुझको, दण्ड मिलेगा,
उस दिन मेरी शिखा में, फिर से बंध पड़ेगा।

कमलेश पाण्डेय 'कमल'
प्रयागराज (उ प्र), भारत

खुशियों वाला सेंटा

गाँव गली घर - घर जाकर,
हँसी-खुशी गिफ्ट बाँटते हो।
सच - सच बताना प्यारे सेंटा,
क्या पर्ची निकालते हो।
उदास मन की पुकार को,
कैसे भाँप लेते हो?
लाखो मील की दूरी,
अकेले नाप लेते हो?
लगता है पूरा परिवार,
इस नेक काम को करता है।
चुन चुनकर गरीबों के गम,
जरुरत मंदों के दुख हरता है।
इतने सारे गिफ्ट सेंटा !
आखिर कहाँ से लाते हो?
खुद की फैक्ट्री है या,
आर्डर पर बनवाते हो।
उम्मीदों के पंख लगाकर,
हौसलों को उड़ान देते हो।
खेल - खिलौने उपहारों से,
बच्चों की झोली भर देते हो।
इस बार हमें मास्क सेनेटाइजर,
संग वैक्सीन भी दे जाना।
मेरे प्यारे दयालु कृपालु सेंटा!
हमारी खोई रंगत फिर से लौटाना।।

नरेन्द्र सिंह नीहार
नई दिल्ली

वाह वाह रे इन्सान !!

वाह वाह रे इन्सान, वाह वाह रे इन्सान !
काँच को सहजते हैं ध्यान से,
दिल तोड़ते हैं बार बार ।
प्यार करते है वस्तु से ,
कष्ट देते हैं प्राणी को बार बार ।
वाह वाह रे इन्सान, वाह वाह रे इन्सान !

घर में रहते हुए कुल से हुए भाव विरक्त,
फोन से करते हैं अति मोह बार बार।
यश पाने के लिये करते हैं कुछ भी,
जरूरतमंद पर एहसान जताते है बार बार ।
वाह वाह रे इन्सान, वाह वाह रे इन्सान !

धर्म-पूजा करते ध्यान से,
इंसानियत भंग करते हैं बार बार।
दान पुण्य करते हैं जोर शोर से,
अपनों को तरसाते हैं बार बार ।
वाह वाह रे इन्सान, वाह वाह रे इन्सान !

अग्र जन्म सुधारते हैं प्यार से,
इह जन्म भरते हैं पाप से बार बार ।
दूध शिवलिंग पर चढाते हैं टनों,
देने में होता है कष्ट भूखें को बार बार।
वाह वाह रे इन्सान, वाह वाह रे इन्सान !

नारी उत्थान वार्ता करते है लगन से,
फिर भ्रूण हत्या, अत्याचार करते हैं क्यों बार बार?
समाज सुधार भाषण देते हैं बड़ा प्रभावशाली,
क्यों नहीं करते 'श्री गणेश' घर से ही अपने बार बार
वाह वाह रे इन्सान, वाह वाह रे इन्सान !

मुखौटा दान, धर्म, समाज-सुधार का है लगाये,
क्या हो चुकी है आत्मा मृत्य या सुषुप्त ?
प्रार्थना है यही "नीति" की बस सुधार लें मैं,परिवार,
हो जायेगा सर्व कल्याण स्वयम् ही बार बार ।
वाह वाह रे इंसान ! वाह वाह रे इंसान !

डॉ. सीमा भाँति "नीति"
अमेरिका

पुरुष होना आसान नहीं होता

पुरुष होना आसान नहीं होता ,
बचपन से ठोंक पीटकर उसे
पत्थर का रुप दिया जाता है .
हर पग-पग पर उसे सिखाया जाता है ,
कि तुम मर्द हो तुम कभी मत रोना .
न खोना आँसुओं को तुम ,
भले भीतर तुम्हारे बहा करे ,
एक रिसता हुआ झरना .
पर आँखों से कभी तुम बहने नहीं देना .
बाँटना हर खिलौने को बहन से तुम अपनी
पर उसे रोने नहीं देना .
भले छा जाएँ तुम पर
हजारों गमों के पहाड़
पर तनिक भी तुम अपना
कभी धीरज नहीं खोना
न रहे पिता का साया सिर पर ,
तो तुम पिता सम बन जाना .
थामना डूबती नैया की पतवार ,
उसे डूबने नहीं देना .
तुम मर्द हो कभी धीरज नहीं खोना .
यही बचपन से मिली घुट्टी
हर पुरुष को है मिलती
मुस्काता है वो ऊपर से
भले कितने भी कष्ट झेले वो --

सुधा मिश्रा द्विवेदी

राकेश छोकर की कवितायें

इस शहर में

काम,काम और काम
काम के बोझ से लदपद मै
सुबह,दोपहर, शाम।
बिजली की चौन्ध में दमदमाती वो शाम
नींद के झटकों से उलझी रात
और उस रात के आगोश से खोये अनगिनत तारे
जिनसे बेखबर हुआ मैं
बुजर्गों से सुने थे जिनके किस्से ।
कभी कभी सोचता हूँ
उन्ही किस्सों की घनेरी, अंधेरी रात के बारे में
क्यूँ नजराया सितारों का जमघट
और वो चाँद का हाशिया
इस शहर में।
इंजनों की काली स्याह से
रचता दिन
गर्मचारकोल की चिपचिपाहट से
सुरबद्ध बेढंगे संगीत के शोर से
परेशान मैं
इस शहर में।
प्रकृति संग गाती हुई कोकिला को
सुनने पहुंचा चिड़िया घर
भूख,भूख और प्यास
चट कर गई उन कैद पंछियों को
जिनसे आजादी का क्षण महत्व जान पाता
इस शहर में।
रहकेटों से खिंचती सफेद धारियां
दिखाई पड़ती हैं आसमान में
मैं इंद्रधनुष खोजता रहा
इस शहर के ऊपर
नील गगन में ।
कैफे, रेस्तरां, होटल, पार्क
फुटपाथ पर
संस्कृति को नोचती कोसती
जवानियों को प्रेमाग्नि मे
झुलसते देखा है
इस शहर में।
मैं उस चित्त सखा को
ढूंढ़ता रहा
इस शहर में
संस्कारित साँसों को
जिया जिसने
इस शहर में।

माँ

चुप्पी साधे हैं माँ
पिता की मौत के बाद
हो मृत्यु पराजित
माँ का विश्वास !
झुकी रीढ़ का कोण
किस हद तक
टिकेगा समतल धरती से
किस्सा दोहरायेगा
मिट्टी से जुड़ने का
दर्द सिमेटेगा
फिर रिश्तों का!
माँ का मौन
मर्म.... अहम
जान बूझ कर भी नहीं जानता
कि... कोख का जाया भी कहेगा
ए वृद्धा
तुम कौन... तुम कौन !
देह छोड़ती माँ
फिर भी वहीं राह
गर्भ के जाये
तूझे छू न पाये कोय आह
मेरे साये की छाँव
तेरा आसियाँ होंगी
और साँसों की घड़ी
अनगिनत
मैं रहूँ न रहूँ
न मिटेगी कभी हस्ती तेरी
फलता रहेगा बागवां सदा
रब को सौगंध
यहीं वसीयत छोड़ जाती हैं
रुखसती लेते हुए
हर माँ।

माँ शारदे वंदना

ॐ ऐ सरस्वत्ये नमैं
श्वेतावर्ण ,श्वेतपद्यामसना,वागेश्वरी
शुक्लवर्ण, शुक्लाम्बरा,शिवानुजा
मुरारिवल्लभा, सतोगुणी महाशक्ति
सत्यलोक,बैकुण्ठ निवासिनी
अंजली संकल्प स्वरूप
मूलप्रकृति आदिशक्ति रूप
परमचेतना, बुद्धिपरिज्ञा ,मनोवृत्ति संरक्षिका
हे वीणावादिनी
आचार मेधा का आधार
वर दे माँ
उल्लास, भाव संचार, ज्ञान, ईशनिष्ठा
परिष्कृत हो विचारणा, भावना और संवेदना
सात्विकता और अनुउत्साह
श्रद्धा, तन्मयता
हरो जड़ता ,अज्ञानता
करो सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत
स्वीकारो, त्रिकाल संध्या वंदन
ॐ ऐ सरस्वत्यै नमैं।

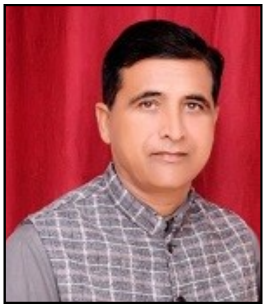

- **राकेश छोकर**

गीत

गीत है शाश्वत सनातन
प्रीत की पावन नदी है।
देख लें गोता लगाकर
यह मिटाती त्रासदी है।

पीर के पर्वत से निकली
चीर कर अन्तःकरण को।
शब्द बाँधे किस तरह से
भाव के इस अवतरण को।

भाव धारा में उमड़ती
स्वर लहरियाँ अनहदी है।।

जिस मनोभूमि से गुजरी
सींच कर उर्वर बनाई।
सृष्टि का सौंदर्य निखरा
सर्जना जब गुनगुनाई।

नेकियाँ फूली-फली पर
बाँझ बंजर सी बदी है।

कंठ में आते ही इसके
ताप तीनों दूर होते।
जेठ में मधुमास आता
सांस जब संतूर होते।

वेदना मिटती,दिलों में
लास करती गुदगुदी है।

गीत ना होते तो ऋतुएं
ना कभी होती सुहानी।
सूर,तुलसी भी न होते
ना कोई मीरा दीवानी।

यह सुरा संजीवनी है
असरकारी उन्मदी है।

गीत है जबतक धरा पर
चिर युवा जीवन रहेगा।
मीत यह बन जाय तो फिर
दर्द भी लय में बहेगा ।

अग्निवर्षा भी लगेगी
ज्यों बरसती कौमुदी है।

नादमय है सृष्टि जब तक
गीत का अस्तित्व होगा।
इस धरा पर स्वर्ग जैसा
प्रेम -सह- अस्तित्व होगा।

ढाई आखर में समाहित
मांगलिक यह सतपदी है।

श्रीभगवान पाण्डेय

बुरे समय की आंधियां !

तेज प्रभाकर का ढले, जब आती है शाम !
रहा सिकन्दर का कहाँ, सदा एक सा नाम !!
●●●
उगते सूरज को करे, दुनिया सदा सलाम !
नया कलेंडर साल का, लगता जैसे राम !!
●●●
तिनका-तिनका उड़ चले, छप्पर का अभिमान !
बुरे समय की आंधियां, तोड़े सभी गुमान !!
●●●
तिथियां बदले पल बदले, बदलेंगे सब ढंग !
खो जायेगा एक दिन, सौरभ तन का रंग !!
●●●
पाकर भी कुछ ना मिले, होकर जिम्मेवार !
कितना धोखेबाज है, सौरभ ये किरदार !!
●●●
प्रेम दिया या दर्द हो, सबका है आभार !
जीवन पथ पर है तभी, मिला मुझे विस्तार !!
●●●
हम पत्तों को सींचते, पर जड़ है बीमार !
सौरभ कैसे हो बता, ऐसे वृक्ष सुधार !!
●●●

प्रियंका सौरभ
रिसर्च स्कॉलर इन पोलिटिकल साइंस,
कवयित्री, स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार,

पंकज मिश्र 'अटल' की कवितायें

लड़ना पड़ा उसको

जो भी मिला,
पढ़ना
पड़ा उसको।
अपने
हक के लिए भी
अड़ना पड़ा उसको।

बातें किताबी
अक्षरों में घुट गईं।
ढेरों कथायें
रास्तों में छुट गईं।
क्या करें
दो जून रोटी के लिए,
लड़ना पड़ा उसको।

बदरंग से
होने लगे चेहरे।
मौसमों के
कदम भी ठहरे।
सत्य को भी
झूठ सा,
गढ़ना पड़ा उसको।

वह सरल था
जाल में फंस ही गया।
बहुत गहरे,
व्यर्थ में धंस ही गया।
खुद तमाचा
गाल पर
जड़ना पड़ा उसको।

बस दर्द ही पाते

बहुत महंगे
दिन हुए
कैसे कटें रातें?
बस सुनाई
दे रहीं हैं
खोखली बातें।
अब सियासी
रंग सबके
सिर पे चढ़के बोलता।
और पीढ़ी
के मनों में
जहर ही है घोलता।
कोई छिपकर
कोई खुलकर
कर रहा घातें।

फसल के
माफिक यहां पर
कट रहे वादे।
जो जटिल हैं
आज वे ही
दीखते सादे।
अपनी ढपली
राग अपना
बेसुरा गाते।

हर नजर में
तैरता है
मात्र खालीपन।
युग की देहरी
पर सिसकता
आज फिर जीवन।
अक्षरों में
है चुभन
बस दर्द ही पाते।

पंकज मिश्र 'अटल'
जवाहर नवोदय विद्यालय,
सरभोग,बरपेटा,आसाम

हास्य-व्यंग्य के डंडे से विसंगतियों पर सार्थक चोट है 'बम बम भोले'

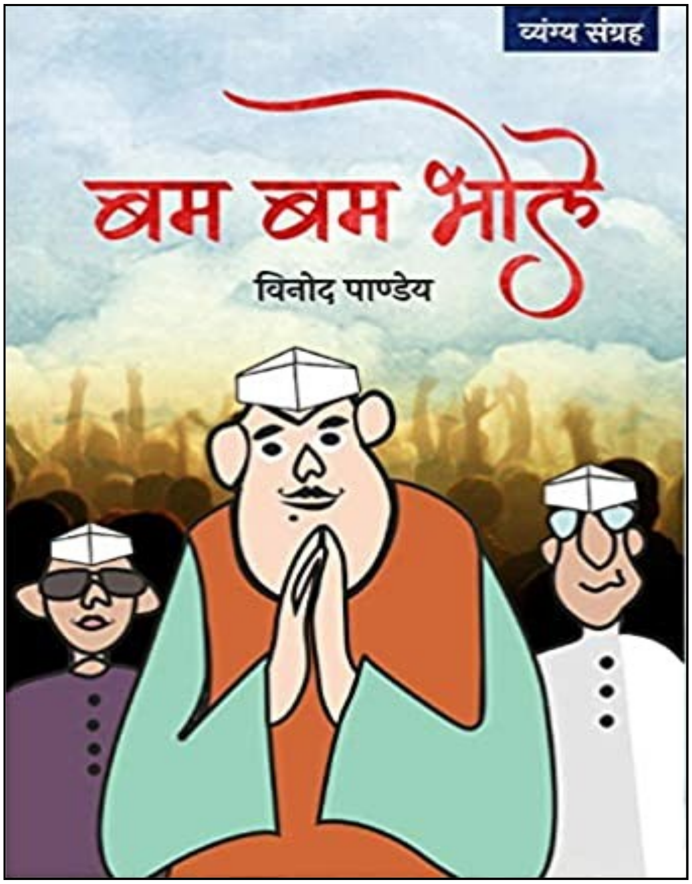

'बम बम भोले' 'सर्वभाषा ट्रस्ट नयी दिल्ली' द्वारा प्रकाशित कवि-व्यंग्यकार 'विनोद पाण्डेय का प्रथम व्यंग्य-संग्रह है .एक सौ आठ पृष्ठ के आकर्षक आवरण और साज-सज्जा से युक्त इस व्यंग्य-संग्रह में हास्य-व्यंग्य की कुल इक्कीस रचनाएँ संग्रहीत हैं .'रामलीला' से लेकर 'बम बम भोले' तक 'लव का महीना' से लेकर 'सहित्यकार के शोक' तक राजनीति,समाज , कला ,साहित्य और संस्कृति आदि क्षेत्रों की विसंगतियों पर विनोद पाण्डेय ने अपने हास्य-व्यंग्य के डंडे से करारी और भरपूर चोट की है .

विनोद अपने व्यंग्य 'इक्कीसवी सदी का साहित्यकार' में लिखते है ---

"दो साहित्यकार एक ददूसरे से बात भले न करना चाहते हों पर समाज में एकता का झंडा लेकर जरूर साथ साथ चलते हैं .साहित्यकारों की नाक सबसे ऊंची होती है और इसीलिए उन्हें साहित्य से ज्यादा नाक की चिंता रहती है ---."

इन पंक्तियों में लेखक ने बहुत आसानी और सीधे शब्दों में साहित्यकार के बीच अहंकार और दोहरे चरित्र को बिना किसी लम्बे चौड़े वक्तव्य के व्यक्त कर दिया है .सहजता के साथ विसंगतियों को रेखांकित कर देना ही विनोद पाण्डेय
की ताकत है .

विनोद का विषय वैविध्य चमत्कृत करता है .'सेल्फी' जैसा विषय भी सहज दूसरस व्यंग्य का विषय हो सकता है हमे यह 'बिना सेल्फी कैसा योग' में देखने को मिलता है .वे लिखते है ---

"योग करना एक बात है और योग करते समय खुद से खुद की फोटो खींचना उससे बड़ी बात है .यह सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं है .ये योग से बड़ा योग है या यूँ कहिये महायोग है .और योग करते हुए आप सेल्फी लेते हैं तो इसे दिव्य योग कहा जाता है . "

शहर ,गाँव ,मंगल ग्रह,मीडिया साहित्यकार ,नेता ,बुद्धिजीवी रामलीला और लव का महीना सभी विनोद के व्यंग्य की परिधि में हैं . जिस तरह से इस व्यंग्य संग्रह में हास्य को उत्प्रेरक के रूप में प्रयोग किया गया है वह इन व्यंग्य कथाओं और आलेखों को पठनीय बनाता है पर यही इस व्यंग्य संग्रह की कमजोरी भी है विनोद पाण्डेय को अपने व्यंग्यों को हास्य की अनावश्यक 'डोज' से बचाने की जरूरत है .व्यंग्य आनन्द की नहीं अपितु करुना और चितन की सृष्टि करता है . 'बम बम भोले' प्रथम व्यंग्य संग्रह के रूप में आशायें जगाता है .विनोद पाण्डेय संभावना संपन्न रचनाकार है .भविष्य में उनसे और अधिक परिपक्व 'व्यंग्य रचनाओं' की अपेक्षा की जा सकती है .एक सौ पचास रूपये मूल्य के इस व्यंग्य संग्रह को 'सर्वभाषा ट्रस्ट नयी दिल्ली' से प्राप्त किया जा सकता है .

पुस्तक-बम बम भोले

रचनाकार-विनोद पाण्डेय

मूल्य-रु १५० मात्र

प्रकाशन- सर्वभाषा ट्रस्ट

नई दिल्ली

अरविंद पथिक

हिंग्लिश

मिसेज महाजन सुबह से ही व्यस्त थीं। जब से उन्होंने सोसायटी का चेयरमैन पद संभाला है, रोज किसी न किसी मीटिंग में जाना और लोगों से मिलना जुलना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया है। हालांकि वो पली बढी विदेश में ,किन्तु उनके पूर्वजों की विरासत संभालने उन्हे स्वदेश लौटना पड़ा। कल हिंदी दिवस के अवसर पर उन्हें एक वक्तव्य देना है और क्या बोले, सोच कर वह रात भर सो ना सकीं। सुबह-सुबह ही उन्होंने अपने सेक्रेटरी को फोन लगाकर एक अच्छे भाषण की मांग की। सेक्रेटरी ने तुरत फुरत एक हिंदी के शिक्षक को फोन लगाया और एक बढ़िया भाषण तैयार करवाया। लेकिन यह क्या मिसेज महाजन ने भाषण का पर्चा देखा और भड़क उठीं तुम्हें पता नहीं मैं यह सब भाषाएं नहीं पढ़ सकती , शिक्षक को पुनः बंगले पर बुलाया गया और वह ठहरा हिंदी का महारथी हिंग्लिश लिखना तो उसके बाएं हाथ का खेल था मानो , उसने पूरा भाषण हिंग्लिश में अनुवादित कर दिया अब मिसेज महाजन आश्वस्त हो तैयार होने लगी।

स्टेज पर पहुंचते ही उनका जोरदार स्वागत यह कहकर किया गया कि वह विदेश में पैदा हुई और पली-बढ़ी किंतु उनका देश प्रेम एवं मातृभाषा प्रेम उन्हें स्वदेश वापस ले आया है और मि0 महाजन ने बड़े उत्साह से हिंग्लिश में लिखा हुआ भाषण दिया। सभागार तालियों की गडगडाहट से गूंज उठा और शायद इस गूंज में हिंदी जो 70 वर्षों से उदासीनता की शिकार है और उदास होकर आंसू बहाती हुई किसी कोने में दुबक गई और एक बार फिर से " हिंदी की गूंज" तालियों की गूंज में कहीं दूर बहुत दूर होती चली गई।

✍डॉ ममता श्रीवास्तवा सरूनाथ
सेक्टर 137 नोएडा (उत्तर प्रदेश)

माँ की सीख

दुल्हन के लिबास में लिपटी सिमटी-सकुचाई वसुधा को , ससुराल विदा होते समय उसकी माँ ने एक गुरु मंत्र दिया - " बेटा यह सृष्टि का अटल सत्य है कि विवाहोपरांत ससुराल की हर लड़की का असल घर होता है। जीवन में कभी किसी की बात बुरी लगे, फिर चाहे सामने वाला कितना भी गलत क्यों ना हो ? या किसी का व्यवहार तुम्हारे प्रति रुखा हो , तुम कभी पलट कर उसे जवाब या बहस मत करना । 'सबसे भली चुप' ! इस मंत्र को यदि साध लोगी तो जीवन सुखमय बन जाएगा। " रोती बिलखती वसुधा माँ का ममतामयी आंचल छोड़ ससुराल की देहरी में प्रवेश कर गई ।

नई जगह , नई लोग ,सब कुछ पहले से बिल्कुल अलग। यह वसुधा के जीवन की सबसे बड़ी चुनौती थी जहाँ उसकी चाल -ढाल ,उठने-, बैठने आचार -व्यवहार सब में लोगों की पैनी दृष्टि होती। शीघ्र ही उसने ससुराल की आदतों को आत्मसात कर लिया। इसके पीछे भी माँ की दी गयी शिक्षा थी- " बेटी ससुराल का अर्थ है तुम्हारा पुनर्जन्म ! मतलब वहाँ की बातें मायके से बिल्कुल अलग होंगी। यदि जीवन में शांति चाहती हो तो नव-जीवन की शुरूआत स्वयं को जीरो समझ कर करना ...."

आज सुबह से ही वसुधा काफी उत्सुक और प्रफुल्लित थी । आखिर उसकी माँ जो मिलने आ रही थी, इसलिए जल्दी- जल्दी सारा काम निपटा रही थी । भीषण गर्मी के चलते सूर्य देव सुबह से ही आग उगल रहे थे। वसुधा फिरज में पानी की बोतलें लगा रही थी कि तभी पास बैठी सासू माँ तपाक से बोली - " बहू ! तुमने तो सारी बोतलें उल्टी लगा दी है , यह तुम्हारे मायके का रिवाज होगा , हमारे यहाँ बोतलें ऐसे नहीं लगायी जाती। आखिर कितनी बार हर बात याद दिलानी होगी तुम्हें ??"

इधर सास का ताना उधर दहलीज पर वसुधा की माँ ! वसुधा अवाक भाव से किंकर्तव्यविमूढ़ सी देखती ही रह गई। उसका समस्त उत्साह आंसुओं के माध्यम से बह निकला, नन्ही बालिका सी माँ से लिपट गई। यह प्रथम मिलन इतना करुणादाई होगा किसी ने सोचा ही नहीं था। भीतर आते-आते वसुधा की माँ अत्यंत सहज भाव से बोली- " बिल्कुल ठीक कहा बहनजी आपने ! जो शिक्षा आप आज इसे दे रही हैं ना ! मैं कभी दे ही नहीं पाई। इतने कम समय में जो तौर-तरीके यह सीख पायी है ,उसका सारा श्रेय सिर्फ और सिर्फ आपको ही जाता है।"

मदिर - मदिर मुस्काती माँ की ओज पूर्ण वाणी सुन वसुधा की सास बीच में ही बोल उठी " कितनी महान हैं आप और आपके संस्कार ! एक माँ आज दूसरी माँ के समक्ष शर्मिंदगी का भाव लिए नतमस्तक खड़ी थी।

डॉ दीप्ति जोशी गुप्ता
बदायूं

माँ

स्त्री और सौन्दर्य का रिश्ता चोली-दामन सा है।जहाँ सौन्दर्य है,वहाँ स्त्री है और जहाँ स्त्री है,वहाँ सौन्दर्य है।यह सौन्दर्य चाहे उसकी शारीरिक बनावट हो,वेश-भूषा हो,पाक-कला की निपुणता हो,वाक्-चातुर्य हो,कला हो,किसी विषय में दक्षता हो या उसकी बौद्धिक क्षमता का हो।हर स्त्री में अलग-अलग किस्म का सौन्दर्य रहता है।

और स्त्री की सबसे बड़ी कमजोरी होती है-''अपने सौन्दर्य की प्रशंसा सुनना।''इस कमजोरी से मैं स्वयं के लिए इंकार भी नहीं कर सकती।पर,एकदिन हहस्टल से आए मेरे बेटे के दोस्त ने जब मेरी तारीफ की तो मुझे अच्छा नहीं लगा।अपनी तारीफ सुनना किसे पसंद नहीं,मुझे भी अच्छा लगता अगर उसने अपनी माँ से मेरी तुलना नहीं की होती।उसका कहना था-''आँटी ,आप अच्छी है,मोटी भी नहीं हैं और खाना भी अच्छा बनाती हैं,साथ ही,कुछ लिखती-पढ़ती भी रहती है।लेकिन मेरी माँ तो बहुत मोटी है,पढ़ने-लिखने में भी उनकी रुचि नहीं है।''

इसके आगे उसने और क्या-क्या कहा,मैं सुन न सकी।मेरे मस्तिष्क में बिजलियाँ कौंधने लगी सिर्फ यही सोचकर कि उसने अपनी माँ के बारे में ये बातें कही।

माँ तो माँ होती है चाहें मोटी हो या पतली,गोरी हो या काली, पढ़ी-लिखी हो या अनपढ़।क्या माँ की ममता भी कुरूप और सुंदर होती है?माँ का ममत्व भी क्या सुंदरता का मोहताज होता है?''माँ''शब्द ही ऐसा है जो किसी विशेष के लिए विशेष नहीं होता बल्कि सबके लिए''खास''है और सबके लिए''आम''है।इस शब्द की गर्माहट को हर कोई महसूस कर सकता है,फिर चाहें माएँ खबसूरत हो या बदसूरत, विदुषी हो या अनपढ़।

उसकी बातें मुझे बेचौन कर गई थी।मैं उसके पास बैठते हुए बोली-''बेटा,माँ के बारे में ऐसी बातें नहीं करते हैं।आपकी माँ बहुत सुंदर हैं ,और आपकी ही नहीं हर किसी की माँ सुंदर होती हैं।क्या वह आपको प्यार करने में कोई कमी की हैं?क्या दो की जगह तीन रोटी खाने की जिद वो नहीं करती हैं?क्या जब तुम हहस्टल आते हो, तो उनकी आँखें भर नहीं आती हैं?क्या हर वक्त वह तुमको फोन करके परेशान नहीं कर देती हैं,और हर बार यही सवाल होता है-''क्या खाए हो?ठीक से खाए हो या नही?तुम ठीक तो हो न?''

उसने बोला-''हाँ आँटी, मम्मी ऐसा ही करती हैं।''फिर कुछ शर्मिंदगी से लड़खड़ाते शब्दों में बोला-''सॉरी आँटी,आई एम वेरी वेरी सॉरी'' उसकी आँखें शर्म व ग्लानि से झुक गई थी।

उसे अपनी गलती का एहसास हो चुका था और मुझे आत्म. संतोष,एक युवक की दिशाहीन सोच को सही दिशा में लाने का।

रत्ना श्रीवास्तव
साईं सदन
साहिबाबाद,गाजियाबाद यूपी

कफन

कफन सफेद ही क्यों होना चाहिए ????
सास ने ससुर की मृत्यु के समय सबके सामने कहा
मेरे मरने पर नीली साड़ी पहनाई जाए और लाल कफन ही उड़ाया जाए...............
फिर मुस्कुराते हुए बोलीं... लाल मे भी देह को
अग्नि स्वीकार कर लेगी।.....

डॉ सुरीति रघुनन्दन
(लेखिका एवं कवयित्री)
हिंदी शिक्षिका मारीशस

नजरिया

'अजी! सुनते हो , शर्मा जी की बहू अब जिला मजिस्ट्रेट हो गयी है ।' दमयंती चाय बनाते हुये रसोईघर से ही बोली । बाहर आँगन में बैठे नीलेश को कोई उत्तर न देते देख वह फिर बोली और चाय छानने लगी ।

दमयंती पूरे मोहल्ले की ब्रहडकोस्ट रिपोर्टिंग अहफिसर थी । या यूं कहें कि बस खबर इधर से उधर पहुँचाना उनका पसन्दीदा काम था । इसलिए नीलेश ने उसकी बातों में कोई दिलचस्पी न दिखाई।

चाय लेकर दमयंती पास आ गयी और कुर्सी खींच कर बैठते हुए बोली,' एक तो शर्मा जी का बेटा ही प्रशासनिक अधिकारी है और अब बहू भी डी एम हो गयी । घर के बाहर गाड़ियों की लाइन लगी रहती है और एक हम है कि बहू मिली वो भी कंगाल !'

अब नीलेश ने अपना मुँह खोला , ''क्यों ! क्या कमी है हमारी बहू में! सुंदर है, सुशील है, पढ़ी लिखी है, संस्कारवान है! तुम्हारा और हमारा ख्याल रखती है, बच्चों की बेहतर परवरिश कर रही है!''

दमयंती ने मुँह बिचकाया और बोली , ''हुँह! इससे क्या फर्क पड़ता है।''

नीलेश आगे कहते रहे, '' इन सबके साथ हमारी बहू सोशल वर्क भी कर रही है जिससे हमारा ही नाम रौशन हो रहा है । अब गाड़ियों की लम्बी कतार भले ही हमारे दरवाजे पर न हो लेकिन उसको लोग ज्यादा सम्मान देते हैं। शर्मा जी की बहू तो केवल पद के रुआब में रहती है। कभी देखा है उसे किसी से भी सभ्यता से बात करते हुए ।'' दमयंती की आँखे सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ गयीं । ''हमें तो हमारी बहू ही सबसे अच्छी लगती है । अब तुम भी उसमे अच्छाई देखो तो सोने में सुहागा हो जाये।'' नीलेश ने कहा । इसके साथ दमयंती ने भी सहमति में सिर हिला दिया । उसकी अहंखे अब चमक उठी थीं ।

अन्नपूर्णा बाजपेयी
कानपुर

पूर्णता का आभास

दर्शन ये तेरा कान्हा कुछ खास हो रहा है
मुझे पूर्णता का जैसे आभास हो रहा है

वो बालपन जो तेरा,मासूमियत ने घेरा
हर बाललीला तेरी,कोई राज जैसे गहरा
तेरी देख देख लीला मन होश खो रहा है
मुझे पूर्णता का जैसे आभास,,,,,,,,

ये सार तत्व माखन जो था पसंद तुझको
जैसे कि कह रहा हो बन्दे तू मथ ले खुद को
फिर हो प्रकट मैं आऊँ,माखन तेरा चुराऊ
*मै' रूपी तेरी मट्की को फोड़ फोड़ जाऊँ
आनंद का ये सागर हर ओर बह रहा है
मुझे पूर्णता का,,,

वो खेलना तेरा जो ग्वालों के संग संग में
कभी गायों को चराना तेरा वो वृंदावन में
पावन वो प्रेम तेरा छलके है मधुबन में
अटकेलियां है करता गोपियों के दर्पण में
हर एक कदम पर जैसे कोई रास हो रहा है
मुझे पूर्णता का,,,

जहाँ शान्तिदूत बन कर जो तू सभा में आया
वहाँ युद्घ को भी तुने अपने गले लगाया
किरदार कौन सा है जो तुने ना निभाया
किसी मोड पे ना रूकना तुने यही सिखाया
पा कर के ज्ञान सत्य का मन खामोश हो रहा है
मुझे पूर्णता का,,,

पूनम गौतम

कविता क्यों लिखती हूँ

यह काल जैसे प्रसव पीड़ा का हैं...
तन और मन को झकझोर कर रख देने वाली प्रसव वेदना...
*शायद कुछ नया जन्म लेने वाला हैं...'
वो वेदना, जो अपनों ने दीं.... समाज ने, वक्त ने...
वह वेदना प्रसव वेदना सी ही.... मुझे
कलपा रही हैं .
शरीर का रेशा रेशा चीख रहा हैं
नस- नस, पोर - पोर तिड़क रहा हैं
जेहन में हर तंतु मथ रहा हैं
माथे की नस तनते-तनते फटने को हैं
कसती, ढीली होती हुई रगे
दर्द से चीत्कारती साँसे ,
मुट्ठी कसते हाथ, कसमसाता, उबलता लहू
खुली आँखो से झर झर बहते आँसू
श्वास रुकने के डर से निकलती आहें
कुछ खोने का भय मुट्ठी जकड रहा हैं
कुछ छूटने का खौफ कलेजा हिला रहा हैं..
शरीर से अपना अंग अलग हो रहा हैं
इस जद्द- ओ जहद में मन शरीर सब सुलग रहा हैं....
फिर भी.....
दर्द के इस रेगिस्तान से... कुछ....
कुछ कोंपल सा फूट रहा हैं..
कुछ नया जनम ले रहा हैं...
शायद खुद का नया जनम...
शायद पुनर्जम... खुद का.. खुद से मिलने के लिए
नया और कुछ बेहतर होने के लिए...
पीड़ा से निकला सुख...
प्रसव पीड़ा का उपहार... शिशु
एक नया जन्म, एक नयी संभावना, एक नया रास्ता,
एक नयी मंजिल...
एक नव प्रस्फुटित...... मैं

सारिका श्रीवास्तव

सुधीर केवलिया की कवितायें

सफ़र – ए – जिंदगी

सुलगती रही है जिंदगी मेरी
गीली लकड़ी की तरह आज तक
ख्वाहिशों और उम्मीद की आग में.....

गुम हो गए हैं गुजरते वक्त के साथ
बुने हुए बहुत ख्वाब
बह गए हैं आंसुओं के साथ
तो कुछ ख्वाब
गुम हो गए हैं धुएं में......

आमादा रहा है तोड़ने को हौसला
हर इम्तिहान में वक्त मेरा
जानता था अगर टूट गया हौसला
बिखर जाएगा वजूद मेरा
नहीं समेट पाऊंगा
उसको फिर से जिंदगी में.......

मैंने खुद को बिखरने नहीं दिया
वक्त ने होने ही नही दिया अहसास
सूखने का कभी मुझे
करने को पूरी ख्वाहिशें और उम्मीद
रोशनी के साथ पूरी आग में.....................

सुलगता रही है जिंदगी मेरी
गीली लकड़ी की तरह आज तक
जद्दोजहद से भरे सफर - ए - जिंदगी में..........

वीराना

गुजरता हूं
जब भी
अपने उस पुराने मकान के
सामने से
थम जाते हैं कदम मेरे
एक धीमी सी आवाज
सुनाई देती है
मानो कोई बुला रहा है मुझे
नहीं समझ पाता
वह मेरा वहम है या हकीकत.......
आज भी खड़ा है मकान
अकेला,खामोशी की चादर ओढ़े
बहुमंजिला इमारतों के बीच
उनका शिकार होने से बचकर.........
तेज हवा के चलने पर
अंदर पड़े सूखे पत्तों के उड़ने से
टूटती खामोशी
दिन में साथ देती
पास की इमारतों की परछाइयां
रात को साथ देते
अंदर बने घोसलों में
आराम करते परिन्दे
बंद खिड़कियां और
दरवाजे पर ताला....
झांकने की कोशिश करता हूं
मकान के भीतर
खाली-खाली दिखता है हर ओर
गहरी सांस लेता हूं
झांकता हूं खुद के भीतर
महसूस कर अजीब सा वीराना
सहम जाता हूं
फिर से कभी मकान
तो कभी खुद को देखने लगता हूं...

-- **सुधीर केवलिया**

समय

समय जीवन मे है अनमोल ।।
गुजरता रहता है प्रति पल।।
जीवन पथ दुर्गम बहुत है मगर ।
सदैव समय के अनुरूप ही चल।।
समय के रथ पर होकर सवार।
सुख समृद्धि मिले भाग्यानुसार।।
पिछड़े अगर समय से हम।
समय ना करेगा कभी इंतजार।।
समय का चक्र बड़ा महान।
बिना रुके निरंतर ही चलायमान।।
अमूल्य ओर अबंधनीय ।
समय लाए जीवन में बहुत परिवर्तन।।
समय का अस्तित्व बड़ा ।
समय भाग्य से है जुडा ।।
समय की कीमत वो ही जानें ।
जिसका दुर्भाग्य से नाता जुड़ा ।।
समय से लिया निर्णय अगर।
भविष्य की न रहेगी फिक्र।।
कर्म करना है अपने हाथ।
प्रतिफल होगा ईश्वर का उपकार।।

भगत सिंह
नई दिल्ली

एक मोची

कुछ फटे हुए जूते
कुछ टूटी हुई चप्पल/ कुछ कीलें...साथ रखता हैं।
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पर
एक मोची मुझे रोज नजर आता हैं।

गर्मी,जाड़ा या हो बरसात/एक टूटे छातें की छत उसके पास
इत्मिनान से अपने काम में लगा रहता हैं।
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पर/एक मोची मुझें रोज नजर आता हैं।।

बड़ी-बड़ी हसरतों से दूर/शाम का चूल्हा जल जाए जरूर
बस ये ख्वाब पालता हैं।
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पे/एक मोची मुझे रोज नजर आता हैं।।

आते-जाते कुछ लोग/बड़े बाबू जूते साफ करवाते उससे
बड़े करीने से सफाई करता हैं।
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पे /एक मोची मुझे रोज नजर आता हैं।।

दिन ब दिन ख्वाहिशों के पीछे भागना
जितना मिल जाए उससे ज्यादा माँगना
संतोष क्या हैं...एक मोची से सीखा जा सकता है.
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पर /एक मोची मुझे रोज नजर आता है.

मगर... वो आज नही आया/क्या हुआ होगा उसे...?
ये सवाल मैंने पूछा खुद से
अगले दिन बीमार हुआ नजर आता है.
मगर आता है...
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पर
एक मोची मुझे रोज नजर आता है.

मैं जितना कर सकती थी मदद की उसकी
आखिर इंसानियत की बात थी।
क्यों इंसान ये ऊंच-नीच/और क्यों खुदा किसी पैदाइश
गरीब और अमीर बनाता हैं...?
मेरे घर से कुछ दूर चौराहें पर
एक मोची मुझें रोज नजर आता हैं।।

• **अनुराधा अच्छवान**

मुआवजा

भुखमरी से मौत की खबर निरी अफवाह के सिवा कुछ नहीं लगती थी। खाद्यमंत्री ने पिछले सत्र में सदन के सम क्ष रिकार्ड तोड़ खाद्यान्न होने की घोषणा की थी। विरोधी दलों का दुष्प्रचार या शरारती तत्वों की खुराफात भी हो सकती है। आज के जमाने में भूख से कौन मरता है? जरा सी मेहनत करके कमाया-खाया जा सकता है। काम करने वालों के लिए काम की कमी नहीं है। मरियल से मरियल रिक्शे वाले तक कमा-खा रहे हैं।

चुनाव सर पर था। विधायक जी यहाँ से लगातार दो बार चुने गए थे। क्षेत्र की जनता के बीच उनकी पैठ की जानकारी लखनऊ तक थी। लेकिन इस तरह की घटना ऐन वक्त पर पासा पलटने की कुव्वत रखती है। हाईकमांड से स्पष्ट निर्देश आया कि जैसे भी हो मामला को बढ़ने न दिया जाए। चक्का-जाम, रेल की पटरी पर धरना, राजमार्ग पर लाश र खकर हंगामा करना और कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन जैसी बातों की गुंजाइश शुरू में ही खत्म कर देनी होगी। अगर बात बिगड़ती है तो उनका टिकट भी कट सकता है। अगली बार अपनी सरकार बनने पर मंत्री पद मिलने का सुअवसर था। लेकिन अर्श से फर्श पर आने में देर कहाँ लगती है।

क्षेत्र के अधिकारियों का दल घटना-स्थल यानि मृतक के घर पहुँचा। गोद में बच्चे को लेकर सुबकती विधवा और बेजुबान प्राणी की तरह घर आए लोगों को किवाड़ से सटकर देखते कुपोषण के शिकार दो और बच्चे पहली नजर में ही घर का विहंगम दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। दल के प्रमुख ने बच्चों को वात्सल्य भाव से पुचकारा और एक कनिष्ठ कर्मचारी को उनके लिए मिठाई लाने को अपनी जेब से पैसा दिया। मृतक की बेवा से सहृदयतापूर्वक हालचाल पूछा। उसके एक अधीनस्थ ने औरत के पैरों की ओर इशारा करते हुए कहा, ''हजूर जरा देखिए...।'' उसके पैरों में कड़े थे। किस धातु के कड़े थे यह सुनिश्चित नहीं था।

''क्या है...?'' अधिकारी खीझ उठा।

''सर औरत के पास गहने...! घर के अन्दिर देखिएगा तो शायद और भी कुछ मिलेगा।'' अधीनस्थ काना-फूसी वाले अंदाज में उसके कानों के जितना नजदीक पहुँच सकता था उतना सरक कर बोला। अधिकारी को ऐसे अवसर पर आयकर अधिकारी की तरह जांच करना मुनासिब नहीं लगा। इसलिए उसने आंखो ही आंखो में उसे फटकारा।

औरत के कड़े देखने वाला कर्मचारी तक यह भाँप नहीं पाया कि उसकी गोद में पड़ा बच्चे को बुखार है।

लेकिन जब दल के एक अन्य कर्मचारी ने जो स्थाानीय होने की वजह से जमीनी हकीकत का बेहतर ज्ञान र खता था, यह बताया कि मृतक अपनी असंयत मदिरापान की आदत के कारण पहले से ही बीमार रहता था तो अधिकारी के विचार बदलने लगे।

'सर ये लोग जिस ट्राइब के हैं वहाँ पैसे न होने पर भी पानी की तरह दारू पी जाती है।'' वह बड़े आत्म विश्वास से बोला। फिर जरा विनोदपूर्ण लहजे में बोला, ''इधर यह बात मशहूर है कि यहाँ इतना अनाज और दूध-दही होता है कि मर्द दस नंबर के जूते पहनते हैं।''

''नो-नो...आप अपने को अपडेट कीजिए।'' अधिकारी वास्तव में उच्च विचारों वाला था। ''इन बच्चो को देख रहे हैं? जरा घर की हालत दे खए।''

सरकारी सेवा में लगे लोगों को आखिर क्या चाहिए। शाम को घ ार जाते वक्त' मानसिक शांति, महीने के अन्त में तनखाह और साल के अन्त में सेवा पंजिका में अनुकूल टिप्पणी। दल का प्रमुख अपने अधीनस्थों को इस मामले में जरा भी कोताही बरतने से सावधान कर रहा था। दल इस निष्कूर्ष पर पहुँचता दिख रहा था कि आश्रित मुआवजे के हकदार हैं। खासतौर पर राजनीतिक द्दष्टि से संवेदनशील मुद्दे पर नौकरशाही की घि ासी-पीटी लीक नहीं चलेगी। इस बात की अच्छी खासी संभावना थी कि विधायक जी स्वमयं मृतक के घर पधारकर कुछ सहायता देंगे।

मृतक रमई की टोली के लोग गुस्से में थे। अकिंचन लोगों का हजूम क्रोध में विकृत मुख के साथ विपरीतार्थक का उच्चाकरण करता हुआ बेहद अशोभनीय दिखता है। अनुभवी राजनीतिज्ञों को मालूम होता है कि जनता गुस्से में हाथी की तरह हुल देकर किले की ईंट से ईंट बजाने की ताकत रखती है। सत्तानसीनों को इससे भयभीत होना स्वाभाविक है। इन नौकरशाहों का क्या है। इनका सेवाकाल तमाम सुरक्षा प्रावधानों से सुसज्जित है। उन्हें कौन सा जनता की अदालत में जाना है।

गैरजिम्मेंवारी के आरोप में फौरन क्षेत्र के दो संबंधित अधिकारी निलंबित किए गए। चार अन्यू का दुर्गम स्थानो पर स्था नान्ततरण किया गया।

मुनिया को सांत्वंना देने के लिए टोले की महिलाएँ घेर कर बैठी थीं। कम से कम कुछ दिन तो धीरज बँधाए। ''सरकार से अभी तक कुछ नहीं मिला?'' एक ने सहानुभूति भरे स्वर में पूछा। लेकिन साथ में टोह लेने का अंदाज छलक ही पड़ा। बदले में मुनिया रो पड़ी। सभी जिसमें वह मि. हला भी शामिल थी उसे तत्क्षण हमदर्दी जताने लगीं।

एक तर्जुबेकार स्त्री ने उसके कान में फुसफुसाकर कहा,''सरकारी लोग जब तेरे घर ताक-झाँक करने आए तो सब चीज छिपा देना नहीं तो वे एक दमड़ी नहीं देंगे।'' यह सुनकर मुनिया का जी धक से हा गया। उसने अपने दोनों छौनों को मोह भी नजर से देखा। वे चूहेदानी में फँसे निरीह चूहे की तरह अपनी माँ को एकटक देख रहे थे। रूलाई रोकते हुए वह बस सर हिलाकर रह गयी। लोग पितृपक्ष में छप्पीरों पर खाने की सामग्री फेंकते हैं ताकि कौए के रूप में स्वर्ग से आए उनके पूर्वज खा सके। उसके पास तो जिंदा लोगों के लिए सूखी रोटी के लाले पड़े थे। कई दिनों से आधा पेट खाकर खटने के कारण उसका पति चल बचा।

इस सत्र में विधानसभा में घमासान मचा। विपक्ष मुख्यरमंत्री से खाद्यान्न की कमी न होने के बावजूद भूखमरी की घटना पर श्वेतपत्र की

माँग कर रहा था। मार्शल की मदद से कुछ विपक्षी सदस्यों को बाहर करने की नौबत आयी। विपक्ष ने सत्र में काम न होने देने की धमकी दी। इस अल्टीमेटम के बाद सरकार को सोचने पर मजबूर होना पड़ा। अन्तत में विपक्ष की बात को आंशिक रूप से मानते हुए खाद्यमंत्री को मृतक के यहाँ भेजना तय हुआ। साथ में क्षेत्र के विधायक भी होंगे।

जिस दिन मंत्री महोदय का आगमन था, टोले का पूरा कायाकल्प हुआ। अधिकारीगण मुनिया का बैंक अकाउण्ट पहले ही खुलवा चुके थे। चेक की राशि आखिर उसी में जमा होनी थी। मंत्रीजी की गाडियों का काफिला थोड़ी दूर पर रूक गया। आगे गाड़ी जाने लायक रास्ताी नहीं था। मनमाफिक बाइट लेने के आतुर कैमरे से सुसज्जित पत्रकारों को मंत्रीजी से फासले पर रखने के लिए पुलिसकर्मियों को हलका बलप्रयोग करना पड़ा। इसे पुलिसिया बर्बरता घोषित करके खुर्राट पत्रकार ताव खा गए। सौम्यक मुद्रा धारण किए सुदर्शन व्यक्तित्व के स्वामी मंत्रीजी धवल वस्त्रों में अत्यंन्ता शालीन लग रहे थे। उन्हें मालूम था कि राजनीति में अपनी यश-कीर्ति का शिलान्यास बारंबार करने की आवश्यकता पड़ती है। उन्होंने फौरन पुलिस को उन्हें रोकने से मना किया। लो. कतंत्र में जनता और जनसेवक के बीच कोई विभाजन रेखा नहीं होनी चाहिए। उनका यह आप्ते वाक्य अत्यंत सामयिक सिद्ध हुआ क्योंकि पत्रकारों का गुस्सा सीमा से बाहर नहीं गया।

'मुनिया बाहर आ। जरा देख कितने लोग आए हैं।' उसकी पड़ोसन खुशी और जोश से जरा चिल्लारकर बोली। वह हड़बड़ा गयी। पड़ोसन ने देखा कि वह अनाज से करीब एक चौथाई भरे एलमुनियम के भगोने को कोठरी के गड्ढे में छिपा रही थी। शायद कल रात में उसने गड्ढा खोदा था। बगल में फूल की एक तश्तरी भी थी। उसे भी जमीन में दफनाने का इरादा होगा। इस बर्तन का शायद कोई खरीदार नहीं मिला होगा। पड़ोसन यह देखकर अनायास ठिठक गयी। मुनिया के चेहरे पर कातरता के भाव थे। कहीं वह सबको उसकी संपदा के बारे में बता तो नहीं देगी। दोनों कुछ पल एक-दूसरे को ताकती रहीं।

जमीन पर साड़ी बिछाकर लिटाए गए उसके सबसे छोटे बच्चे का बुखार अभी तक उतरा नहीं था।

मनीष कुमार सिंह
वैशाली, गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश।

रिश्ते

रिश्ते कुछ जन्म से तो कुछ किस्मत से मिल जाते हैं,
पर रिश्ते चलते वही हैं जो दिल से निभाए जाते हैं।

जन्म से मिले रिश्तों को तो हर कोई संवार लेता है,
तारीफ उसकी है जो किस्मत से मिले रिश्तों को निखार लेता है।

जिस तरह अलग-अलग मोतियों को
एक ही धागे में पिरोना कारीगरी है,
उसी तरह अलग-अलग रिश्तों को
एक ही दिल में संजोना जादूगरी है।।

रिश्तों का नाम सिर्फ पाना ही नहीं, कुछ खोना भी होता है,
किसी की खुशियों में खुश, किसी के गम में रोना भी होता है।।

जिस तरह एक फूल को समय लगता है महकने में,
उसी तरह समय लगता है हर रिश्ते को पनपने में।।

कोई भी रिश्ता अक्सर उस मोड़ पर बिखर जाता है,
जब रिश्तों में स्वार्थ और अहम उतर आता है।।

''गलतफहमी'' नाम का घुन धीरे-धीरे
नाजुक रिश्तों को खा जाता है,
जब हम खुद ही सवाल करते हैं
और जवाब भी हमें खुद ही आ जाता है।।

मैं,मेरा, मुझे, मेरे लिए शब्द रिश्तों में तनाव पैदा करते हैं।
तू, तेरा, तुझे, तेरे लिए शब्द रिश्तों में लगाव पैदा करते हैं।।

''हम'' से रिश्ते हैं और रिश्तों से ''हम'' हैं।
जब ''हम'' हो साथ में तो काहे के गम हैं।।

रितु कुलश्रेष्ठ
फरीदाबाद, हरियाणा

खुलना पत्तों का

उस दिन वे मुझे बहुत दिनों बाद मिले। मिलते ही बोले, ''गुरु जी हमेशा की तरह मैं आपसे कुछ जानकारी लेना चाहता हूँ। कृपया मुझे बताएं कि ये कौन-से पत्ते होते हैं जो खुलते हैं, इनके खुलने का इंतज़ार बड़ी बेसब्री से किया जाता है ये कैसे होते हैं और कहाँ होते हैं? इसके साथ ही मुझे यह भी बताएं क्या ये पत्ते बंद रहते है?''

मैं सोच की नदी में कूदा ज़रूर, लेकिन मुझे उस समय कुछ न सूझा, मैंने उनसे कहा, ''नागरिक भाई मैं अभी किसी ज़रूरी काम से जा रहा हूँ, कल सुबह यहीं चौक में मिलेंगे 'नौ बजे'। यह सुनकर वे टा टा करके विदा हो गये और मैं अपने घर की ओर लौट पड़ा। मुझे कोई ज़रूरी काम नहीं था, अब मेरे लिए पत्तों के बारे में विचार करना सबसे ज़रूरी था।

घर में आते ही मैं नागरिक जी की गुत्थी सुलझाने में जुट गया। मेरे सामने पहला सवाल यह था कि पत्ते क्या होते हैं? मेरे दिमाग़ ने बताया कि पत्ते वृक्षों के होते हैं जिनमें पीपल के पत्ते महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं इनका प्रयोग पूजा में किया जाता है। केले के पत्ते बहुत बड़े होते हैं, दक्षिण भारत में उन पर भोजन परोसा जाता है, बंगाल में शादी-ब्याह में उनकी भूमिका होती है। नीम के पत्ते चिकित्सा में काम लिए जाते हैं। आम के पत्ते का वंदनवार बनता है। इसी प्रकार और भी अनेक वृक्षों के पत्ते काम आते हैं जिनसे अनेक दवाईयाँ बनती हैं, बीड़ी भी बनती है, दोने भी बनाए जाते हैं, पत्तल का निर्माण भी होता है आदि-आदि।

एक विशेष पत्ते होते हैं जिनसे पान बनाया जाता है। कह सकते है कि पान का देश में एक बड़ा उद्योग है जिसके साथ चूना, कत्था, सौंफ, इलायची, लौंग आदि के सहायक उद्योग भी भारत में खूब पनप रहे हैं, यह उद्योग 'पीक' (अंग्रेज़ी वाली) पर है।

हठात दिमाग़ ने अधिक जागृत होने पर सुझाया कि ताश के पत्ते भी बहुत महत्त्व रखते हैं जिनकी संख्या बावन होती है, जो चार प्रकार के होते हैं और जिनके दो रंग देखे जाते हैं।

अब सवाल था कि पत्ते खुलते कैसे हैं? लेकिन इस सवाल से भी पहले एक और सवाल सीना ताने खड़ा हो गया कि क्या पत्ते बंद रहते हैं, बंद रहते है तो कहाँ बंद रहते हैं और इन्हें कहाँ कहाँ अनेक साधनों से भेजा जाता है, जहाँ वे खुलते हैं, धुलते हैं और काम में लिए जाते है। इनके खुलने पर कोई सवाल-जवाब नहीं मांगा जाता।

पीपल के पत्तों के लिए कहा गया 'पीपरा के पतवा सरीखे डोले मनवा, चल आज देशवा की ओर ...' हाँ इनकी हिलोर बहुत मायने रखती है। अब इनके खुलने की तो कोई बात है ही नहीं वह तो खुले ही रहते हैं। भारत का लोकतंत्र पीपल (अंग्रेज़ी वाला) पर ही टिका है।

पान के पत्ते कुछ जानने को मज़बूर करते हैं क्योंकि पान ताश में भी होता है। अंग्रेज़ी में, इसे हार्ट यानी 'दिल' कहा जाता है। दिल अर्थात् सर्वशक्तिमान। यह अगर बंद हो जाए तो समझो 'खेल ख़त्म' ओह! तो ताश का पत्ता बंद होता है, इस विचार ने मुझे न्यूटन बना दिया। अब बात समझ में आने लगी कि बंद होने का मामला ताश से सर्वाधिक जुड़ा हुआ है।

ताश के पत्ते यानी 'बाजी '। ताश की बाजी में कुछ खेल ऐसे हैं जिनमें पत्ते बंद रखे जाते हैं और निर्णय के अवसर पर खोले जाते हैं। ऐसी ताश की बाजी 'फ्लैश' में होती है, यह एक प्रकार का जुआ है। इसमें एक पद्धति 'ब्लाइंड' खेलने की है। 'ब्लाइंड ' अर्थात् 'अंधा'। बाजी के अंत में तीनों पत्ते खोले जाते हैं, उनकी ताक़त का अंदाज़ा लगाया जाता है और जिसके पत्ते अधिक ताक़त रखते हैं - वह बाजी जीत जाता है। यदि तीनों पत्ते एक ही वजन के हो भले ही इक्के या तीन दुक्कियाँ हो, वे जीतने की ताक़त रख सकते हैं, तीनों एक ही रंग के हों, तब भी वे महत्त्व रखते हैं। कभी-कभी इस खेल में सभी प्रतिभागी अपने तीन-तीन पत्तो में से केवल एक-एक पत्ता खोलते हैं, सबके खुले पत्तो में जिसका पत्ता सबसे बड़ा होता है वह विजयी घोषित होता है। सबसे, बड़ा पत्ता इक्का भी हो सकता है और कभी छोटी इकाई जैसे नहला भी। अब बात समझ आने लगी थी कि जब कोई छोटा नेता अपने बड़े नेता से अलग होकर अपने साथियों के साथ विद्रोह पर उतर आता है, तब सबको उसके पत्ते खुलने की प्रतीक्षा होती है। एक बड़ी बात और भी समझ आयी कि इक्का जैसी सबसे छोटी इकाई ही सबसे बड़ी इकाई यानि ''आम आदमी'' होता है जो विजेता होने के अवसर सबसे अधिक पा सकता है ...

अब मुझे ज्ञात हो गया कि मैं नागरिक को अपने पत्ते खोलकर, सही उत्तर दे सकता हूँ।

हरीश नवल
६५ साक्षरा अपार्टमेंटस
ए-३ पश्चिम विहार,
नई दिल्ली-११००६३

बत्तीसी पुराण

बरसों पहले किसी ने उन्हें बताया था कि हँसते रहने से आदमी की सेहत अच्छी रहती है...। बस्स, उसी दिन से उन्होंने अपनी सेहत की खातिर इस बात को गाँठ बाँध लिया। जीवन में दुःख होता या सुख, वे बस हँसते रहते थे और हर वक्‍त हँसते रहने के कारण उनकी सेहत तो अच्छी हो गई, पर वे एक मुसीबत में पड़ गए। उन्हें हर वक्‍त हँसते रहने का इतना अभ्यास हो गया था कि चाह कर भी उनकी बत्तीसी भीतर जाती ही नहीं थी।

हर समय मुँह खोल कर बत्तीसी झलकाने के कारण टाइम-बेटाइम उन्हें लोगों की लताड़ पड़ चुकी थी पर वे थे कि आदत से मजबूर...मुँह खोल कर हँसते रहते...। लताड़ देने वाला भी हार कर हँस देता,"याऽऽऽर...तुम्हारे जैसे बेहया आदमी नहीं देखा...।"

'बेहया' शब्द अपने लिए सुन कर उन्हें ठेस लगती। वे जबरिया अपना मुँह बन्द कर लेते, पर दूसरे ही क्षण बत्तीसी अपने आप ही झलक जाती...होंठ फैल जाते...। देख कर लगता, जैसे हँस रहे हों। सामने वाला गुस्से में आगे बढ़ जाता, "अरे, कुछ तो शर्म करो...।"

अपनी इस आदत से वे भी कम परेशान नहीं थे। सो समय-बेसमय हँसते वक्‍त वे उस आदमी को लाख-लाख बद्दुआ देते, जिसने उन्हें हँसना सिखाया था...। उनकी इस आदत से उनकी पत्नी और बच्चे भी कम परेशान नहीं थे।

एक दिन अहफिस से लौटे तो देखा, पत्नी पेट-दर्द से बुरी तरह तड़प रही है। उन्होंने उसे इस हालत में दे खा तो हँसने लगे,"क्यों, क्या हुआ तुम्हें...? तुम इस तरह लोट-पोट क्यों हो रही हो...?"

"तुम्हें क्या दिखाई नहीं दे रहा...? पेट-दर्द से मेरा बुरा हाल है और तुम हो कि खुश हो रहे हो...? अरे, जल्दी से डॉक्टर बुलाओ नहीं तो मैं मर जाऊँगी...।"

पत्नी ने रोते हुए कहा तो उनकी हँसी तो बन्द हो गई पर बत्तीसी खुली रही,"हाँ...हाँ...मैं अभी डहक्टर को लेकर आता हूँ...।"

बत्तीसी खोले हुए वे बाहर निकले तो पड़ोसी शर्मा ने कहा,"क्या बात है मिश्रा जी...बड़े खुश नजर आ रहे हो...?"

"अरे नहीं शर्मा जी, ऐसी कोई बात नहीं...। दरअसल डॉक्टर को बुलाने जा रहा हूँ...। पेट-दर्द से पत्नी की हालत बहुत खराब है...।"

आश्चर्यचकित शर्मा उनसे कुछ और पूछता कि वे हँसते हुए चले गए।

डॉक्टर की क्लिनिक घर के पास ही थी। दस मिनट में ही पहुँच गए। डहक्टर किसी दूसरे मरीज को देख रहा था। समय लगते देख वे हँसते हुए बेंच पर बैठ गए और आने वाले मरीजों को पूरी बत्तीसी खोल कर देखने लगे। मरीज उन्हें गुस्से से देखते और फिर आगे बढ़ जाते।

थोड़ी देर बाद जब डहक्टर खाली हुए तो उनकी ओर मुड़े,"कहिए मिश्रा जी...कैसे आना हुआ...?"

"जीऽऽऽ, पत्नी के पेट में भयंकर दर्द है...जरा चल कर देख लेते...।" कह कर वे हँसने लगे तो डॉक्टर को भी हँसी आ गई, "ऐसी भी क्या नफरत मिश्रा जी अपनी पत्नी से, कि उसके दुःख में भी आप इतना खुश हो रहे...।"

"नहीं. नहीं..." कुछ सफाई सी देते हुए उन्होंने डहक्टर का बैग उठाया और फिर अपनी पूरी बत्तीसी झलकाते हुए घर की ओर चल दिए।

पत्नी का चेकअप कर दवा वगैरह लिख कर डॉक्टर तो चले गए पर उसके बाद पत्नी ने घर में जो महाभारत मचाया कि असली कौरव भी होते तो यह देख कर महाभारत से तौबा कर लेते...।

उन्होंने पत्नी को समझाने की बहुत कोशिश की, हर तरह से अपने अमर प्रेम का यकीन दिलाया, पर सब व्यर्थ...। उसकी एक ही रट-"मेरे दुःख में तुम्हें बहुत हँसी आती है न...। अब देखना, जब तुम बीमार पड़ोगे तो मैं डॉक्टर को भी नहीं बुलाऊँगी...।"

पत्नी फिर दहाड़ मार कर रोने लगी तो दीर्घशंका का बहाना बना कर वे जल्दी से खिसक लिए...। काफी देर बाद हँसते हुए निकले तो फिर वही नजारा...। घबरा कर लघुशंका घर में घुस गए। ऐसी विकट परिस्थिति में उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें...। काफी देर बाद बाहर निकले तो एकदम निचुड़े हुए।

अपनी इस आदत से उत्पन्न स्थिति से उन्हें कितनी परेश. ानी झेलनी पड़ती है, यह किसी को कैसे समझाएँ...? एक बार तो इस आदत के कारण इतना परेशान हुए कि उन्हें उस जगह से मुँह ही छिपा कर भागना पड़ा। हुआ यूँ कि उनके एक रिश्तेदार की मृत्यु हो गई। न चाहने के बावजूद पिता की की आज्ञा के कारण उन्हें वहाँ जाना ही पड़ा। जाते वक्‍त पिता ने उन्हें खास हिदायत दी थी," धीरज बँधाते समय जरा अपनी बत्तीसी पर नजर रखना...। इसके कारण अगर हमारे व्यवहार पर असर पड़ा तो समझे रहना...तुम्हारी खैर नहीं...।"

और उन्होंने पिता के निर्देशानुसार ऐसा ही किया भी...। वहाँ सबके सामने उदास आँखों के साथ उन्होंने अपनी बत्तीसी पर काफी देर नियन्त्रण रखा, पर जैसे ही मृत रिश्तेदार की पत्नी-बच्चों ने दहाड़ मार कर रोना शुरू किया, उनकी बत्तीसी खुल गई...। उन्हें देख गुस्से में लोगों ने जो-जो बात कही कि दुम दबा कर उन्हें वहाँ से भागना पड़ा।

इस भीषण काण्ड के बाद से तो उन्होंने किसी के घर मातम में जाना ही छोड़ दिया। दूसरे तक तो फिर भी चल गया पर अपने घर क्या करते...? पिता की सहसा मृत्यु हो गई पर तब भी उनका वही हाल रहा। कन्धे पर पिता की अर्थी थी और नीचे उनके चेहरे पर पूरी बत्तीसी खिली हुई थी। रिश्तेदारों ने देखा तो थू-थू किया,"कैसा ।"

कपूत जन्मा है चिरौंजीलाल के यहाँ...। देखो तो जरा, बाप के मरने पर कैसा हँस रहा...इतना खुश तो कोई दुश्मन के मरने पर भी नहीं होता...

पत्नी ने भी रात को आड़े हाथों लिया,''शर्म नहीं आती इस तरह खींसे निपोड़ते हुए...? अरे, अगर दिल में दुःख नहीं था तो कम-से-कम झूठमूठ ही दुःख दर्शा कर इज्जत बचा लेते...। रिश्तेदारों का तो ख़्याल करते...। छिः...क्या सोचते होंगे सब...। तुम खुद सोचो कि तुम्हारे मरने पर अगर तुम्हारा बेटा भी इसी तरह हँसे तो कैसा लगेगा तुम्हें...?''

और फिर दूसरे ही क्षण पत्नी दहाड़ मार कर रोने लगी,''जब तुम जन्म देने वाले पिता के मरने पर नहीं रोए तो मेरे मरने पर क्या रोओगे...?''

ऐसी बात नहीं है कि अपनी इस आदत से मुक्ति का कोई उपाय वह न सोचने की कोशिश करते हों। इसी सन्दर्भ में एक बार उन्होंने बुर्का पहनने पर भी विचार किया था पर फिर जगहँसाई के भय से इस विचार को भी त्याग दिया।

इधर वे एक और संकट में फँस गए थे। पत्नी ने खुद तो उनसे बोलना छोड़ा ही, साथ ही बच्चों को भी सख़्त हिदायत दी थी कि,''जब तक तुम्हारे बाबू सुधरें नहीं, तब तक उनसे कोई नहीं बोलेगा...।'' अब बच्चे ठहरे माँ के परम भक्त...सब ने उनसे बोलना छोड़ दिया।''

वे रोज सुबह हँसते हुए उठते...दीर्घशंका-लघुशंका से निपट मेज पर पहले से रख दिए गए खाने को हँसते-हँसते खाते और ऑफिस चले जाते। माँ से उनका अकेलापन देखा नहीं जा रहा था। एक दिन उन्होंने बहुत समझाया,''बेटाऽऽऽ, खुश रहना अच्छी बात है...। पर दुःख के समय भी तू खींसे निपोरे रहता है, यह भी कोई बात हुई...? यह अच्छी बात नहीं है बेटा...।''

माँ की यह बात तीर की तरह उनकी अन्तरात्मा को भेद गई। उन्होंने उसी वक़्त प्रण किया...न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी...। आज इसी वक़्त बत्तीसी को उखाड़ फेंकूँगा...मारे गुस्से और क्षोभ के मन-ही-मन उन्होंने यह प्रण लिया पर उस कठिन घड़ी में भी उनकी खुली बत्तीसी से हँसी बरकरार थी...। अपनी प्रतिक्रिया उन्हें सामने लगे शीशे में दिखाई दी तो शीशे को तोड़ कर जा पहुँचे दाँतों के डॉक्टर के पास,'' डॉक्टर साहब, पूरी बत्तीसी उखाड़ने का आप क्या लेंने...?''

डॉक्टर ने उनकी ओर देखा...। बत्तीसी खुली देख कर क्रोधित हो गया,''शरम नहीं आती डॉक्टर से मसखरी करते हुए. ..?''

वे परेशान हो गए...। किसी तरह डॉक्टर को उन्होंने अपनी समस्या समझाई। डॉक्टर को दया आ गई...। वह कलयुगी होने के बावजूद पैसे व दया के मामले में सतयुगी निकला। कम पैसे व उससे भी कम समय में में ही उसने उनकी पूरी बत्तीसी उखाड़ कर उनके हाथों में थमा दी...।

वे बेहद प्रसन्न हुए और प्रसन्नता के आवेग में अपना सारा कष्ट भूल गए...। खूब खुश होकर वे घर पहुँचे और पत्नी से बोले,''लो भाग्यवानऽऽऽ, जिस कारण से तुम मुझसे नाराज रहा करती थी, वह कारण ही मैने जड़ से उखाड़ फेंका...।''

कहते-कहते उनका मुँह फिर खुल गया...। उनके मुँह का अन्धेरा देख पत्नी तो गश खाकर गिर पड़ी...। माँ ने देखा तो दहाड़ मार कर रो पड़ी,''अरे, अभी तो मैं ही बैठी हूँ, तो फिर तू कैसे इतना बुढ़ा गया रेऽऽऽ...?''

पत्नी भी आते-जाते गुस्से में मुँह फेर कर आगे बढ़ जाती है,''खूसट बुढ्ढा कहीं काऽऽऽ...।''

अब वे पहले से कहीं अधिक परेशान हैं...। पहले जहाँ सिर्फ पत्नी और बच्चे उनसे रूठे थे, वहीं अब माँ भी रूठ गई है...। उनका घर से बाहर निकलना भी दूभर हो गया है...। आदतन उनका मुँह अब भी खुल जाता है, जिसे देख कर लड़कियाँ-औरतें गुस्से से फूट पड़ती हैं,''इस बुढ़ौने को देखो तो सही ...मुँह में एक भी दाँत नहीं...कब्र में पाँव लटकाए है, फिर भी लड़कियों को देख कर हँसता है...कुत्ता कहीं काऽऽऽ...।''

इन सब दुर्घटनाओं से वे इतने अधिक परेशान हो गए हैं कि अब फिर से बत्तीसी लगवाने के चक्कर में हैं...। बस्स, उन्हें तलाश है तो एक दूसरे डॉक्टर की...।

प्रेम गुप्ता 'मानी'
कैलाश विहार,
आवास विकास योजना संख्या-एक,
कल्याणपुर, कानपुर-208017(उ.प्र)

प्रेम

जहाँ जल है,वहाँ जल ही दिखा सभी को
किसी ने नहीं देखा,जल की तरलता को
उसके बहाव को
उसकी प्यास को
सब सिर्फ जल से अपनी प्यास बुझाते रहें.....

जहाँ वन दिखे,लोगों ने वृक्षों को काटा
उखाड़ फेंक दिया
घर बनाये
और न जाने कितनों के घर तबाह हो गए
लोगों ने तबाही को नहीं देखा,न समझा.....

जहाँ फूल है,वहाँ काटें भी हैं
सभी ने फूल को पसन्द किया
उसके रंग को प्यार किया
उसकी सुगंध को महका,प्यार किया
पर फूल की कोमलता को नहीं अपनाया......

अक्सर,
मैं रुक जाता हूँ, ठहर जाता हूँ
जल,वन और फूल को देखकर
क्योंकि,
प्रेम पर अगर नजर न ठहरें तो फिर जीवन ही कहाँ....??

विष्णु सिंह
पटना

राह झूठ के हैं कई

लाखों दुख मुझको मिले ,चले दुखों के तीर ,
पर मिलते ही इक खुशी,मन हो गया अधीर।

झूठ बोलकर सुख मिला ,सच बोला दुख ताप ,
शुभ खातिर जब जो कहा ,वो होता प्रभु जाप।

सच्चाई का जगत मे,होता नहीं विकल्प ,
राह झूठ के हैं कई,पर मंजिल है अल्प।

जो सपना वो सच नहीं ,,जो सच नहि यथार्थ ,
जो यथार्थ शुभ ही नहि ,वह है ब्यर्थ पदार्थ।

परहित से फुरसत नहीं ,करे नित्य उपकार ,
दूजों खातिर जो जिये ,उसका पुण्य अपार।

महेंद्र कुमार वर्मा

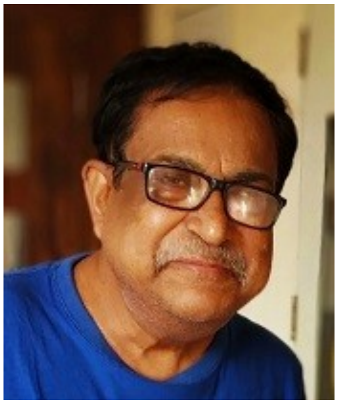

हिन्दी की गूँज

राम भजो

जितना जीर्णोद्धार हुआ है राम भजो
उतना बँटाधार हुआ है राम भजो

मरघट पर छत बैठ गया,पच्चीस मरे
ठेकेदार फरार हुआ है राम भजो

पकड़ गया है,जाँच चलेगी,सब्र रखो
उस पर एफ़आईआर हुआ है राम भजो

जाने कैसी कानाफूसी की उसने
अफसर खातिरदार हुआ है राम भजो

फिर छत बनवायी जाएगी यह कहकर
जालिम सेवादार हुआ है राम भजो

जिनके अपने लोग मरे उनके आँसू
मोती से अंगार हुआ है राम भजो

सिस्टम-विस्टम सब भगवान भरोसे है
ईश्वर भी लाचार हुआ है राम भजो

विनोद पाण्डेय

मेरा बचपन

जितनी भी कीमत लगे सब बता दो।
मगर मेरा बचपन तुम मुझको दिला दो।
तैयार हूँ मैं देने को सब कुछ यहाँ।
मगर मेरे बचपन से मुझको मिला दो।
जितनी भी कीमत लगे सब बता दो।

छिपाऊँगा कुछ भी न हाथों में अपने।
बचाऊँगा कल के लिए भी नहीं कुछ।
जो है पास मेरे मैं सब दे सकूँगा।
मगर मेरा बचपन तुम मुझको दिला दो।
जितनी भी कीमत लगे सब बता दो।

भले धूल मिट्टी में हम थे सने।
भले पैसे भी थे नहीं जेब में।
मगर न कमीं थी कहीं जिन्दगी में।
जिन्दगी के वो दिन तुम मुझको दिला दो।
जितनी भी कीमत लगे सब बता दो।

हो गये हों भले आज पैसे बहुत।
मगर आँख से नींद गायब हुई।
वो कश्ती चलाते थे मस्ती से जो।
वो कागज की कश्ती तुम मुझको दिला दो।
जितनी भी कीमत लगे सब बता दो।

होकर बड़ा थक गया हूँ बहुत।
अब ऊर्जा नहीं पास मेरे रही।
छोटा था तो ही मैं अच्छा रहा।
हो सके तो मुझे आज छोटा बना दो।
जितनी भी कीमत लगे सब बता दो।

अमलेन्दु शुक्ल
सद्धार्थनगर उप्र

हरियाणा की बेटी डॉ एस अनुकृति विश्वबैंक की अर्थशास्त्री बनकर विश्व में रोशन कर रही हैं भारत का नाम'

नारनौल। 23 अक्टूबर, 1981 को नारनौल (हरियाणा) में जन्मी तथा हरियाणा के ही हिसार शहर में पली-बढ़ी डॉ एस अनुकृति ने अपने नगर और प्रदेश का ही नहीं, बल्कि अपने देश का का भी नाम विश्व में रोशन किया है। पिछले दिनों ही विश्वबैंक, वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) में बतौर अर्थशास्त्री ज्वाइन करने के साथ ही अनुकृति विश्व की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने वाली इस सर्वोच्च बैंकिंग संस्था की दस सदस्यीय मानव संसाधन समिति की सदस्य भी बन गई हैं, जो पूरे विश्व में मानव संसाधन विकास का जिम्मा संभालती है। इससे पूर्व सात वर्षों तक बीसी यूनिवर्सिटी, बोस्टन (अमेरिका) में अर्थशास्त्र की प्रोफेसर रही अनुकृति के पति सिद्धार्थ रामलिंगम पहले से ही विश्वबैंक में कं. सल्टेंट के पद पर कार्यरत हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार और शिक्षाविद् डॉ रामनिवास 'मानव' तथा अर्थशास्त्र की पूर्व प्रवक्ता डॉ कांता भारती की लाडली बेटी तथा जन्मजात विशिष्ट प्रतिभा की धनी अनुकृति की उपलब्धियां वैश्विक स्तर की रही हैं। दिल्ली के सेंट स्टीफेन्स कॉलेज से बीए इकोनॉमिक्स (ऑनर्स) और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से एमए (अर्थशास्त्र) करने के उपरांत विश्व के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों मंस से एक कोलंबिया विश्वविद्यालय, मैनहैट्टन (अमेरिका) से एमए (अर्थशास्त्र), एमफिल् और पीएचडी की तीन उपाधियां एकसाथ प्राप्त कीं। रोचेस्टर, ब्राउन, विसकोंसिन मेडीसिन, कोलंबिया, न्यूयॉर्क और मेरीलैंड सहित अमेरिका के छह प्रमुख विश्वविद्यालय में पीएचडी हेतु चयनित होने वाली अनुकृति को अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, स्वीडन, अहस्ट्रेलिया, भारत और कतर सहित सात देशों के सत्रह विश्वविद्यालयों तथा समतुल्य संस्थानों में सर्विस हेतु चयनित होने का गौरव भी प्राप्त हुआ।

अपनी शिक्षा के दौरान भारत सरकार का नेशनल अवार्ड, अमेरिका की जीई कैपिटल स्कॉलरशिप, विकरी और हैरिस अवार्ड तथा कोलंबिया विश्वविद्यालय की करोड़ों की स्कॉलरशिप प्राप्त करने वाली अनुकृति को वर्ल्ड इकोनॉमेट्रिक सोसाइटी का प्रथम यंग रिसर्चर अवार्ड भी प्राप्त हो चुका है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, बोस्टन (अमेरिका) की फैलो रह चुकी अनुकृति वर्तमान में कोलंबिया यूनिवर्सिटी, मैनहैट्टन (अमेरिका) की फैलो तथा इंस्टीट्यूट ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स (५।), बोन (जर्मनी) की रिसर्च एफिलिएट हैं। भारत और अमेरिका के अतिरिक्त कनाडा, पेरू, पोर्टोरिको, बरमूडा, ब्रिटेन, स्पेन, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, चीन, हांगकांग, सिंगापुर, केन्या और इथोपिया सहित लगभग बीस देशों की यात्रा कर चुकी हैं। अनुकृति डेवलपमेंट इकोनॉमिक्स की विशेषज्ञ हैं तथा लगभग डेढ़ दशक पूर्व, विश्वबैंक की सलाहकार रहते हुए, लैंगिक समानता, विश्व में महिलाओं की आर्थिक स्थिति, महिलाओं की अशिक्षा और पिछड़ापन, बाल-कुपोषण आदि अनेक विषयों पर कार्य कर चुकी हैं।

उल्लेखनीय है कि डॉ एस अनुकृति एक अच्छी लेखिका भी हैं। देश-विदेश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में इनके लेख तो प्रकाशित होते ही रहते हैं, वर्ष 1999 में उनका एक बालकाव्य संग्रह 'फुलवारी के फूल' भी प्रकाशित हो चुका है। 2018 में 'डॉटर ऑफ महेंद्रगढ़' नाम से बनी वीडियो फिल्म में भी इनका जीवन-परिचय शामिल किया गया था। सचमुच बहुत गर्व है पूरे देश को, अपनी सुयोग्य और मेधावी बेटी डॉ एस अनुकृति पर।

'बदल गये दस्तूर' दोहा–संग्रह पर अंतरराष्ट्रीय विचार–गोष्ठी आयोजित

साहित्यिक दस्तावेज हैं डॉ 'मानव' के दोहे : डॉ एचएस बेदी

नारनौल। डॉ रामनिवास 'मानव' हिंदी के प्रतिमानक दोहाकार हैं तथा इन्होंने दोहा विधा को नये आयाम दिये हैं। यह कहना है हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलाधिपति डह एचएस बेदी का। डह 'मानव' के नव-प्रकाशित तथा विश्व के प्रथम कोरोना-केंद्रित दोहा-संग्रह 'बदल गये दस्तूर' पर आयोजित 'वर्चुअल अंतरराष्ट्रीय विचार-गोष्ठी' में बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए उन्होंने कहा कि कोरोना-काल की संपूर्ण विभीषिका को 'बदल गये दस्तूर' संग्रह के दोहों में प्रामाणिक अभिव्यक्ति मिली है। अतः कहा जा सकता है कि अपने युग का साहित्यिक दस्तावेज हैं डह 'मानव' के दोहे। 'डॉ मानव' को एक संवेदनशील सर्जक और सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्ध रचना-शिल्पी बताते हुए बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक (हरि) के कुलपति डॉ रामसजन पांडेय ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि उनके दोहे लोक-जागरण के, लोक-चित्त के परिष्कार के और लोक-चित्त के विस्तार के दोहे हैं, जो अपने परिवेश के समूचे यथार्थ को, संकेतों के माध्यम से, हमारे सामने उजागर करते हैं। महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल (हरि) के कुलपति डॉ श्रेयांश द्विवेदी तथा सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राज) के कुलपति डॉ उमाशंकर यादव ने एक सार्थक दोहा-संग्रह के प्रकाशन पर डॉ 'मानव' को बधाई देते हुए कहा कि वह अपने परिवेश के कुशल चितेरे हैं तथा इनके दोहों में कोरोना-काल का सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य बखूबी झलकता-झांकता दिखाई पड़ता है। इनके दोहे अपने समय का साहित्य भी हैं और इतिहास भी।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, नारनौल (हरि) के जिला अध्यक्ष डह जितेंद्र भारद्वाज द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना-गीत के उपरांत डॉ पंकज गौड़ के कुशल संचालन में संपन्न हुई इस विचार-गोष्ठी में ट्रस्ट की अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम-प्रभारी और दिल्ली की वरिष्ठ कवयित्री उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी' ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् कवि डॉ 'मानव' ने अपने दोहा-लेखन की पृष्ठभूमि और अपनी रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट किया, वहीं डह जितेंद्र भारद्वाज ने 'बदल गये दस्तूर' संग्रह के प्रतिनिधि दोहो का सस्वर पाठ कर संगोष्ठी को कवितामय बना दिया।

इन्होंने पढ़े आलेख : इस महत्त्वपूर्ण विचार-गोष्ठी में त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर (नेपाल) की हिंदी-प्रोफेसर डॉ श्वेता दीप्ति, वर्सा विश्वविद्यालय, वर्सा (पोलैंड) के हिंदी-प्रोफेसर डॉ सुधांशु शुक्ल, स्वभोस एवं स्वाकम इनकॉर्पोरेशन, सैन डियागो (अमरीका) की पूर्व अध्यक्ष डॉ कमला सिंह, आबूधाबी (यूएई) की वरिष्ठ कवयित्री और शिक्षाविद् ललिता मिश्रा, उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार में भाषा एवं ज्ञान-विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ दिनेश चमोला 'शैलेश' और बलटाना (पंजाब) के विख्यात कवि, लेखक और समीक्षक डॉ सुभाष रस्तोगी ने 'बदल गये दस्तूर' दोहा-संग्रह पर आलेख प्रस्तुत कर डॉ 'मानव' के दोहों की विस्तृत समीक्षा की। हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला के पूर्व निदेशक डॉ पूर्णमल गौड़ और दिल्ली की वरिष्ठ साहित्यकार डॉ नीलम वर्मा ने, संभागी वक्ता के रूप में, अपने विचार व्यक्त किये।

ये रहे उपस्थित : अपने ढंग की इस अनूठी और ऐतिहासिक विचार-गोष्ठी में एक ओर जहां चार विश्वविद्यालयों के कुलपति-कुलाधिपति उपस्थित रहे, वहीं दूसरी ओर विश्वबैंक, वाशिंगटन डीसी (अमेरिका) की अर्थशास्त्री डॉ एस अनुकृति, सिएटल (अमरीका) की वरिष्ठ कवयित्री डॉ मीरा सिंह, काठमांडू (नेपाल) की अंतरराष्ट्रीय हिंदी-पत्रिका 'हिमालिनी' के प्रबंध-संपादक सच्चिदानंद मिश्र, मुंबई (महाराष्ट्र) के आयकर उपायुक्त सुरेश कटारिया, आईआरएस, गुजरात सिंधी अकादमी, अहमदाबाद (गुजरात) के पूर्व अध्यक्ष डॉ हूंदराज बलवाणी, जगन्नाथ हिन्दी महाविद्यालय, तलश्शेरी (केरल) के प्रबंध-निदेशक डॉ पीए रघुराम, चंडीगढ़ की सरोजिनी रस्तोगी, अलवर (राज) के वरिष्ठ कवि संजय पाठक, नेरटी (हिप्र) के रमेशचंद मस्ताना, हरियाणा में हिसार से डह राजेश शर्मा, डह जितेंद्र पानू, डह यशवीर दहिया, डॉ राजाराम दहिया, सदाचार टीवी की प्रभारी कुमारी दीक्षा, प्रवीण कुमारी, रमेश टांक, सुरेश सभ्रवाल और मुनीष कुमारी, भिवानी से विकास कायत, सिवानी मंडी से डॉ सत्यवान सौरभ, नारनौंद से बलजीत सिंह और राजबाला 'राज', गुरुग्राम से कमलेश शर्मा तथा नारनौल से ट्रस्टी डह कांता भारती, कृष्णकुमार शर्मा, एडवोकेट, प्रो हितेश कुमार, राजीव गौड़ और अमरजीत सिंह ने अपनी उपस्थिति से तीन घंटों तक चली इस विचार-गोष्ठी को विशिष्ट गरिमा प्रदान की।

गाँव की स्वर्णिम यादें

ना चक्की की घर्घर है अब, ना सिलबट्टे की रगड़न।
ना टिप टिप चूते छप्पर हैं, ना गीले सोंधे आँगन।।
बोलो फिर क्यों अब तक इसको गाँव बुलाते हैं।
क्योंकि यहीं का अन्न है जिससे हम पल पाते हैं।

ना कोल्हू के बैल बचे हैं, ना हैं चौपालें,
ना पावों की फटी बिंबाई, ना हाथों के छाले।।
ना पेडों पर पड़ते झूले,ना पींग बढ़ाते बच्चे,
बचपन की वो मीठी यादें, दिन थे कितने अच्छे।
नानी की हर शाम कहानी,फोन सुनाते हैं।............
बोलो फिर क्यों अब तक इसको गाँव बुलाते हैं।
क्योंकि यहीं का अन्न है जिससे हम पल पाते हैं।

पेड़ों पर बन्दरबाजी, खो-खो गिल्ली डंडा,
दीवारों में ऊंचाई पर चिपका उपला कंडा।
तालाबों की मिट्टी से होली में लिपी दीवारें,
दिवाली में मुंडेरों पर दीपक सजी कतारें।
छोड़ घरेलू हम विदेश के बल्ब जलाते हैं।...........
बोलो फिर क्यों अब तक इसको गाँव बुलाते हैं।
क्योंकि यहीं का अन्न है जिससे हम पल पाते हैं।

गलती पर बुजुर्ग से डरना,और सम्मानित करना,
बड़ी साईकल सीखने के चक्कर में चढ़ना गिरना।
गांवों की पगडण्डी पर बैलों के संग भागना,
चले वीडियो तो फिर पूरी पूरी रात जागना।
अगले दिन घर पता चला तो फिर पिट जाते हैं।........
बोलो फिर क्यों अब तक इसको गाँव बुलाते हैं।
क्योंकि यहीं का अन्न है जिससे हम पल पाते हैं।

लकड़ी की पाटी को रँगना,कलम दवात बनाना,
मिट्टी के फल गढ़ना,रँगना,ज्यादा नम्बर लाना।
बात काटने पर अपने सहपाठी से लड़ जाना,
और अकेला लगने पर फिर रूठा यार मनाना,
डोर पतंग छुपाकर रखना,कंचो से डिब्बे भरना,
याद बहुत आता है बचपन, सजना और सँवरना।
बचपन के खो चुके खजाने हमें रुलाते हैं।
बोलो फिर क्यों अब तक इसको गाँव बुलाते हैं।
क्योंकि यहीं का अन्न है जिससे हम पल पाते हैं।

ब्रह्म स्वरुप मिश्र "ब्रह्म"
जनपद-शाहजहांपुर (उप्र)

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव की कवितायें

प्रगति के लिए कर रहे प्रकृति का नुकसान...

प्रगति के लिए हम कर रहें, प्रकृति का नुकसान,
हम चाहते हमारी बने, आधुनिकता की पहचान।
अरण्य कानन को मिटा के, कंक्रीट के जंगल बढ़े,
चकाचौंध तो है, पर घुट घुट कर जी रहा इंसान।।

बांध बना दे रहे रोक कर, सरिता का जल प्रवाह,
विकास की अंधी दौड़ में, मनुज की बढ़ गई चाह।
असमय बाढ़ भूकंप तूफान महामारी का प्रकोप,
अब मनुज नित अपने विनाश की बना रहा राह।।

प्रदूषण के चलते शहर व महानगर में रहना न आसान,
दिल्ली जैसे शहरों में जहरीली गैस से भरा आसमान।
हरे पेड़ों के कट जाने से, गाँव व जंगल हो जा रहे सूने,
नित नई बीमारियां पनप रही, हम न दे रहे हैं ध्यान।।

हरे पेड़ों के कट जाने से, हमें न मिल रही शुद्ध हवा,
पौष्टिकता के अभाव में, वृद्ध दिख रहे हैं आज जवां।
अवशिष्ट पदार्थ व कूड़ा करकट फेंक दे रहे नदियों में,
पर्यावरण विषाक्त, स्वस्थ रहने के लिए खा रहे दवा।।

अभी नहीं कुछ ज़्यादा बिगड़ा, हमें देना होगा ध्यान,
प्रकृति के संरक्षण से ही, हम सब बचा सकेंगे प्राण,
प्रगतिशीलता के लिए, चुकानी न पड़े भारी कीमत,
भौतिकता की चाह में, खत्म न हो हमारी पहचान।।

बेटियों से घर गुलाब जैसा महकता है...

बेटियों से हमारा घर गुलाब के खुशबू सा महकता है,
बेटियों से ही हमारा घर कितना सुंदर सा सजता है।
बेटियाँ निभाती हैं जननी भगिनी भार्या का किरदार,
बेटियों के न रहने से सुंदर घर सूना सा दिखता है।।

कितने सारे निभाती बेटियाँ जीवन में अहम किरदार,
फिर भी बेटों जैसा न हो पाती हैं, कभी भी हकदार।
उनकी स्वतंत्रता पर लगाते हैं, हम नित प्रति ही पहरा,
अक्सर बेटा-बेटी में करते, हम असमानता का व्यवहार।।

संकीर्ण मानसिकता के चलते, अभी भी न वो सम्मान,
जबकि हर क्षेत्र में बेटियों ने, बनाई है विशिष्ट पहचान।

पढ़े लिखे भी कराते हैं, बेटे की चाहत में भ्रूण परीक्षण,
बेटी के जन्मते बुझ जाते चेहरे, बेटे पर होता अभिमान।।

बेटियों को भी पंक्षियों के जैसे, भरने दो उन्मुक्त उड़ान,
प्रतिभा दिखाने का उन्हें भी मिले, खुला नीला आसमान।
क्यूँ! बेटियों के पैर में लगाते हैं, हम जंजीरों की जकड़न,
बेटियों ने दिखा दिया हर जगह, वो बेटों के ही हैं समान।।

दुष्टों के संहार के लिए रख लेती हैं, माँ अंबे का स्वरूप,
हम क्यों न समझते कि बेटी ही होती सृजन का है रूप।
बेटियों से ही इस सृष्टि, घर व परिवार का निर्माण होता,
बेटियाँ उष्ण में शीतल हवा व शीत में जैसे सुहानी धूप।।

भारतीयता पर गर्व...

जब होश संभाला बड़ा हुआ, तब से भारतीय होने पर गर्व।
भारत माँ को मैं शीश झुकाऊँ, देश में रहना लगता नित पर्व।।

यहीं पर पावस धाम अयोध्या, जहाँ प्रभु राम ने जन्म लिया।
महाभारत काल में अर्जुन को, कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया।।

भारत में शक्ति स्वरूपा नारी, सुत के लिए माँ सब कुछ सहती।
पवित्र पावस यह भारत देश, जहाँ हरपल प्रेम की गंगा बहती।।

ऐसे भारत भू पर मैंने जन्म लिया, जिसका मुझे बहुत अभिमान है।
इस पावन धरा के कण कण में, वीरों का शौर्य पराक्रम विद्यमान है।।

इसकी मिट्टी में मैं ही पला बढ़ा, अंतिम साँसों तक चाहूँ मैं रहना।
भारतवासी कहलाने पर गर्व, मेरे प्यारे इस देश का क्या कहना।।

गंगा, यमुना, सरस्वती व सरयू, बहती पावन नदियाँ मेरे देश में।
विभिन्न जाति धर्म के लोग यहाँ, भाईचारा से रहते कई वेश में।।

सुबास, भगत, आजाद व सुखदेव जैसे देशभक्ति का देते संदेश हैं।
विभिन्न सभ्यता व संस्कृति का, एकता की पहचान देते प्रदेश हैं।।

मुझे प्राणों सा प्यारा भारत देश, इसके कण कण से मुझे प्यार है।
बार बार हो मेरा जन्म यहाँ पर, इस देश पर मुझको ऐतबार है।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
नव किरण प्रकाशन
बस्ती {उत्तर प्रदेश}

परिवर्तन

धुंधला जीवन स्वच्छ भी होगा, परिवर्तन के क्षण आने दो।
वृक्ष बनेंगे एक दिन निश्चित, नव-अंकुर को खिल जाने दो।

संसाधन से रहित हो किन्तु, अपने मन की सोच न मारो।
नहीं सीख कोई गर्भ से आता, अपना जीवन स्वयं सुधारो।
हाथ पे हाथ ही रखने भर से, नहीं सफलता करे सुशोभित,
यदि सफलता की इच्छा है तो सोच कर्म की मन में धारो।

अक्षमता की सोच से ग्रसित, मन का पक्षी उड़ जाने दो।
धुंधला जीवन स्वच्छ भी होगा, परिवर्तन के क्षण आने दो.....

कथनी मात्र के संबोधन से, जीवन में कहीं विजय नहीं है।
बिना युद्ध के, बिन कर्म के, विजय का संभव उदय नहीं है।
यदि तुम्हे भी हुयी है आदत, घुट घुट कर यूँ मर जाने की,
अन्य को क्या साहस दोगे, जब अपना जीवन अभय नहीं है।

भय से पीड़ित जीवन से तो, अच्छा उसको मर जाने दो।
धुंधला जीवन स्वच्छ भी होगा, परिवर्तन के क्षण आने दो.....

चापलूस बनकर दुनिया में, सोच न अपनी दूषित करना।
ह्रदय दुखाकर मिली रकम से, न ही जीवन भूषित करना।
जग में छाप छोड़नी है तो, ''देव'' बदलनी होगी ये नीति,
अपने दुरित कर्म से देखो, तुम सच को प्रदूषित न करना।

शीश झुकाने से अच्छा है, शीश को अपने कट जाने दो।
धुंधला जीवन स्वच्छ भी होगा, परिवर्तन के क्षण आने दो।''

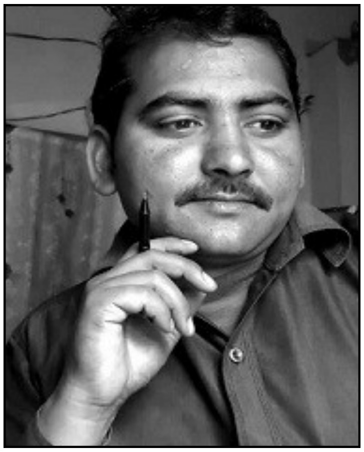

चेतन रामकिशन 'देव'
अमरोहा, उत्तर प्रदेश

पकौड़ा दिवस पर नेताजी का उद्बोधन

भले बोतल का हो पानी, मगौड़े तल नहीं सकते
अगर किस्मत हथौड़ा हो,पकौडे मिल नहीं सकते

भाइयों बहनों आज पकौड़ा दिवस पर अपने भाषण शुरुआत उपरोक्त कविता से करने का मेरा एक खास मकसद है . मेरा मानना है कि कुछ मनुवादी लोग आज पानी पी पी कर सरकार को उसकी 'पकौड़ा रोजगार योजना' के लिए कोस रहे हैं , उनका यह कृत्य न केवल अनैतिक अपितु संविधान की मूल भावना का भी विरोधी है .अपने कथन की गंभीरता और शुचिता को प्रमाणित करने के लिए मैं हर देशवासी को यह बताना अपना परम कर्तव्य मानता हूँ कि 'पकौड़ा 'स्टार्ट अप' 'के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान में जो भी लोग शामिल हैं वे क्यों और कैसे मन. ुवादी हैं .भाइयों ,बहनों यह तो आप जानते ही है कि मनुवाद में जो वर्णवादी व्यवस्था है ,वह कर्म को नीच मानती है .इसलिए 'पकौड़ा स्वरोजगार योजना का विरोध बाबासाहब के समतावादी समाज बनाने के सपने का अपमान है .कल्पना करिए भाइयों बहनों जब एक नीची जाति का हमारा भाई सार्वजनिक स्थल पर पकौड़ा तलेगा और उसे उठने वाली भीनी भीनी सुगंध से आकृष्ट होकर ऊंची जाति के लोग लाइन लगाकर पकौड़ा लेंगे तो ये जाति और गैरबराबरी की दीवारें टूटेंगी. टूटेंगी कि नहीं दूटूटेंगी ----.पर ये मनुवादी लोग नहीं चाहते कि गरीब का बेटा पकौड़ा तले .ये सब ऐसे ही नहीं हो रहा है, इन लोगों ने देख लिया है कि एक चाय बेचने वाला दस लाख का सूट पहन रहा है ,तो अगर गरीब का पढ़ा लिखा नौजवान .एम बी ए किया हुआ हमारा भाई जब पकौड़ा बेचेगा तो वह हवाई जहाज में उड़ेगा ,मर्सिडीज में घूमेगा .घ ूमेगा कि नहीं घूमेगा.-- और यह इन मनुवादी लोगों को जो तरह तरह के लतीफे बना रहे है वो वास्तव में गरीब का मर्सिडीज में घूमने और हवाई जहाज में उड़ने के सपने को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं .

इन्होने सत्तर साल तक आपको पकौड़ा नहीं बेचने दिया पर अब इस देश का नौजवान जाग गया है .ये मनुवाद ये गैर बराबरी का षड्यंत्र अब और नहीं चलेगा .हम तीन तलाक की तरह ही पकौड़ा के बारे में भी जल्दी ही बिल लायेंगे .हो सकता है संसद के उच्च्य सदन में इस पर रोड़े अटकाए जाये, पर मुझे विश्वास है कि इस देश का आम नागरिक चाहता है कि वह पकौड़ा तले .इसलिए सामाजिक न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को हम संसद में कानून लाकर अभिव्यक्त करेंगे और तब पिछले सत्तर साल से पकौड़े खाने वाला यह वर्ग जो पकौड़े तलना अपनी तौहीन समझता है एक्सपोज हो जायेगा .भारत की करोड़ों-करोड़ जनता जानती है कि इन मनुवादी लोगों को कैसे सबक सिखाना है .

आपको याद होगा भाइयों दृबहनों हमने जब 'पेमेंट एप' लांच किया था .तब इसे पूँजीवाद के विस्तार से जोड़ा गया पर आज मुझे आपको बताते हुए खुशी हो रही है कि अब तक छह सौ करोड़ भारतवासी इसे डाउनलोड कर चुके हैं .हमने पकौड़ा को भी इस एप से जोड़ा है और आप देखेंगे कि आने वाले बरसों में हम संयुक्त राष्ट्र के सद्भभावना मिशन के तहत 'पकौड़ा बनाओ मिशन' को पूरे विश्व में चलाएंगे .हम संयुक्त राष्ट्र से आग्रह करेंगे कि वह 'अन्तराष्ट्रीय पकौड़ा दिवस' को अपने कलेंडर में शामिल करे .भारत ही नहीं पूरे विश्व की बेरोजगारी के उन्मूलन में हमारा यह छोटा सा कदम नील आर्मस्ट्रांग के चन्द्रमा पर रखे गये पहले कदम जैसा बड़ा सिद्ध होगा .मैं अपने मंत्रालय के साथियों से भी निवेदन किया है कि वे हमारे देश की गली दृकूचों से लेकर चांदनी चौक की नई सडक और राजीव चौक के पालिका बाजार तक बिक रहे पकौड़ों के पटेंट को लेकर भी सक्रिय और सजग हो जाये नहीं तो हमें इस मोर्चे पर भी अन्तर्राष्ट्रीय फोरम पर लड़ना पड सकता है .

हल्दी तो याद होगी आपको, कितनी लड़ाई लडनी पड़ी है हमे .हम अगर अभी नहीं चेते तो हमारा अपना पकौड़ा भी हमारे देखते देखते पराया हो जायेगा . पूरा देश ये जानना चाहता है भाईयों बहनों कि पिछले सत्तर सालों में पकौड़े के स्वाद को बढाने के लिए , उसकी रेसेपी को पेटेंट कराने के लिए क्या किया गया ? पकौड़े जैसे पूर्णतया स्वदेशी .परम्परा से प्राप्त व्यंजन की निर्माण कला को सजोने के लिए पिछली सरकारों ने क्या किया ?इस ज्ञान को सहेजना और संवारना चाहिये था कि नहीं चाहिए था भाइयों बहनों .पर कुछ नहीं किया गया.यह देश की पाककला को विकसित न होने देने और आत्मनिर्भर भारत न बनने देने का षड्यंत्र था जो पिछली सरकारों द्व ारा चलाया जा रहा था .मैं पूछना चाहता हूँ कि आजादी के बाद कितने ऐसे खाद्य मंत्री या लघु उद्योग मंत्री हुए जिन्होंने अपने जीवन में कभी भी पकौड़े टेल थे .पकौड़े तलना तो दूर पकौड़ों के लिए कभी प्याज या गोभी तक को काटा था . हमारे मुहल्ले के रामभरोसे अगर देश के खाद्य मंत्री होते तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि सदियों से उपेक्षित पकौड़ा आज न केवल स्वादिष्ट व्यंजनों की प्रथम कतार में होता अपितु इस देश सेबेरोजगारी का नामोनिशान भी कब का मिट गया होता .और इस सबसे बढ़कर जो विदेशी मुद्रा पकौड़े के निर्यात से प्राप्त होती उससे हम मिसाइलो का निर्माण कर कश्मीर समस्या को कब का समाप्त कर चुके होते .

बहुत अफसोस के साथ कहना पड रहा है कि हमारे विपक्ष के माननीय नेता जो मनुवादी सोच से इस कदर ग्रस्त हैं कि जनेऊ तक कुरते के ऊपर पहनते हैं वे इतालियन पिज्ज़ा और पास्ता खाते हैं .उनकी धमनियों और शिराओं में ,मांस मज्जा में पिज्ज़ा और पास्ता है .भारत की धरती पर मिलने वाला पकौड़ा नहीं है .मुझे ज्ञात हुआ है और मैं आज बहुत दु:ख के साथ आपसे यह बात शेयर कर रहा हूँ कि हमारे देश के बहुत प्रतिष्ठित नेता के जन्मदिन की पार्टी

के मेन्यु से 'पकौड़े 'हटा दिए गये पकौड़ों को अछूत समझा जा रहा है भाइयों बहनों .यह पकौड़ों का नहीं यह सवा सौ करोड़ हिन्दुस्तानियों का अपमान है .जो लोग यह समझते हैं कि जनता पकौड़े की आड़ में चलाये जा रहे देश विरोधी अभियान को सफल बना लेंगे वे किसी गलतफहमी में न रहे.हमारी सरकार को जो लोग सूट बूट की सरकार कहते नहीं थकते हैं उन्हें हम दिखा देंगे कि जल्दी ही इस देश का हर युवा सूट बूट में पकौड़े तलते दिखेगा .हम देश को आश्वस्त करना चाहते हैं कि जरूरत पड़ी तो हम एक देशव्यापी 'पकौड़ा बचाओं अभियान ' का शुभारम्भ करेंगे .पिछले दिनों चुनावो में हुयी हमारी भारी विजय देश की जनता द्वारा 'पकौड़ा स्टार्ट अप 'के पक्ष में दिया गया रिफरेंडम है और इस रिफरेंडम द्वारा आपने सिद्ध कर दिया है कि भारत की आने पीढ़ियों को अंततः पकौड़ा उद्योग के द्वारा ही अपने वर्तमान और भविष्य दोनों को संवारना है .आइये हम सब संकल्प ले कि हम आई आई टी ,और एम्स से भी पहले पकौड़ा बनाने और तलने की कला सीखने और सिखाने की ओर अग्रसर हो .इन्ही शब्दों के साथ आप बेहतरीन पकौड़ों को बनाने और बेचने वाले बने मैं आपसे इस वादे के साथ विदा लेता हूँ कि आगामी गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हम पकौड़ा निर्माण के क्षेत्र में असाधारण उप. लब्धियों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों 'पकौड़ा श्री 'पकौड़ा भूषण ,पकौड़ा विभूषण और पकौड़ा महारत्न प्रदान करेंगे .इसलिए मैं पूरे देश का आवाहन करता हूँ कि हम सब पकौड़ा निर्माण मे न सिर्फ सिरमौर बने अपितु निकट भविष्य में 'पकौड़ा विश्व गुरु 'कहलाये .तब तक के लिए -

भारत माता की ----भारत माता की
----जोर से बोलिए भारत माता की ----.

अरविन्द पथिक

क्या क्या भूलूं याद रखूं

क्या क्या भूलूं याद रखूं क्या, क्या क्या मुझपे बीत चुका,
दुखों से कष्टों से मन का रोम रोम है रीत चुका !
पल पल बढ़ता घना अंधेरा,मुझको ऐसे डराता है,
जैसे जताता हो मुझको मैं हार गया वो जीत चुका !

बड़े ही मन से और जतन से इक अंकुर लगाया था,
खून पसीना सींच सींच कर इसको वृक्ष बनाया था ,
उम्र बढ़ी अब जब माली की, वृक्ष ने उसको भूला दिया,
'रिश्तों के बदलते सुर' ने माली को जार जार रूलाया था !!

लेकिन सुन ले रात घनेरी जितनी भी तू गहरी है,
आत्मशक्ति से भरा हुआ मन जुगनू सा मेरा प्रहरी है !
जितनी भी तू कोशिश कर ले मुझको हरा ना पाएगा,
उपेक्षाओं के तूफां में मेरी जिद्दत साहिल सी ठहरी है !

संयम से समाधि तक !!

अभी अभी तो तुम्हारी कोंपलें फूटी हैं,
अभी तो एक लंबा रास्ता तय करना हैं तुम्हें,
बहुत से अनुभव मन के गहरे धरातल पर
इकट्ठे करने हैं तुम्हें...
याद रखना ! तुम्हारे स्रोत पर, तटों,
त्रिवेणियों पर बहुत से लोग मिलेंगे,
किंतु कुछ क्षण मात्र के लिए,
इन्हें देख अहंकार में डूब मत जाना ,
खुद को सागर समझ कहीं रूक मत जाना !!
क्यूंकि जब निर्जन वन होगा तुम्हें अकेले ही चलना होगा,
पर्बतों से नीचे तुम्हें स्वयं ही उतरना होगा !
कि, सरिता को अपनी यात्रा स्वयं ही करनी होती है !!
बस ऐसे ही, ''संयम से समाधि तक'' साधक को स्वयं ही चलना होता है,
अपने भावों की सरिता में स्वयं ही संभलना होता है ।।

वीरेन्द्र जैन
नागपुर

सत्तर पार की औरतें

सत्तर पार की औरतें,बच्ची सी बन जाती हैं।
जो करती थीं, पूरे घर-बाजार के काम दिन रात,
असत्तर पार की औरतें-बमुश्किल से ,
अपने ही कुछ काम कर पाती हैं।
जूझती रहती हैं, घुटनों के, कमर के दर्द से,
कभी दांतों की पीर से खाना ना खा सकने से।
कभी पूजा की किताबों से अस्पष्ट होते अक्षरों से,
किसी को रतौंधी,किसी को मोतियाबिंद बीमारी से।

हाथ काँपते हैं, आंखों में दवा डालते हुए भी,
काँपते हाथों से खाना खाते गिर जाता है,नीचे।
खुद को अपराधी महसूस करने लगती हैं बच्चों के सामने,
जब क्रॉकरी टूट जाती है हाथ से फिसल के।
कभी गैस खुली छूट जाती है चाय बनाने के बाद,
कभी नल,थोड़ा खुला रह जाता है, नहाने के बाद।

रोजाना एक नई स्वास्थ्य समस्या बताती रहती हैं,
कभी कब्ज तो कभी दस्त,कभी नींद नहीं आने की।
पता नहीं काम न कर पाने की सफाई देती हैं या,
बच्चों से बिना कारण,बात करने का बहाना खोजती हैं।

अतीत का एक एक पल,रिश्ता,किस्सा याद रहता
अभी कल परसों की बातें,दवा लेना भूल जाती हैं।
चेहरे पहचान कर, दिमाग पर जोर देकर नाम याद करती,
खुद पर अक्सर ये झल्ला जाती हैं।
किसी करवट, किसी पल कहीं भी चौन नहीं पाती है
कभी घर के अंदर, कभी बाहर चक्कर लगाती हैं।
कोई बच्चा घर समय से ना आये तो बेचौन हो जाती हैं।

भूख इनसे जरा भी बर्दाश्त नहीं होती,ज्यादा खा नहीं पातीं।
परहेज के नाम पर गुस्सा हो, खाना नहीं खातीं।
“नमक नहीं,मिर्च-खटाई नहीं,मीठा भी नहीं?
नहीं खाना मुझे कुछ,ऐसे मुझे जीना भी नहीं
नाती-पोतों से चोरी से मनपसंद चीजें ले,खाती हैं,
डॉक्टर जब बी पी देख गुस्साए तो,
“कुछ नहीं खाया” धीमे से बतलाती हैं।

चाट-पकौड़ी, हलवा-पूरी देख बहुत ललचाती हैं,
लौकी-तुरई,मूंग की दाल देख,थाली परे हटाती हैं।
सेवा करवाना कठिन है यह समझने लगती हैं,
कोई सुनता भी है या नहीं, यह परखने लगती हैं।
बेटियों के घर आने पर ये चहकने लगती हैं,
पूजा की धूप सी यह घर में महकने लगती हैं।

पूर्णिमा शर्मा
सांताक्रुज वेस्ट मुम्बई

बड़े बेटों सी बेटियाँ

कुछ बेटियाँ घर के
बडे बेटे जैसी हो जाती हैं
नहीं होती ये बड़ी
फिर भी बड़ी हो जाती हैं

जिम्मेदारियों का दुपट्टा ओढ़े
ये देहरी लांघ जाती हैं
रोजगार करने किसी बेटे सा
दूर देस चली आती हैं

छुटपन के लड़कपन को भूल
एक प्रौढ़ा सी बन जाती हैं
सिर्फ और सिर्फ परिवार की
उन्नति के सपने सजाती हैं

कभी बहन की शादी में
दहेज खरीद कर लाती हैं
तो कभी किसी भाई की
पढ़ाई की फीस जुटाती हैं

बीमार अम्माँ-पापा को भी
ये ही अस्पताल ले जाती हैं
बहन की जचकी का खर्च भी
यही वाली मौसी उठाती हैं

भाई-बहनों के बच्चे देख
यह खुद खुश हो लेती हैं
इन्ही पर मातृत्व लुटाकर
खुद बाँझपन ओढ़ लेती हैं

हमसफर किसी का भी
बनने से ये झिझकती हैं
सच्चे प्रणय निवेदन को भी
बुरी तरह झिड़कती हैं

प्रेम, मोह, माया इन सबको ये
कुचलती चली जाती हैं
पति, परिवार, आलिंगन से दूर
बचकर निकल जाती है

कुछ बेटियाँ घर के
बडे बेटे जैसी हो जाती हैं
नहीं होती ये बड़ी
फिर भी बड़ी हो जाती हैं

तृप्ति मिश्रा

रोचक और आनंदवर्धन पहेलियों की पुस्तक: 51 बाल पहेलियाँ

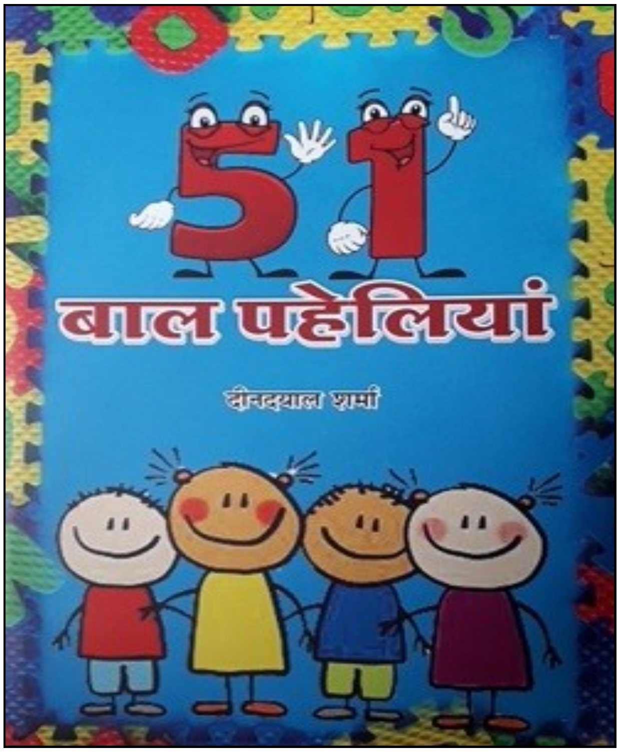

पहेली बुझना हमारी संस्कृति की वाचिक और प्राचीन परंपरा रही है. वाचिक रूप से दादी और नानी से यह परंपरा बच्चों में पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती आई हैं. कई बार दादी अपना ज्ञान व्यक्त करने के लिए अपने मन से कई पहेलियाँ बना कर सुना दिया करती थी . इस से उन की मानसिक क्षमता में वृद्धि होती थी.

वे अपने ज्ञान से बच्चन का मनोरंजन किया करती थी. जूस में किस्से-कहानियों के साथसाथ पहेलियों की मुख्य भूमिका होती थी. वे इन्हीं के द्वारा बच्चों के स्तर का पता लगा लिया करती थी.पहेलियाँ बच्चों का ज्ञान जांचने का साधन थी. जिन से दादी उन का मनोरंजन करती थी. इसी के साथ बच्चों को खेलखेल में आनंददायक पहेलियां पूछा लिया करती थी.

ये आज भी हमारी संस्कृति में रची बसी है. शुभकार्य, सामाजिक प्रसंग, लग्न या अन्य कार्यक्रम में पहेलियां पूछना शुभ माना जाता है . जमाई के ससुराल आने, भोजन करने के पूर्व, सोते जाते समय अनुमति देने के तौर पर पहेलियाँ पूछना परंपरा का हिस्सा रही है. जब इन पहेलियों का जवाब दे दिया जाता हैं तभी जंवाई बाबू को इन कार्य को करने की अनुमति दी जाती है.

समय के साथ ही वाचिक परंपरा समाप्त सी हो गई है . मा.ेबाइल और टीवी ने इस परंपरा पर ग्रहण लगा दिया है .अब तो कोई पहेलियों पर बात करना तक पसंद नहीं करता है.

पुराने समय में कहानी कविता और लोरी के साथ पहेलियां मनोरंजन का मुख्य साधन हुआ करती थी. पहेलियां बच्चों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें तर्कशील बना कर बौद्धिक क्षमता पैदा करती थी .उन में चिंतनमनन और तर्कशीलता प्रवृत्ति पैदा करती थी.

इसी वाचिक विधा को संजो कर लिखित रूप में इस विधा को संपन्न बनाने और पहेलियों को जीवित रखने में दीनदयाल शर्मा जी की 51 बहूल पहेलियों ने तपते रेगिस्तान में वर्षा की फुहार की तरह काम किया हैं. जिस आनंददयाक वाचिक परम्परा से हम विमुख हो गए थे उस परम्परा की स्वरचित 51 पहेलियों को इस पुस्तक में सरल और रोचक शब्दों में व्यक्त किया है.

तमिलनाडु ,दक्षिण भारत के
वैज्ञानिक ने किया कमाल .
अग्नि और पृथ्वी मिसाइल
जिन की देखो ठोस मिसाल..

मां स्वरूप रानी थी जिन की
पिता थे मोतीलाल .
फूल गुलाब का जिन्हें प्रिय था
प्यारे बाल गोपाल..

येन पहेलियां सीधी और सरल है. इन पहलियों में कुछ संकेत दिए हैं. जिन से इन का उत्तर जाना जा सकता है .बड़ों के लिए सहज है. मगर बच्चों के स्तर के अनुकूल होने से रोचक आनंददायक है.पहेलियों की भाषा सरल है . ये गेय है . इसलिए याद करने में सरस व आनंददायक है.

रंग रंगीला रूप है जिस का
फूलों पर मंडराती है .
पंख हिलाती प्यार बांटती
सब का मन बहलाती है..

भाव प्रधान पहेलियां आनंददायक है . पहेलियों के ऊपर मनोरंजक चित्र बने हुए हैं . पहेलियाँ के ऊपर मनमोहक चित्र बने हुए हैं . जो पहेलियां के उत्तर भी है. पुस्तक के अंत में चित्र सहित उत्तर भी दिए गए हैं.

कागज अच्छा है .मुद्रण व साजसज्जा आकर्षक है . मुख्य पृष्ठ रंगीन और लुभावना है . त्रुटि रहित संपादन ने पुस्तक की उपायदेता में वृद्धि की है.

कुल मिलाकर या पुस्तक बच्चों, बड़ों और विद्यालय के शिक्षकों की काम की पुस्तक है . 64 पृष्ट की पुस्तक का मूल्य 100 रुपए इस की उपयोगिता को देखते हुए वाजिब है. बच्चे और बड़ों को ये पुस्तक मंगा कर आवश्यक पढ़नी चाहिए.

51 बाल पहेलियाँ
दीनदयाल शर्मा
एकता प्रकाशन, चुरू (राजस्थान)– 331001
मूल्य ₹ 100

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
पोस्ट ऑफिस के पास रतनगढ़
नीमच (मध्यप्रदेश)-458226

मुफलिसी से जंग

कई दिनों बाद आज कलुआ अपने घर से निकला । ठेले को जंजीरों से मुक्त किया और उसको नहलाया धुलाया , बढ़िया सुंदर आवरण से सजाया । उस पर बड़े छोटे ताजे तरबूज लादे जो वह खेत से तोड़ कर लाया था और चल दिया ।

''मीठा रसभरा है, कोरोना से न डरा है'' नया स्लोगन सुनकर नैंसी ने खिड़की खोल कर बाहर झाँका बढ़िया ताजे तरबूज देखकर उसका मन ललचा गया । उसने आवाज दी,'ऐ ! लड़के ! सुनो कहाँ से लाये हो ! क्या भाव दोगे ?' तमाम प्रश्न उत्तर के बाद उसने एक तरबूज कटवाया । लेकिन उसे लिया नही । कलुआ काफी गिड़गिड़ाया , 'आपने तरबूज कटवा दिया और लिया भी नही । हमारा नुकसान जो जाएगा मैडम जी !' नैंसी भी क्या करती अंदर से डरी हुई थी 'कहीं कोरोना इसको भी हुआ तो !'

प्रत्यक्ष में बोली , 'चल भाग यहाँ से !' कलुवा भी घर की बेजारी से तंग होकर ठेला लेकर निकला था चार पैसे मिलेंगे तो राशन का जुगाड़ करे ।

भरी दुपहरी ,पानी का कोई ठिकाना नही, कोई खुली दुकान नही , क्या करे ?? भूख प्यास से बेहाल होकर उसने अपने उस कटे हुए तरबूज को खाने के लिए उठाया और मुँह को लगाया ही था कि पीछे से पुलिस वाले ने जोर का लठ्ठ उसकी पीठ पर जमाया, ''क्यों रे! कटे फल बेचता घूम रहा है ।''

तरबूज उसके हाथ से छूट कर दूर जा गिरा । सामने दुकान की शेड से एक बदहाल सा साया निकला और वह छाया धीरे धीरे आगे बढकर और लपक कर सड़क पर पड़े उस तरबूज को उठाकर अपनी गुदड़ी में छुपा कर भाग गई । बड़े चाव से उसने उस तरबूज को खाया और पेट पर हाथ फेरा । एक लंबी डकार ली । और वहीं लुढ़क कर सो गया । इधर कलुवा अपनी पीठ पर पड़े डंडे की जलन अभी तक महसूस कर रहा था । कुछ सोच कर उसने एक और तरबूज उसी गुदड़ी वाले के पास रख दिया और ठेला लेकर आगे बढ़ गया । उसकी आँखों के सामने उसका अपना भूखा परिवार तैर रहा था, दिमाग में फलों को बेचने की जुगत !!

अन्नपूर्णा बाजपेयी
कानपुर

साथी

पति की असामयिक मृत्यु के कारण रामकली के आर्थिक हालात बहुत खराब हो गए थे। जो मजदूरी करके कमा खा लेती थी वो काम धंधा भी लॉकडाउन के कारण कभी कभार ही मिलता था जिससे कभी सूखी रोटी और कभी रुखे चावलों का जुगाड़ हो जाता था। इतने पर भी उसका भगवान पर विश्वास रत्ती भर भी कम नही हुआ था और वह सबकी मदद को हमेशा तैयार रहती थी।

अभी कल की ही बात है काम से लौटते वक्त सड़क पर एक बेहोश आदमी पड़ा मिल गयाद्य पहले तो उसने उसे होश में लाने की कोशिश की परन्तु जब उसे होश नही आया तो किसी तरह उसे घर ले आई, फिर झटपट जाकर डॉक्टर को बुला लाई। डॉक्टर ने इंजेक्शन लगाया और दवाई देते हुए कहा बहुत कमजोरी है ख्याल रखना । रामकली ने पड़ोसियों से उधार लेकर डॉक्टर की फीस और दवाई का इन्तजाम किया। थोड़ी देर बाद ही उस व्यक्ति को होश आ गया, तब रामकली ने उसे सारी बात बतायी। जिसे सुनकर उस व्यक्ति ने बताया कि वह एक व्यापारी है और कहने को वह दो पुत्रों का पिता भी है पर दोनों ने ही उसे अकेला छोड़ दिया है और विदेश में स्थापित हो गए है। पत्नी का देहान्त हो चुका है और वह अपने बड़े घर में अकेला रहता है। यह सुनते ही राम. कली ने भी अपनी दुख भरी कथा कह सुनायी कि कैसे उसके एकमात्र पुत्र ने उसके पति के देहान्त के बाद उसे अपने ही घर से धक्के देकर बाहर निकाल दिया और अब वह कैसे यहाँ रहकर अपना गुजारा कर रही है। सब सुनने के बाद उस व्यक्ति ने रामकली से पूछा, "क्या वह उसके साथ उसके घर में रहना पसंद करेगी?'' रामकली ने चुपचाप हाँ में सिर हिला दिया। दोनों को अपना साथी मिल चुका था।

अरुणा कुमारी राजपूत 'राज'
शिक्षिका - हापुड़ (उ प्र)

शिवोहम

अपने निज स्वरूप को लेकर प्रत्येक जीव के मन में जिज्ञासा का होना स्वाभाविक है। मृत तथा जीवित शरीर के सभी तत्वों में समानता होने के बावजूद वह कौन सा ऐसा अंश है जिस कारण जीवित शरीर में चेतना व्याप्त है- उस चेतन अंश का स्वरूप क्या है, वह कहां से उत्पन्न होता है तथा जीवन समाप्ति के बाद उस अंश का क्या होता है? ऐसे ही अनेक प्रश्न लगभग हर जीव के मन में स्वाभाविक रूप से होते हैं। विभिन्न विद्वान अलग-अलग मतों द्वारा इसकी व्याख्या करते हैं।

कुछ अपवादों को छोड़कर लगभग सभी ग्रंथ यही बताते हैं कि जीव का स्वरूप भी ब्रह्म के समान ही अनंत है। ब्रह्म एक महासागर के समान है जबकि जीव उसी महासागर के जल की एक बूंद के समान है। यही बूंद जिस पदार्थ में उपस्थित है उसमें चेतना है। सृष्टि में दो प्रमुख तत्व माने गए हैं - जड़ एवं चेतन। जड़ पदार्थ में चेतना का संचार होते ही जीवन प्रारंभ हो जाता है। ब्रह्म को कोई साकार तथा कोई निराकार स्वरूप में मानता है। स्वरुप चाहे जो भी हो किन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि जीव उसी का अंश हैं अतः जो अमरता परमतत्व में है वही प्रत्येक जीव के चेतन अंश को प्राप्त है। फिर समाज में इतनी व्याधियां क्यों है, जीवन में इतना कष्ट क्यों है तथा जीवन की गति क्या है?

शास्त्रों ने उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में बहुत कुछ लिखा है तथा सुंदर व्याख्याओं के माध्यम से अनेक सिद्धांत दिए हैं जिन्हें भक्तिपूर्वक ग्रहण करने से व्यक्ति सभी प्रश्नों के उत्तर पा जाता है। सामाजिक रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों के चलते हम ईश्वर से प्रेम करने की बजाय भय करने लगते हैं तथा कर्मकांडों के माध्यम से उसे प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। धन, चढ़ावा, सोने-चांदी, चादर, निरीह पशुओं की बलि इत्यादि अनेक भोगपरक वस्तुओं का दान उस परमचेतन स्वरूप को देने का प्रयास करते हैं जो सभी विषयों एवं वस्तुओं के मोह से पूर्णतया मुक्त है। इतना ही नहीं इसके भरोसे हम स्वयं की उत्तम गति, जो उसी महासागर से मिलने का नाम है, का भ्रम पालने लगते हैं तथा इस औपचारिकता के बाद उन कर्मों में संलग्न हो जाते हैं जो हमें उससे दूर करते हैं।

जीव और ब्रह्म की प्रत्येक व्याख्या सत्य है यदि उसके भाव को ठीक तरह समझा जाए। अनेक विद्वानों ने जीवन को रूपकों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है। डह सरोजिनी कुलश्रेष्ठ जी ने अपनी एक कविता में लिखा है- ''मैं बनी हूं दीप बाती'' - कितना सुंदर चिंतन है! यदि इस रूपक पर दृष्टि डालें तो महसूस होगा कि परमतत्व एक दिए के समान है तथा हम उसकी बत्ती की तरह है जिसमें एक गांठ पड़ गई है। गांठ के एक ओर हम हैं तथा दूसरी ओर जो हिस्सा घी में डूबा हुआ है वह परमात्मा का अंश है। गांठ घी में आधा डूबा है तथा आधा बाहर है। इस प्रकार बत्ती तो एक ही है किंतु गांठ उसे दो भागों में दर्शाने का प्रयास करती है। गांठ ईश्वर की माया के समान है जो अनेक जड़ तत्वों को भी समेटे हुए हैं। ईश्वर ही माया रूपी भ्रम को उत्पन्न करते हैं जिस कारण जीव स्वयं को ईश्वर से अलग समझते हुए लघुरूप को ही अपना संपूर्ण स्वरूप समझने की भूल करने लगता है। स्वयं में ईश्वर तत्व की अनुभूति के लिए इस गांठ को खोलना आवश्यक है। हमारा निज स्वरूप निरंतर ज्ञान के प्रकाश से प्रदीप्त रहता है जिसका रूपक बत्ती की ज्योति है। यही ज्योति बार-बार हमें अपनी लघुता का अनुभव कराती है तथा बत्ती के निरन्तर क्षय द्वारा यह संदेश देती रहती है कि जीवन एक न एक दिन समाप्त हो जायेगा। सच्ची प्रेममय भक्ति ही माया से संघर्ष करके इस गाँठ को खोल सकती है जिससे हमारे अनंत स्वरूप से साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त होना सम्भव है। बत्ती के छोर पर उपस्थित ज्ञानरूपी ज्योति बार-बार इस उद्देश्य की ओर ध्यान आकृष्ट कराने का प्रयास भी करती है किंतु अग्नि में ताप है अतः ज्ञान भी कई बार जीवन में अहंकार तत्व को उत्पन्न करता है जिसके वशीभूत होकर हम स्वयं के वास्तविक स्वरुप को नहीं समझ पाते और आत्मप्रशंसा में ही प्रसन्न रहने लगते हैं। एक समय ऐसा भी आता है जब जीवन पूरा करके बत्ती बुझ जाती है और गांठ वैसी की वैसी पड़ी रह जाती है। इससे भी बुरी स्थिति तब है - जब मन हवा के झोंकों की तरह आई इच्छाओं में ही लिप्त हो कर रह जाता है। धन, पुत्र, स्वर्ण, रजत, सुख-सुविधाओं एवं विलासिता की कामनाये हवा के झोंकों की तरह है जो जैसे ही जीवन में प्रवेश करती हैं वैसे ही ज्ञानरुपी बत्ती का प्रकाश हिलने लगता है तथा अस्थिर हो जाता है। जब कामना पूरी हो जाती है अर्थात झोंका गुजर जाता है तभी प्रकाश स्थिर हो पाता है। जब कामनाओं का झोंका बहुत तेज या आंधी की तरह हो तो बत्ती का प्रकाश उस का मुकाबला नहीं कर पाता और बुझ जाता है। गांठ वैसी की वैसी पड़ी रह जाती है, ज्ञानरूपी प्रकाश भी लुप्त हो जाता है तथा निज स्वरूप को जानने की सारी संभावनाएं समाप्त हो जाती हैं। विषयासक्त एवं कामनाओं से भरे जीवन की यही गति है। हमारा प्रारब्ध हमें इस अनंत महासागर में लेकर आया है अतः अपने अंदर प्रदीप्त प्रकाश के सहयोग से भक्तिरूपी संसाधनों द्वारा इस गांठ को खोलने का प्रयास करें तभी जीवन में उत्तम गति का मार्ग प्रशस्त होगा।

- दीपक श्रीवास्तव

श्रीकृष्ण तिवारी जी की रचनाधर्मिता—एक अध्ययन

श्रीकृष्ण तिवारी साहित्य के विभिन्न रूपों और विधाओं के ऐसे विलक्षण रचनाकार हैं जिनकी रचनाएं उनके बाद भी उनकी छाप को उनके समय के रचनाकारों, समालोचकों एवं उनकी परंपरा में रचनाकर्म में लगने वाले साहित्यकारों को निरंतर प्रोत्साहित करती रही है। वास्तव में श्रीकृष्ण तिवारी नाम नहीं है वरन् रचनाकर्म की अलग-अलग स्थानों से सतत सञ्चालन एवं आलेखन को अलग रूप देने की ओर प्रवृत्त हस्ताक्षर रहे हैं। श्रीकृष्ण तिवारी की लेखनी नए बिम्बों के साथ प्रतीकों की एक अद्‌भुत बानगी प्रस्तुत करती है। अपने समय की कृतियों में श्रीकृष्ण तिवारी की रचनाओं को देखने पर हमें नएपन का अनुभव होता है। इसी को जब हम साहित्य से जोड़ते हैं तो कहते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है । समय का इसमें जुड़ा होना आवश्यक है ।

श्रीकृष्ण तिवारी परिदृश्य के परिवर्तित होते स्वरूप में अपनी भूमिका को रेखांकित करते हैं । निश्चित तौर पर हमारे प्रयास हमें कई खट्टे मीठे अनुभव के साथ साथ में प्रतिमानो की ओर लेकर जाते हैं। कोई भी व्यक्ति अपनी प्रतिबद्धता से जुड़ा होता है यह जुड़ा जितना नजदीकी होता है उतना ही सफल माना जाता है। अपने लोक से जोड़ पाना ही एक रचनाकार की सबसे बड़ी सफलता होती है। दृष्टिकोण के अनुसार समाज में अपनी स्पष्ट छवि को श्रीकृष्ण तिवारी ने अपने लोगों को आमजन के भाव भंगिमा से जोड़ करके उसे एक नए आयाम प्रदान की। यह प्रयास रचनाकार की विशिष्ट क्षमता को रेखांकित करते हुए प्रस्तुतकर्ता के आधार प्राप्त कर अपने समय को परिभाषित करने वाले लोकगीत लिखे गए हैं। और इस तरह से वह आम जनमानस को अपनी रचनाओं में स्थान दे सकें। इस तरह उन्होंने लोक कवि अथवा जन कवि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

श्रीकृष्ण तिवारी के नवगीत बहुल गीत शिल्प संबंधी विशेषज्ञता आपको एक अलग मुकाम देती है आपके कथन शिल्प में आकर के विशेष भाव भूमि का सृजन करते हैं, इस तरह से अपने समाज का उसकी प्रवृत्तियों का एक साथ एक सूत्र में पिरो कर प्रस्तुति विलक्षणता का माध्यम मानी जा सकती है ।आपके रचनाओ मे आपकी लालित्य और समर्पण एक सूत्र में बांधकर के हमारे सामने लाती है ।आपकी रचनाए समाज के साथ-साथ विचारों की श्रृंखला को आधार देने का भी काम करती है।

8 अगस्त 1939 को वाराणसी में जन्म लेने वाले श्रीकृष्ण तिवारी अपने समय की प्रवृत्तियों से इतर जाकर के गीत को बदलते परिवेश में नए कलेवर देने वाले उत्तर छायावाद और प्रगतिशील कविता के दौर में गीत लेखन जैसे युगीन प्रवृत्तियों के कालखंड में जन्म लिया। वाराणसी जो कला एवं साधना की नगरी मानी जाती है मैं जन्म लेने वाले श्री कृष्ण तिवारी ने आजीवन अपनी पहचान को उसी के अनुरूप अपने रचनाकर्म में बनाए रखा।

वास्तव में श्रीकृष्ण तिवारी विशुद्ध रचनाकार रहे उन्होंने जो भी लिखा संयमित और चयनित लिखा । उनका लेखन उनके चयन के मापदंड को परिभाषित करता है। श्रीकृष्ण तिवारी के नवगीत उनकी विलक्षण प्रतिभा को फलित करते हैं यथा

क्या हुए वे रेत पर उभरे
नदी के पांव
जिन्हें लेकर लहर आई थी
हमारे गाँव

आइना वह कहाँ जिसमें
हम संवारे रूप
रोशनी के लिए झेलें
अब कहाँ तक धूप
क्या हुई वह
मोरपंखी बादलों की छाँव

फूल पर नाखून के क्यों
उभर आये दाग
बस्तियों में एक जंगल
बो गया क्यों आग
वक्त लेकर जिन्हें आया था
हमारे गाँव

आपके इस नवगीत में प्रस्तुत किए गए बिम्ब अनेकार्थी है, पाठक के लिए एक स्वाभाविक यात्रा का प्रारूप प्रस्तुत करते हैं । जिसके माध्यम से पाठक बहुत सारी भाव भंगिमाओं, रुचियों एवं अभिवृत्तिओं से स्वयं को एकाकार कर पाते है । नदी के पांव को रेत पर उभरने की बातें करके कवि ने यहां पर अपनी जमीनी धारणा को मजबूत किया है ।किसी भी रूप में घटनाक्रम हो वह हमारे द्वारा अपनाए जाने योग्य होता है।नदी का वह पांव जो रेत पर आता है वह विध्वंस को भी लाता है और सृजन को भी लाता है। जब बाढ़ की विभीषिका का रूप बन कर आता है तो बहुत कुछ नष्ट कर के चला जाता है, लेकिन यह इसका एक रूप है। वही नदी का भाव जब रेत पर आता है तो अलग अलग जगहों से उपजाऊ मिट्टी को लेकर आता है जिससे उर्वरापन पाके लहलहाती हुई फसल जन-जन को पोषित करने का एक माध्यम बनती है।

इसी तरह इस नवगीत में आपने बस्तियों में पनपने वाले जंगल की बात की। वास्तव में मनुष्य के पशुता की ओर बढ़ते आचरण की तरफ कवि का संकेत है। कभी नहीं जंगल में व्याप्त विभिन्न तरह की खुशियों को समाज में चित्रित होते दिखाने का प्रयत्न किया और अपने प्रयत्न में सफल होता हुआ दिख रहा है वास्तव में कवि ने

अपने मंतव्य को शब्दों के माध्यम से बहुत अच्छे ढंग से प्रकट किया है। कविता लेखन उसके विचारों को उसके भाव को बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत करता है एक और नवगीत देखें-

भीलों ने बाँट लिए वन
राजा को खबर तक नहीं

पाप ने लिया नया जनम
दूध की नदी हुई जहर
गाँव, नगर धूप की तरह
फैल गई यह नई खबर
रानी हो गई बदचलन
राजा को खबर तक नहीं

कच्चा मन राजकुंवर का
बेलगाम इस कदर हुआ
आवारे छोरे के संग
रोज खेलने लगा जुआ
हार गया दांव पर बहन
राजा को खबर तक नहीं

उलटे मुंह हवा हो गई
मरा हुआ सांप जी गया
सूख गए ताल -पोखरे
बादल को सूर्य पी गया
पानी बिन मर गए हिरन
राजा को खबर तक नहीं

एक रात काल देवता
परजा को स्वप्न दे गए
राजमहल खंडहर हुआ
छत्र -मुकुट चोर ले गए
सिंहासन का हुआ हरण
राजा को खबर तक नहीं

यह नवगीत और इसका शिल्प विलक्षण है। लगता है इस कथ्य के लिए ही यह शिल्प बना है अथवा इस शिल्प के लिए ही कथ्य के शब्दों को चुन चुन कर रखा गया है। मन को केंद्र में र ख कर उसके विचलन को बड़े ही सधे शब्दों में कवि ने यहां पर प्रस्तुत किया है अगर इसका हम एक रूप देखें तो मन और आत्मा से सीधी बातचीत को कवि ने यहां प्रस्तुत किया है जो सा क्षी है वह आत्मा है और जो संस्कारों से अवध्य है वह मन है मन ने इंद्रियों के माध्यम से सब कुछ अपने पास रख लिया और उसकी सूचना आत्मा को नहीं हो रही है यह इसका निर्गुण स्वरूप है कबीर की धरती से आने वाले श्री कृष्ण तिवारी पर कबीर की रचना धर्मिता उनके नवगीतों को नए तेवर से अलंकृत करती है । यह शोध का विषय हो सकता है कि वाराणसी ने हमें कबीर ही नहीं श्रीकृष्ण तिवारी भी दिए हैं, जिनकी रचनाएं कबीर की परंपरा को लेकर के आगे की ओर भी बढ़ती है। निर्गुण निराकार की विवेचना कबीर पंचमेल ि खचड़ी सधुक्कड़ी भाषा में करते हैं तो श्रीकृष्ण तिवारी खड़ी बोली में उसी परंपरा को आगे बढ़ाते नजर आते है। वास्तव में यह अपने आप में बड़े ही शोध का विषय है कि रचनाकार अपनी मिट्टी से जुड़ा हुआ है और अपने देश काल वातावरण को लेकर के संकलन त्रय की भूमिका को अपनी रचनाओं में चरितार्थ करता है।

मीठी लगने लगी
नीम की पत्ती -पत्ती
लगता है यह दौर
सांप का डसा हुआ है

मुर्दा टीलों से लेकर
जिन्दा बस्ती तक
जख्मी अहसासों की
एक नदी बहती है
हारे और थके पांवों ,
टूटे चेहरों की
खामोशी से अनजानी
पीड़ा झरती है

एक कमल का
जाने कैसा आकर्षण है
हर सूरज कीचड़ में
सिर तक धंसा हुआ है

अंधियारे में
पिछले दरवाजे से घुसकर
कोई हवा घरों के
दर्पण तोड़ रही है
कमरे -कमरे बाहर
का नंगापन बोकर
आंगन -आंगन को
जंगल से जोड़ रही है

ठण्डी आग हरे
पेड़ों में सुलग रही है
पंजों में आकाश
धुंए के कसा हुआ है

आजकल प्रदूषण ने पूरे सृष्टि को अपने आगोश में ले रखा है। यह प्रदूषण न केवल ध्वनि वायु अथवा जल का है वरन यह आचरण, शब्द, व्यवहार में भी दिखाई पड़ रहा है। कवि ने बड़े सहज रूप से नीम की पत्ती को मीठी बताते हुए इस समाज में व्याप्त विष को इंगित किया है। जिला बस्ती में लोग किस तरह से संवेदन शून्य हो गए हैं यह कवि के संगीत में ध्वनित होता है वह मानव का मानव के प्रति सहज भाव न देख पाने का अथवा उनके लुप्त होने का वितान इस नवगीत में रच रहा है। जब कवि जब कभी हवा के द्वारा दर्पण छोड़ने की बात कर रहा है तो कहीं न कहीं यह संस्कारों की बातें हैं जो हमारी मान्यताओं को हमारे मूल्यों को ध्वस्त कर रहे हैं । ऐसे में रचनाकार की चिन्ता उसी नई पीढ़ी को लेकर है जो समाज में व्याप्त आंतरिक एवं भावनाओं को प्रकट कर रहा है। कमरे के बाहर का नंगापन जब कवि के शब्दों से मुखर हो रहा है को यह कहीं ना कहीं पश्चिम की हवा का भारत में आना दिखा रहा है।तथा हमारा अंधानुकरण भी दिखा रहा है हमारे विश्वासों का टूटना भी दिखा रहा है।

कुछ के रुख दक्षिण
कुछ वाम
सूरज के घोड़े हो गए
बेलगाम

थोड़ी- सी तेज हुई हवा
और हिल गई सड़क
लुढ़क गया शहर एक ओर
खामोशी उतर गई केंचुल -सी
माथे के उपर बहने लगा
तेज धार पानी सा शोर

अफवाहों के हाथों
चेक की तरह भूनने लग गई
आवारा सुबह और शाम

पत्थर को
चीरती हुई सभी
आवाजें कहीं गईं मर
गरमाहट सिर्फ
राख की
जिन्दा है इस मौसम भर

ताश -महल फिर
बनने लग गयाचुस्त लगे होने फिर
हुकुम के गुलाम

जहां पर नवगीतकार श्रीकृष्ण तिवारी वैचारिक ध्रुवों की बात करते हैं और उसके साथ-साथ एक अटूट सत्य जो हमारे सामने है उसको भी साथ ले कर के इन दोनों वैचारिक ध्रुवों के समन्वय की बात करते हैं। शहर को लिखा हुआ दिखाने से आशय कल के द्वारा उस हवा के चलने की और कहीं जा रही है जहां या निश्चित होता है कि किस तरह कुछ वैचारिक मंतव्य पूरे समाज को आंदोलित कर देते हैं। आजकल अखबारों के माध्यम से या अफवाहों के द्वारा कुछ भी संभव होता दिखाई पड़ जाता है इसकी बानगी यहां इस नवगीत में देखा जा सकता। कवि की वैचारिकता उसके शब्दों में पिरोई हुई है।

वक्त की आवाज पर
फिर फेंकने दो एक पत्थर और
शायद
बन्द शीशे के घरों में लोग
बाहर निकल आएं

देखता हूँ --
रोपकर पीछे अँधेरा,
बहुत आगे बढ़ गया है सूर्य का रथ
उसे मुड़ना चाहिए अब
छोड़कर आकाश
टूटे गुम्बदों में रह रहे हैं जो कबूतर
उन्हें उड़ना चाहिए अब

सनसनाती हवा की ऊँगली पकड़कर
घूमने दो आईने को फिर शहर में
कौन जाने आज के ये सभी चेहरे
कल सुबह तक बदल जाएँ

जानता हूँ -
आंधियां जिस राह से होकर गयी हैं,
उस तरफ साबूत कोई मील का
पत्थर नहीं हैद्य
और यह भी जानता हूँ ---
हाथ फिर से जो हवा में तन रहे हैं
उन्हें कन्धों से अलग करना
किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं है

इसलिए अब
धुंआ बनकर छा रही खामोशियों से
फूटने दो आग के स्वर
बहुत मुमकिन है
धमनियों में जमे कतरे खून के

फिर पिघल जाएँ

यहां पर रचनाकार ने लोगों के आत्म केंद्रित होने पर दर्द कैसा है वास्तव में हम क्रांति तो चाहते हैं लेकिन क्रांति में अपनी भूमिका को सीमित करके देखना चाहते हैं यह इस युग की सबसे बड़ी पीड़ा है कठिनाई यह है की विचार भाव आवरण यह सब दिखावे की तरह इस्तेमाल किए जाने लगे हैं अब इस बात पर बड़ा आहत और पीड़ित है और उसकी पीड़ा उसके शब्दों के द्वारा फुटकर नवगीत के रूप में सामने आ रही है। कब भेजा था कि धरातल को वास्तविकता की उर्वरा भूमि से निकलता हुआ देखना चाहता है जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है हम अपनी सुविधाओं के लिए अपने स्वार्थ के लिए चीजों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं और यही दिक्कत उत्पन्न हो जाती है कभी यहां भी अपने आप को कबीर की परंपरा का शुद्ध करता है उसे किसी से लोहिया स्वार्थ नहीं है वह सत्य को न केवल कहना चाहता है बल्कि उसको अपने जीवन में उतारते हुए दिखाना भी चाहता है। श्रीकृष्ण तिवारी की सबसे बड़ी मजबूती है सबसे बड़ी ताकत है जिसके माध्यम से वह समाज की कथनी और करनी में एकरूपता को रेखांकित करना चाहते हैं उनका पोषण वैचारिक ता के धरातल पर सत्य के अनुसंधान को लेकर के सजग रहने वाले पृष्ठभूमि की ओर संकेत करता है।

बांस वनों से गूंज
सीटियों की आयी,
सन्नाटे की झील
पांव तक थर्रायी

अनदेखे हाथों ने
लाकर चिपकाये
दीवारों पर टूटे पंख
तितलियों के,
लहर भिगोकर कपड़े
पोंछ गयी सारे
दरवाजे पर उभरे
चिन्ह उँगलियों के,

खिड़की पर बैठे -बैठे
मन भर आया
द्वार बन्द कमरे में
तबियत घबरायीद्य

शीशे के जारों में
बन्द मछलियों ने
सूनी आकृतियों में
रंग भरे गहरे,
शब्दों को हिलने -डुलने
न कहीं देते
नये -पुराने अर्थों के
दुहरे पहरे,

एक प्रश्न जो सारे
बंधन खोल गया
उत्तर की सीमा
उसको न बांध पायी

कमरे के कोने में
पत्र पड़े कल के
हवा उड़ा ले गयी
साथ गलियारों में,
सारा का सारा
घर -आंगन भींग गया
गली सड़क को
खोती हुई फुहारों में,

टकराकर बंट गयी
हजारों कोणों में
आदमकद दर्पण
में मेरी परछाईं

श्री कृष्ण तिवारी के नवगीत शिल्प की दृष्टि से जितने मजबूत हैं कथ्य की दृष्टि से भी वह उतने ही सहज और सरल हैं। उनकी रचनाएं हमारी कसौटयो पर बोधगम्य है, अनुभव की कसौटी पर उन्हें कसा जा सकता है। मानवीकरण को तो हमने देखा है परंतु यहां पर कवि ने बसवारी में उठने वाली भाषा के रगड़ से आवाज को सीटों का नाम देकर ₹1 सन्नाटे की झील को हराने की स्थिति का विवेचन करके उसे अपने गीतों में प्रस्तुत किया है। यह वास्तव में कब की ताकत है और उसकी प्रयोग करने की क्षमता है जिसने उसे अपने कालखंड में सत्य को प्रस्तुत करने के अनेक आध ाार दिए हैं इस नवगीत में वह आधार सहज रूप से हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं वास्तव में कविता केवल कविताएं करना नहीं है अपितु समाज की प्रवृत्तियों को अपने शब्दों में पिरो करके आगे बढ़ाना भी है और श्रीकृष्ण तिवारी अपने उद्देश्य में पूरी तरह से सफल सिद्ध होते हैं उनका प्रस्तुत-अप्रस्तुत योजना, भाषा-भाव विचार, शैल्पिक दृढ़ता, कथ्यात्मकता यह सब कुछ अनूठा है। अपने समय को जीने वाले श्री कृष्ण तिवारी अपने नवगीतों के माध्यम से युग युग तक जनमानस में अपनी पहचान को बनाए रखेंगे ऐसी मेरी धारणा है।

हिंदी भाषण साहित्य भूषण एवं पूर्वांचल गौरव जैसे

प्रेमचंद रचित ''सेवासदन'' उपन्यास में स्त्री पात्र सुमन की मानसिकता– एक अनुशीलन

विशिष्ट सम्मान से अलंकृत श्री कृष्ण तिवारी 29 अप्रैल 2013 में इस चराचर जगत से विदा लेकर के परम तत्व में विलीन हो गए। । कवि का अवसान कभी नहीं होता उसके शब्दों उसे जिंदा रखते हैं श्रीकृष्ण तिवारी आज भी हमारे मध्य में अपनी रचनाओं के माध्यम से जिंदा है। अपनी परंपराओं अपनी प्राप्तियों और अपनी अनुशंसाओं के माध्यम से कवि कालजई होता है। श्रीकृष्ण तिवारी की रचना धर्मिता और उनके साहित्यक अवदानों पर निष्पक्ष रुप से स्वतंत्र शोध कार्य अत्यंत आवश्यक है। वस्तुतः नवगीत कारों ने अपनी रचना धर्मिता के समानांतर आलोचक पैदा न कर पाने की सीमाओं से अभिशप्त रहे है। आलोचना कृतिकार को सर्वश्रेष्ठ देने की ओर आगे बढ़ाती है। नवगीत विधा अपने आप में आलोचक नहीं दे पाई यह इसकी सबसे बड़ी कमी रही । मैं आज श्रीकृष्ण तिवारी पर अपने लेख को लिखने के दौरान रचनाकारो का आवाहन करता हूं कि नवगीत की आज की पीढ़ी अपने लिए आलोचना की प्रवृत्ति को लेकर चलने वाले रचनाकारों को भी आगे बढ़ाएं प्रोत्साहित करें। मैं धन्यवाद करना चाहता हूं डहक्टर रामसनेही लाल शर्मा यायावर जी का जिन्होंने अपने संकल्प की पूर्ति हेतु नवगीत के विभिन्न काल खंडों के रचनाकारों को अपने आलेखन का केंद्र बनाया और मुझे अवसर दिया जहां में एक संवाद स्थापित करके श्रीकृष्ण तिवारी पर कुछ चर्चा कर सकूं।

डॉक्टर जय शंकर शुक्ल
बैंक कॉलोनी, मंडोली ,
दिल्ली ११००९३

सारांश

'सेवासदन' प्रेमचंद द्वारा रचित कालजयी उपन्यासों में से एक है।प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक परिवेश, दहेजप्रथा, अमेल-विवाह जैसी समाज को खोखला कर देने वाली वीभत्स प्रथाओं पर कटाक्ष से वार करने का प्रयत्न करता है। आज के समाज को देखकर इस उपन्यास की प्रासंगिकता बड़ गयी है। प्रस्तुत शोध-प्रपत्र सेवा. सदन उपन्यास का विश्लेषण करते हुए उसके प्रमुख पात्र 'सुमन' अथवा 'सुमनबाई' की मानसिकता को केंद्र में रखकर रचा गया है।इस शोध प्रपत्र की सिद्धि हेतु उपयुक्त पुस्तकों तथा उनके लेखकों,समीक्षकों एवं शिक्षकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।विवेच्य उपन्यास सन् 1919 में लिखा गया था।यह कालजयी उपन्यासकार प्रेमचंद जी की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक है।लेखक ने नारी जीवन को निकटता से देखा है उसकी जटिलताओं को परखा है तथा समस्या निवारण के लिए प्रयत्न भी किया है। नायिका-प्रधान उपन्यास होने के कारण कथावस्तु सुमन के इर्द-गिर्द घूमती नजर आती है। लेखक ने पाठकों के समक्ष सुमन का चरित्र चित्रण बहुत ही मार्मिक तरीके से चित्रित करने का प्रयास किया है। उपन्यास में प्रेमचंद जी का यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।भले ही सेवासदन 100 से अधिक वर्षों लिखा गया हो,कथानक में चित्रित प्रसंग आज भी यह प्रासंगिक है। सेवासदन ने हिन्दी उपन्यास क्षेत्र को एक नयी दिशा दी।सौ वर्ष बाद इस उपन्यास को याद करने का अर्थ हिन्दी उपन्यास के स्वरूप विकास को जानने का लेखा-जोखा तो है ही, हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री जीवन के कल, आज और कल का आकलन भी है।

बीज शब्द- सुमन, वेश्या, दहेज-प्रथा, समाज, नारी जीवन

विषय प्रवेश

साहित्य मनुष्य के जीवन में अनन्य स्थान रखता है।वह उसके जीवन का वाहक एवं सारथी है।जनमानस के हित में लिखा गया वांगमय ही साहित्य है। साहित्य यह शब्द "स" एवं "हित" के योग से बना है जिसका अर्थ है 'समाज कल्याण हेतु लिखी गयी कृति'।लेखक हमेशा से ही समाज कल्याण की कामना करता आया है। दिशाभ्रमित समाज को सही राह दिखाकर उसे मार्गदर्शन देना अपना परम कर्तव्य समझता है।समाज को राह दिखाने हेतु वह कई कृतियों की सर्जना करता है। उसकी कृतियाँ काव्य, खंड-काव्य, कथा, उपन्यास आदि शाखाओं में स्थान प्राप्त कर भाषा साहित्य को वृद्धिंगत करता है। अतः ये कहना सही है कि साहित्य समाज का दर्पण है। समय समय पर कई समाज हितैषी लेखकों ने समाज को आयना दिखाने का कार्य किया है। जिस प्रकार दर्पण केवल यथार्थ को ही प्रकट करता है उसी प्रकार एक कुशल निष्पक्ष लेखक उन्ही प्रसंगों पर साहित्य की सर्जना करता

है जो उसे खटती हो तो दूसरी ओर समाजहित प्रसंगों की सराहना करता है।लेखक समाज संरक्षण हेतु वह व्यंग्य शैली का प्रयोग कर काल्पनिक पात्रों की सहायता लेकर वास्तविक घटनाओं का विश्लेषण करते हुए नीमिलित समाज नेत्रों को उन्मीलित करता है।समाज को जाग्रत करने के इस महायज्ञ में केवल लेखक ही ऐसा है जो निष्काम भाव से समाज के प्रति कार्यरत रहता है। तात्पर्य यह है कि समाज की परिस्थितियों का प्रभाव साहित्यकार की कृति में साफ झलकता है। साहित्यकारों की श्रेणी में उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का विशेष अधिकार है।उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस को संबोधित किया।उनकी प्रत्येक कृति समाज के किसी न किसी पहलू पर चर्चा करती हुई नजर है। उपन्यासों की बात करें तो प्रेमचंद जी का उपन्यास साहित्य पाठक को परिवेश का बृहत् चित्रफलक प्रदान करने में सक्षम है। उन्होंने अपने समय के परिवेश की विसंगतियों को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया।

प्रेमचंद जी के उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवजीवन काल्प. निक न रहकर समाज सापेक्ष था। उनका प्रत्येक उपन्यास किसी न किसी युगीन सामाजिक, राजनीतिक समस्या को लेकर चला है।नारी पराधीनता, किसान एवं संस्कृति के रक्षण कि समस्या, धार्मिक समस्या, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, दहेज के करण विवाह खंडन, वेश्यावृत्ति, अस्पृश्यता आदि समस्याओं का चित्रण करने का प्रयास किया है।

प्रेमचंद साहित्य पर डॉक्टर नित्यानंद तिवारी की टिप्पणी विशेष उल्लेखनीय है-

''प्रेमचंद जी के उपन्यासों को पढ़ते हुए लगता है कि जीवन की विविधता, विस्तार और महानता को कलात्मकता से प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों की सरचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जीवन की विविधता और महानता की पहचान प्रखर हो उठती है'' (1)

प्रेमचंद और गांधी प्रेमचंद की कहानियाँ न केवल काल्पनिकता के आवास में ही मर्यादित न रहते हुए यथार्थवाद से संबंध रखती है।उपन्यासकार प्रेमचंद जी आधुनिक भारतीय साहित्य (कथा तथा उपन्यास) का ध्रुव तारा है। प्रेमचंद जी ने नारी जीवन को निकटता से देखा है उसकी जटिलताओं को परखा है और उसके समाधान के लिए प्रयत्न भी किए।उन्होंने उपन्यास साहित्य में नारी विषयक समस्याओं को उठाया और यथासंभव विवरण करने का प्रयत्न किया।सेवासदन उपन्यास सन् 1919 में प्रकाशित हुआ था। सन् 1916 में यह उर्दू भाषा में बाजार-ए-हुस्न(2) नाम से लिखा था। सेवासदन को देखा जाए तो यह वेश्या जीवन से सीधा संबंध रखता है। उन्होंने इस उपन्यास में दहेज प्रथा,वेश्यावृत्ति और समाज का बुरा व्यवहार इन तत्वों पर चर्चा की है।प्रेमचंद जी ने सुमन की समस्या को व्यक्तिगत न रखते हुए सामाजिक समस्या का रूप दिया है। वे मानते है कि चारों तरफ सामाजिक परिस्थितियों को देखते हुए ही वेश्यावृत्ति के कुमार्ग पर अग्रेसित होने पर मजबूर हुई है।
राम आनंद जी लिखते है-

''केवल सुमन ही एक ऐसा चरित्र है जे माध्यम से इस समस्या पर उन्होंने चहूंमुखी दृष्टि डाली है और मध्यवर्गीय नारी कि अवहेलना के परिस्थिति-सापेक्ष दुष्परिणामों का निर्देशन भी किया है'' (2)।

प्रेमचंद जी ने सुमन के जीवन-चरित्र को 3 पक्षों में विभाजित किया है।संस्कारबद्ध नारीरुप, विकृत नारी रूप तथा आदर्श नारी रूप।(3)

संस्कारबद्ध नारी रूप उसके जीवन का वह पक्ष है जिसका आरंभ तथा निर्मिती उसके पिता के घर से होता है। उसके पिता के घर उसे सभी सुख सुविधाएं प्राप्त हुई है वह मानो राजकुमारी के समान आचरण करती थी,जीवन के सारे ऐशों-आराम उसे उसके पिता कृ ष्णचंद्र द्वारा मिले। परंतु उसके इसी प्रवृत्ति का खंडन तब हो जाता है जब वह विवाहबद्ध होकर अपने पति गजाधरप्रसाद पांडेय के घर जाती है। गजाधरप्रसाद की आर्थिक स्थिति नाजूक थी तो स्वाभाविक है कि जिस स्त्री को बाल्यकाल से ही भोग-विलास कि आदत थी उसे परेश. ानियाँ तथा से सामना करना पड़ा। अभिलाषा-पूर्ति न होने पर सुमन विकृत स्त्री के रूप में व्यवहार करती है। वह उस विकृत मार्ग पर स्वेच्छा से नहीं बढ़ती परंतु अगत्य-परिस्थितियाँ ही उसे उस मार्ग का अनुसरण करने हेतु विवश करती हैं। सुमन अपने पति की आर्थिक स्थितियों को देखकर असंतोषता व्यक्त करती है।

''गृह प्रबंध में सफल न होने के होने के कारणवश महीने के आधे मेन ही पैसे खर्च हो जाते है,नई साड़ियाँ तथा आभूषणों आदि की प्राप्तिभी उसके लिए संभव नहीं रहती'' (4) इस संदर्भ से हमें सुमन का असंतोष तथा वितृणा भली-भाँति दिखाई देती है और विकृत नारी रूप में परिवर्तित होने के चिन्न दिखाई देते है।वह सामने भोली नाम की वेश्या का विकृत परंतु ऐश्वर्यमय जीवन देखकर आकर्षित हो जाती है। भोलीबाई के घर बड़े-बड़े लोग आते है। उसे लगता है कि समाज में वेश्याओं का आदर-सत्कार क्या जाता है।

राम आनंद जी लिखते है -''वह देखती है कि भोली उससे कई अधिक सुखी है,समाज के प्रत्येक स्थान पर उसका आदर होता है, बड़े-बड़े लोग उसकी पलकें उसकी रह में बिच जाती है। मुझसे तो भोली ही भाग्यशालिनी है'' (5)

इस संदर्भ से यह स्पष्ट संकेत मिल रहे है कि भोली के विकृत ऐश्वर्य जीवन से सुमन का चित्त आकृष्ट हो चुका है।वह अपनी परिस्थितियों को कोसती है। उसे भोली कि तरह एक ऐसे जीवन कि आवश्यकता है जहां हर कोई उसका आदर करे और भोग-विलास आदि उसे प्राप्त हो। सुमन के जीवन-विकास का तीसरा तथा अंतिम चरण उसका आदर्श स्त्री रूप है जिसे लेखक ने बहुत ही सुंदर तरीके से उपन्यास के अंत में चित्रित करने का प्रयास किया है। इस चरित्र कि विशिष्टता है सुमन कि धर्म-निष्ठता वह भोग-विलासिनी से उठकर आदर्शसेवा व्रत धारिणी में परिवर्तित हो जाती है।

उपन्यास दारोगा कृष्णचंद्र जी से आरंभ होता है। दारोगा कृष्णचंद्र एक

आदर्शवादी पुलिस अफसर है। उन्होंने कभी भी अपने पद का दुरुपयोग नहीं किया। प्रेमचंद जी ने उन्हें रसिक,उदार एवं सज्जन रूपी व्यक्ति के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। दारोगा कृष्णाचन्द्र को दो पुत्रियाँ है- सुमन और शांता। वे अपन पुत्रियों को प्राण से भी अधिक स्नेह करते थे।उन्होंने अपनी पुत्रियों के लिए वह हर वस्तु ला कर दी जो उन्होंने माँगी। उनकी पत्नी गंगाजली चतुर एवं गृहबंध के खर्चों में माहिर है। कृष्णचंद्र की पुत्री सुमन सुंदर चंचल तथा अभिमानी है तो दूसरी ओर शांता उसके विपरीत गंभीर स्वभाव से युक्त है।जब सुमन विवाह योग्य बन गई तब दहेज समस्या ने कृष्णचंद्र को झकझोर कर दिया। इसी दहेज समस्या ने ईमानदार कर्मनिष्ठ दारोगा कृष्णचंद्र को बेईमान रिश्वतखोर दारोगा बना दिया। उनको रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा जाता है। परिणाम स्वरूप उन्हें 4 वर्षों के लिए कारावास में जाना पड़ा।परिणाम स्वरूप गंगाजली अपनी दोनों पुत्रियों को लेकर अपने भाई उमानाथ के घर जाती है। उमानाथ सुमन का विवाह करने का दायित्व स्वीकार करता है और सुमन का विवाह गजाधरप्रसाद पांडेय से करता है। लेखक ने गजाधर का वर्णन एक कृपण व्यक्ति की तरह किया है। उसकी कृपणता तथा आर्थिक समस्याओं के कारण सुमन पत्नी की सारी सुख-सुविधाओं से वंचित रह जाती है जिसके कारणवश सुमन गजाधर के साथ छल-कपट करती है।उनके विवाह-सम्बन्धों में दरारे आ जाती है।एक दिन गजाध रप्रसाद ने सुमन को क्रोध में आकर घर से बेदखल कर दिया।

पति से उपेक्षित सुमन पद्मसिंह नामक वकील के घर जाकर आश्रय मांगती है परंतु वहाँ उसे आश्रय नहीं मिलता तब सुमन भोलीबाई के वेश्यालय में आश्रय लेती है। विवाह निष्फलता के कारण गजाधर प्रसाद साधू बन जाते है और गजनन्द नाम से जाना जाता है। इस बीच सुमन के पिता कृष्णचंद्र अपने प्रायश्चित्त को पूरा कर अपने घर वापस लौटता है।विट्ठलदास सुमन को वेश्यालय से छुड़ाने हेतु बहुत पर्यास करता है और उसे विधवाश्रम में रखने का निश्चय करता है। सदन और शांता का विवाह हो जाता है परंतु जब सदन के परिवार सदस्य को पता चलता है कि शांता एक वेश्या की बहन और रिश्वतखोर दारोगा कृष्णचंद्र की बेटी है तब सामाजिक अपवाद के डर के मारे हट जाते है। अपनी बेटियों के असफल जीवन को देखकर दारोगा कृष्णचन्द्र घर छोड़कर आत्महत्या करता है। परिस्थितियों का सामना करते हुए शांता और सदन विवाह कर लेते है। वह शांता को पत्नी के रूप में स्वीकार कर उसके साथ एक झोपड़ी में रहता है। समाज से निष्कासित सुमन भी उनके साथ रहती है परंतु दु खी एवं आत्मग्लानि से ग्रस्थ होकर उस झोपड़ी से निकल जाती है। उस समय पद्मसिंह की सहायता से उन्होंने निराश्रित युवतियों के लिए एक आश्रम बना दिया। उस आश्रम में सुमन ने आश्रय लिया और सभी जनों की सेवा करने लगी। इसी से आश्रम का नाम सेवा सदन पड़ गया।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते है कि सेवासदन भले ही 100 वर्ष पहले लि खा गया हो परंतु आज भी वह प्रासंगिक है। यहाँ पर सुमन मुख्य पात्र के रूप में पाठकों के समक्ष दृष्टिगोचर है और सम्पूर्ण कथानक सुमन के इर्द-गिर्द गुमटी नजर आती है। सेवासदन के माध्यम से प्रेमचंद ने हमें स्पष्ट रूप से दिखाया है कि हमारी सामाजिक कुरीतियाँ,पितृसत्तात्मक समाज तथा पुरुष-प्रधान संस्कृति स्त्री को कुमार्ग का अनुसरण करने हेतु विवश करती है।

उपन्यास की नायिका सुमन

प्रेमचंद विरचित सेवासदन उपन्यास कालजयी उपन्यासों में शिरोमणि स्थान रखता है। यह उपन्यास नायिका-प्रधान है। इस उपन्यास का कथानक सुमन के इर्द-गिर्द घूमती नजर आती है। प्रेमचंद जी ने उपन्यास में पाठकों के समक्ष सुमन का चरित्र चित्रण बहुत ही सुंदर तरीके से किया है। सुमन सुंदर,चंचल तथा स्वाभिमानी है। सुमन के लावण्यमयी सुंदरता को देखकर भोलीबाई भी चकित होकर कहती है ”अब तक सेठ बलभद्रदासजी मुझ से कन्नी काटते फिरते थे इस लावण्यमयी सुंदरी पर भ्रमर की भाँति मंडराएँगे” (6)

इसी संदर्भ से सुमन की सुंदरता का अंदाजा लगाया जा सकता है। सुमन दारोगा कृष्णाचन्द्र की बड़ी बेटी है।बाल्यकाल सेही उसका जीवन विलास से युक्त था। गजधार प्रसाद से विवाहबद्ध होकर वाह भोग-विलास से वंचित रहने लगी। यहीं विवाह संबंध में दरार फैल जाने का मुख्य कारण था।

भोली के कृत्रिम ऐश्वर्य से प्रभावित होकर कहती है ‘‘वाह चाहे तो हम जैसों को नौकर रखले’’ (7)

इस पर प्रेमचंद जी का कहना है –‘‘उसने गृहिणी बनने का नहीं, इंद्रियों के आनंद भोग शिक्षा पायी थी’’ (8)

सुमन के पास एक कुशल गृहिणी के गुण नहीं हैं। इस वाक्य को प्रमाणित करते हुए गजाधर तथा सुमन के बीच का संदर्भ-

‘‘गजाधर-रुपये तो तुमने खर्च कर दिए अब बताओ कहाँ से आए

सुमन-मैंने कुछ उडा तो नहीं दिए

गजाधर-उड़ाए नहीं! पर यह तो तुम्हें मालूम था कि इसी में महीने भर चलाना है। उसी हिसाब से खर्च करना था।

सुमन-उतने रुपयों में बरकत थोड़े ही हो जाएगी।

गजाधर-तो मैं डाका तो नहीं मार सकता’’ (7)

सुमन जिव्हा-रस भोगने हेतु अपने पति गजाधर से कपट करती है। सुमन ने सुना था कि वेश्याएँ अत्यंत दुश्चरित्र और कुलटा होती है। वह अपने कौशल से नवयुवकों को अपने मायाजाल में फँसा लिया करती है।परंतु अगत्य-परिस्थितियों के कारण उसे वेश्या बनने हेतु विवश किया। वह वेश्या बनाना अपना सौभाग्य मानती है।

सुमन का सुमनबाई के रूप में कथन है- ‘‘महाशय,यह आप क्या कहते है? मेरा तो यह अनुभव है कि जितना आदर मेरा अब हो रहा है,उसका शतांश भी तब नहीं होता था। एक बार में सेठ चिम्मनलाल के ठाकुरद्वारे में झूला देखने गई थी,सारी रात बाहर खड़ी भीगती रही। किसी ने भीतर न जाने दिया,लेकिन कल उसी ठाकुरद्वारे में मेरा गाना हुआ तो ऐसा जान पड़ा मानो मेरे चरणों से वाह मंदिर पवित्र हो गया’’ (8)

"आप सोचते होंगे कि भोग-विलास कि लालसा से कुमार्ग में आयी हूँ,पर वास्तव में ऐसा नहीं है। मैं ऐसी अंधी नहीं कि भले-बूरे की पहचान न कर सकूँ मैं जानती हूँ कि मैंने अत्यंत निकृष्ट कर्म किया है। लेकिन मैं विवश थी,इस के सिवा मेरे पास और कोई रास्ता न था" (9)

इन दोनों संदर्भों से हमें सुमन की दयनीय स्थिति में पल्लवित आक्रोश का आभास हो जाता है।सुमन संघर्षमय जीवन व्यतीत करती है।सेवासदन में सुमन ऐसी नारी का जीवन का प्रतिनिधित्व करती है जो विपदाओं का सामना स्वयं करती है।सुमन वेश्या जीवन के कारण समाज से तिरस्कृत हो जाती है।
उपन्यास में सुमन एक सुंदर,चंचल और अभिमानिनी के रूप में दर्शायी गई है।परंतु अंत में वह केशहीना और लावण्य के स्थान पर पवित्रता की ज्योति के रूप में दिखाई देती है।

प्रेमचंद जी समकालीन समय,परिवेश तथा समाज की नब्ज को पकड़ते है। सुमन जैसे हजारों औरते सिर्फ इस लिए वेश्या बन जाती है कि शौहर उनसे प्यार नहीं करता।उन्हें पेट भर रोटी नहीं मिलती।

डॉक्टर रामाश्रय सिंह जी कहते है-"असल में सेवासदन अनेक छोटी-छोटी दास्तानों का गुलदस्ता है। इस उपन्यास में कई रंगों और खुशबू के फूल है,कथानक रूपी गुलदस्ते में इश्क बेवफाई कोर्पोरेट लाइफ मिलना बिछुड़ना महत्त्वाकांक्षा ,असफलता,शादियाँ और न जाने क्या क्या है"(10)

निष्कर्ष

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी की यथार्थवादी मानसिकता का प्रतिबिंब उनके साहित्य में देखने को मिलता है। सेवासदन भले ही कई वर्षों पूर्व लिखी गयी साहित्यिक कृति क्यों न हो परंतु वह कुछ हद तक आज भी प्रासंगिक है। सेवासदन के माध्यम से लेखक ने समाज की कुव्यवस्था का परिचय दिया है। सुमन जैसी और बहुत सी महिलाएँ है जिन्हें सुमन द्वारा सहे गए प्रसंगों का सामना करना पड़ता है और दुर्भाग्यवश कुकर्मों में जुड़ जाते है। सुमन स्वेच्छा से वेश्या नहीं बनना चाहती थी उसके इर्द-गिर्द विद्यमान कारणों से ही उसे वेश्या बनने के लिए विवश होना पड़ा। बचपन से ही शानो-शौकत में गुजरी सुमन को उसके पति द्वारा आर्थिक एवं मानसिक सहयोग न मिलने तथा वेश्यालय की सुख-सुविधाओं ने उसके नेत्र नीमीलित कर दिए जिससे वह सुमन से सुमनबाई बन गयी। सुमन को ऐसा लगता है कि शहर का हर नामी व्यक्ति उसके कोठे पर आता है तो उसे भी सम्मान मिलेगा परंतु शानो-शौकत प्राप्त करने में वह भूल गयी कि वह अनैतिक एवं अस्वीकृत मार्ग पर चल रही है। उपन्यास के अंतिम चरण में सुमन का उद्धार होना प्रेमचंद की सकारात्मक मानसिकता को भी प्रतिपादित करती है जहाँ सुमन अपनी विगत परिस्थितियों एवं उसकी शौकत पाने की मंशा को भूल कर स्वयं को वृद्धों की सेवा में लगाकर अपना जीवन सफल बनाने का कार्य करती है और इसी से उपन्यास अपनी अंतिम प्रसंग पर आता है। सुमन सेवासदन में अपना सारा जीवन वृद्धों की सेवा-सुश्रुषा में बिताकर अपना जीवन सुधार लेती है।

कुमार सुविद्य धारवाडकर
छात्र, हिंदी विभाग
पार्वतीबाई चौगुले कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
(स्वायत्त),गोवा भारत
suvidhyahindi@gmail-com

संदर्भ सूची -

1- प्रेमचंद, सेवासदनः उपलब्ध-
https%//hi-wikipedia-org/wiki/%¤0%।4%ठ8%¤0%।5%87%¤0%।4%ठ5%¤0%।4%ठ॰¤0%।4%ठ8%¤0%।4%।6%¤0%।4%।8

2- प्रेमचंद, (2006), सेवासदन, राजभाषा प्रकाशन

3- पूर्ववत्
4- पूर्ववत्

5- पूर्ववत्
6- पूर्ववत्
7- डॉ शेख मौला अली,प्रेमचंद-सेवासदन
8-प्रेमचंद,(2006),सेवासदन,दिल्ली,राजभाषा प्रकाशन
9- पूर्ववत्

10- डॉ रामाश्रय सिंह,सुमन तवायफ न होकर औरत बन जाती है PERIODIC RESEARCH VOL-7 ISSUE-3]i`"BŒ115]ISSN&2231&0045

गुरु नानक देव द्वारा रचित आदर्श समाज की संकल्पना

प्रस्तावना

आदर्श समाज की संकल्पना एवं स्थापना वांछित है परन्तु आज भी हम आदर्श समाज की स्थापना नही कर पाए हैं। आदर्श समाज ऐसी जगह है जहाँ विभिन्न धर्मों, भाषाओं, वर्गों एवं सभ्याचार और अलग-अलग अनुभवों के लोग परस्पर सद्भाव, सौहार्द्र एवं एकता के साथ रहते है। ऐसे वांछित समाज में सभी धर्म, पुरुष और स्त्रियाँ, शक्तिशाली एवं असहाय तथा विभिन्न जातियों से संबंधित लोगों में परस्पर प्रेम एवं भाईचारा होना चाहिए। आदर्श समाज की महत्वपूर्ण बुनियाद आध्यात्मिक विकास की प्राप्ति है। ऐसे आदर्श स्वरूप समाज की नींव आदर्श स्वरूप संस्थाओं पर आधारित है जो कि मूल्यों जैसे न्याय, स्वतंत्रता, बराबरी, सुशासन, गरिमा इत्यादि से प्रेरित हो और जहाँ धर्म, जाति, नस्ल, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, ऊँच-नीचे आदि कोई भेदभाव न हो।

व्यक्ति का उत्थान ऐसे समाज का सर्वप्रथम लक्ष्य है। दिव्य पुरुष, गुरु नानक देव जी ने ऐसे ही आदर्श समाज की न केवल संकल्पना ही कि अपितु ऐसे ही आदर्श सकारात्मक बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित नवीन आदर्श को करतारपुर नामक स्थान पर व्यवहार में स्थापित किया। यहाँ गुरुदेव ने नवीन जीवनशैली का प्रतिपादित किया जो कि उनके संपूर्ण जीवनकाल में प्रचारित दर्शन के गूढ़ सिद्धांतों का निचोड़ कहा जा सकता है। उनके सिद्धांत मानवीय, धार्मिक, सामाजिक एवं विश्वव्यापी आदर्शों का अनूठा समन्वय है।

सारांश यह है कि गुरु नानक देव जी के आध्यात्मिक एवं लौकिक विचारों में न केवल उस युग में जिस युग में वे अवतरित हुए थे बल्कि वर्तमान और आने वाले युगों के लिए भी एक आदर्श समाज की नींव रखी।

आदर्श समाज की संकल्पना

प्राचीन काल, मध्यकाल एवं वर्तमान में अनेकों कई राजनीतिक एवं धार्मिक महापुरुषों जैसे संतों, ऋषियों, मुनियों, पैगम्बरों, सूफी-औलियों आदि ने सर्वमान्य आदर्श समाज की संकल्पना प्रस्तुत की। समाज की बाह्य असमानताओं एवं विभिन्नताओं के बावजूद उन्होंने सांस्कृतिक, भावात्मक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्राथमिकता दी। उस समय में हिंदुस्तान का सामाजिक परिदृश्य छुआछूत, असमानता, अंधविश्वास, राजनैतिक शोषण, नारी का तिरस्कार इत्यादि अनैतिक प्रवृत्तियों से ग्रस्त था। इस तरह के समकालीन सामाजिक व्यवस्था में गुरु जी ने आदेश दिया कि धार्मिकता, प्रांतीयता, जातीयता, सांप्रदायिकता, हिंसा, असहिष्णुता आदि संकीर्ण मनोवृत्तियों से ऊपर उठकर देश में भावात्मक और राजनैतिक एकता की अविरल धारा प्रवाहित होनी चाहिए।

व्यक्ति ऐसे आदर्श समाज में तरह-तरह की गतिविधियों में स्वतंत्रतापूर्वक भाग लेकर अपने व्यक्तित्व को सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। ऐसे प्रबुध एवं सशक्त व्यक्तियों का व्यक्तित्व समाज में परिलक्षित होकर समाज की ताकत बन जाता है। ऐसे समाज में विभिन्न समूह एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहते है और समृद्ध एवं परिपूर्ण समाज की स्थापना करते हैं। लोक-कल्याण ऐसे समावेशी समाज का सर्वोपरि गुण है। नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के भाव-सूत्र में गुँथ कर ही समाज के लोगों को निश्चित सकारात्मक दिशा प्राप्त हो सकती है एवं आदर्श समाज की नींव और भी दृढ़ हो सकती है। नैतिक आदर्शों पर आधारित ऐसे समाज में लोग संकीर्ण मनोवृत्तियों से उठकर भाईचारे, लोक-सेवा, दयालुता, सहानुभूति, विश्व-बंधुत्व आदि की भावना से प्रेरित होकर अपना आचार-विहार करते है।

ऐसे ही समाज की संकल्पना भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में समाहित है। इसीलिए भारतीय संस्कृति को आदर्श संस्कृति की पदवी प्राप्त है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श समस्त संसार के लिए अनुकरणीय है। ग्रीक दार्शनिक, प्लेटो ने दार्शनिक शासक को न्यायपूर्ण समाज की नींव कहा। अरस्तू के अनुसार मानव स्वाभाविक रूप से अच्छाई से परिपूर्ण है और राज्य का कर्तुतहव्य लोगों का कल्याण है। गौतम बुद्ध ने मनुष्य के शुद्ध आचरण पर बल दिया।

जे.एस. मिल के अनुसार व्यक्तिगत स्वतंत्रता (लिबर्टी) आदर्श समाज का आधार है। महात्मा गाँधी का अटल कथन था कि धर्म एवं नैतिकता रहित राजनीति मूल्यहीन है। रविन्द्रनाथ टैगोर, जो कि सिखों के प्रशंसक थे ने कहा कि ऐसा समाज टुकड़ों में नहीं बँटा हो, जहाँ मन चिंता रहित हो और सिर ऊँचा हो।

अर्थात् यह है कि वर्तमान में भी इस तरह का समाज दूरगामी वस्तु है जो हमारे समक्ष एक गुत्थी के रूप में खड़ी है। उपरोक्त लिखे और अन्य अनेकों विचारकों के विचार उस समाज के लिए उपयुक्त थे जिस युग में उन्होंने अपना मत रखा। समय, काल और परिस्थितियों के बदलने से आदर्श समाज के लिए उनके विचार यथोचित नहीं रहे और उनमें बदलाव जरूरी हो गया।

विभिन्न धर्मों ने भी आदर्शस्वरूप उत्कृष्ट समाज की परिकल्पना की आवश्यकता को समझा और मनुष्य के उत्थान के लिए ऐसे समाज को जरूरी समझा। बहुमूल्य भारतीय धार्मिक परंपरा में पैगम्बरों, धर्म के प्रवर्तकों, सम्राटों, राजाओं एवं बहुत से महान व्यक्तियों ने समावेशी विचारधारा प्रतिपादित की। इनमें से कुछ विचारकों की विचारधाराएँ अत्यन्त ही प्रचलित हुई और कुछ समय की परतों में विलुप्त हो गई।

गुरु नानक की विचारधारा

दिव्य पुरुष गुरु नानक देव जी ने नवीन एवं अनूठा धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दर्शन दिया जिसमें आज के आदर्श समाज की झलक दिखलाई देती है। धर्म प्रचारकों में गुरु नानक देव जी का स्थान सम्माननीय और अद्वितीय हैं क्योंकि उन्होंने सच्ची कर्मशीलता और आध्यात्मिकता का समन्वय करके व्यक्ति को जीवन जीने का ढंग सिखलाया और नवीन समाज की नींव रखी।

बेईं नदी में स्नान करने के बाद, गुरुदेव ने 'न कोई हिंदु और न कोई मुसलमान' महावाक्य उच्चारित किया जो उनके समस्त दर्शन का निचोड़ कहा जा सकता है। अपनी ध ार्मिक यात्राओं और उदासियों के दौरान गुरु जी ने इस सत्य को प्रचारित किया और समाज में फैले भेदभाव एवं असमानता को मिटाने हेतु लोगों को समझाया। समाज जो निम्न एवं उच्च जातियों में विभक्त था, को समतल धरातल पर लाने की पुरजोर कोशिश की। धर्म के नाम पर आधारित भेदभाव और घृणा जो सर्वत्र फैली थी को मिटाया और लोगों को प्रेम के सूत्र में बाँधा। गुरु नानक देव जी ने चारों दिशाओं में यात्राएँ की और धार्मिक मतभेदों से ग्रस्त भारतवर्ष में असाम्प्रदायिक उदार मत का प्रचार करने हेतु गुरुदेव ने देश-देशांतर की यात्राएँ की जिन्हें उदासियाँ कहा जाता है। अपनी इन धार्मिक यात्राओं के दौरान गुरुदेव विभिन्न ध ार्म-स्थानों के गढ़ में गए। गुरु जी हिन्दुओं के धर्म-स्थलों जैसे हरिद्वार, बनारस, काशी, पुष्कर, जगन्नाथ पुरी इत्यादि, मुसलमानों के धार्मिक केंद्रों जैसे, मक्का और बगदाद, मध्य भारत के बीहड़ जंगलों, हिमालय की गगनचुंबी चोटियों जैसे सुमेर पर्वत, नेपाल आदि, समुद्री द्वीपों जैसे श्रीलंका इत्यादि संसार के कई भागों में गए। यहाँ के धार्मिक विचारों से शून्य लोगों को उन्होंने सही राह दिखलाई और वे उनके अनुयायी बन गए। गुरुदेव के आशीर्वाद से लोगों की परेशानी, यातना और दुःख दूर हो गए।

गुरु नानक देव जी समकालीन समाज में जनसाधारण पर अत्याचार किए जाते थे और उन्हें अधिकारों से वंचित रखा जाता था। ''उन्होंने अपने समय के धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ही नहीं, राजतंत्र के पापों और अन्यायों के खिलाफ भी आवाज उठाई। पापी राजा-महाराजों, रिश्वतखोर काजियों और उदासीन प्रजा सबके प्रति उनका आक्रोश जागा'' (सिंह, सत्यनारायण, 1969)। गुरु जी ने शोषित को अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने को तैयार किया और जीवन में आने वाली समस्याओं से जूझने की अपार शक्ति प्रदान की।

पवित्र आचरण, परस्पर भाईचारे और निरंकार ओंकार के स्मरण के आदेश को प्रचारित किया और लोगों को इन मूल्यों को अपने जीवन में समाविष्ट करने को कहा। इन्हीं पर आधारित सुदृ ढ़ समाज की नींव रखी। धर्म, जाति, प्रांत आदि से विभक्त लोगों ने गुरुदेव की वाणी का अनुसरण किया और वे सिख समाज ने स्वतः ही समाविष्ट हुए। गुरुदेव का धर्म अत्यन्त ही व्यवहारिक, सहन और स्वाभाविक था। गुरु नानक देव जी ने दुनिया को ऐसा धर्म दिया जो सत्य, सेवा, सदाचार, समानता, आदर्शवाद और बलिदान की भावना से ओत-प्रोत था। अपने समय के प्रचलित धर्मों की सीमाओं से ऊपर उठकर, वे मानव धर्म के संस्थापक बन गए। इतिहास में ऐसे धर्म प्रवर्तक एवं पथ-प्रदर्शक की मिसाल हमें प्राप्त नहीं होती है जिनके द्वारा प्रतिपादित उपदेश सभी देशों, प्रांतों और बदलने काल में भी मान्य हो। वर्तमान समय के भौतिक समाज से जुड़ी समस्याओं का हल भी हमें गुरु नानक की वाणी में मिलता है क्यांकि उन्होंने जीवन के तत्व को समझ कर लोगों को जीवन जीने की जाँच सिखलाई और जीवन के गूढ़ सत्य से अवगत करवाया।

1- गुरु नानक द्वारा रचित आदर्श समाज के आधारभूत स्तम्भ

गुरु नानक देव जी के आदर्श समाज की संकल्पना में व्यक्ति एवं समाज के उत्थान से संबद्ध आधारभूत तथ्य है जिसकी आधुनिक युग में भी प्रासंगिकता है। व्यक्ति विशेष और मानव समाज के उत्थान में नानक वाणी का योगदान अमूल्य है जो कि निम्नलिखित है -

ईमानदारी और मेहनत से जीवन जीने का उपदेश

गुरु नानक ने अपने समकालीन समाज को क्रांतिकारी दिशा प्रदान की जिस पर चलकर सिख पंथ का विशिष्ट रूप विकसित हुआ। गुरुदेव से पूर्व समाज से पलायन किए हुए योगियों और सन्यासियों का बोलबाला था। बुद्ध धर्म का प्रभुत्व खत्म होते-होते, सन्यासियों ने दूर जंगलों और पहाड़ों में शरण ले ली थी। यह सन्यासियों की श्रेणी हिन्दू एवं मुस्लिम धर्मों के मतभेदों से अपने आप को बचाना चाहते थे। चौदहवीं एवं पन्द्रहवीं शताब्दी तक इन संन्यासियों के अनुनायियों का घेरा बड़ा होता जा रहा था। गुरु नानक ने इस पलायनवादी वृत्ति का पुरजोर खण्डन किया और शिक्षा दी कि व्यक्ति को दुनिया की जिम्मेदारियों से पलायन नहीं करना चाहिए। ''इस गतिशीलता को गुरु जी ने जीवन दर्शन का प्रमुख तत्व स्वीकार किया'' (कोहली, एस.एस., 1969)। व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। गुरु जी ने गृहस्थ जीवन को ही ''प्रभु स्मरण करते हुए प्रभु मिलाप का मार्ग दर्शाया'' (जाती, राजेन्द्र सिंह, 2019) और स्वयं भी गृहस्थ जीवन जिया। 'कीरत करो' का उपदेश देकर गुरुदेव ने अपने जीवन के द्वारा इसकी मिसाल रखी।

गुरु नानक के पिता मेहता कालू चाहते थे कि वे दुकानदारी का व्यवसाय अपनाए। यद्यपि गुरु नानक का चित्त तो प्रभु में लीन था, उन्होंने मोदीखाने में कार्य किया और अपनी जीविका ईमानदारी से कमा. ई। यहाँ कार्य करते हुए अपने हिस्से के अनाज में से व गरीबों की मदद करते और अनाज प्रचुर मात्रा में बाँट दिया करते थे। अपने अंत के पड़ाव करतारपुर में गुरुदेव ने उदासी के वस्त्र (बाँध) उतार कर खेती-बाड़ी का कार्य किया और अपने अनुयायियों को भी खेती का कार्य करने की प्रेरणा दी। यहाँ पर गुरु जी की दिनचर्या बहुत ही संयमित थी। भोर होते ही गुरुदेव 21वीं सदी में स्नान करके और प्रभु स्मरण के पश्चात् गुरुदेव खेतों में अनाज उगाते थे। वहाँ उत्पन्न हुए अनाज को लंकर में उपयोग किया जाता है और गरीबों और जरूरतमंदों की आवश्यकता को पूरा किया जाता। यहाँ पर ही 'वे बाँट कर खाओ' (वंड छको) के फलसफे को सुदृढ़ किया।

सज्जन ठग वाली साखी भी हमें सत्यनिष्ठा से कमाई करने की प्रेरणा देती है। सज्जन ठग जो मुसाफिरों को अपना भेष बदलकर लूटता था को गुरु के शब्द गायन ने परिवर्तित कर दिया। गुरु जी ने सज्जन ठग को समझाया कि बाहरी दिखावे एवं आडम्बर से कुछ नहीं होता

और ईश्वर समाज से ही जन्म-मरण के बँधन से छुटकारा पाया जा सकता है।

एक साखी के अनुसार, गुरु नानक देव जी एक गाँव में पहुँचे। वहाँ उन्होंने पानी पीने की इच्छा जाहिर की। गुरुदेव की प्रसिद्धि चारों ओर फैली थी, अतः गाँव के धनाढ्य व्यक्ति ने लोटे में जल भरा और गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हो गया। गुरु नानक देव ने उसके हाथ से पानी पीने से यह कहकर मना कर दिया कि उसके हाथों में मेहनत के निशान नहीं थे। इसके उपरान्त गुरु जी ने पानी उस व्यक्ति के हाथ से पिया जिसके हाथ में मेहनत के निशान मौजूद थे।

सैयदपुर गाँव में गुरु जी ने कथित नीची जाति के भाई लालो के घर रूखी-सूखी रोटी खाना स्वीकार किया और जमींदार मलिक भागों के घर नहीं क्योंकि उसकी कमाई जूल्म द्वारा कमाई हुई थी इसलिए खून से सनी थी। इसके विपरीत, भाई लालो मेहनत-मजदूरी करता था और अपने परिश्रम की कमाई दूसरों में बाँटता भी था।

सच्चे सौदे की घटना में गुरु जी ने गरीब साधुओं को अनाज एवं अन्य जरूरत की चीजे बाँट कर अनूठी संस्था स्थापित की जो आज भी अविरल चल रही है। लंगर संस्था में अमीर-गरीब, ऊँचे-नीचे, स्त्री-पुरुष इत्यादि कोई भी भेदभाव नं होता और सभी एक पंक्तिमें बैठकर भोजन ग्रहण करते है।

इन सभी जनश्रुतियों में गुरुदेव ने पवित्र कमाई एवं निष्कलुष कर्म पर बल दिया। उनके उपदेश का मूल, 'मेहनत करो, बाँट कर खाओ और नाम जपो' व्यक्ति के जीवन को सहज रूप से एक नियमित बँधन में बाँधता है। गुरु जी नेजो कहा उसे अपने जीवन में ढाल कर लोगों के समक्ष अनूठी मिसाल रखी।

2- व्यक्ति की मुक्ति का राह

प्रवृत्ति मार्ग यानि गृहस्थ अपना कर भी साधना करने वाली प्रणाली को निवृत्ति मार्ग या वन की ओर प्रस्थान करके तप करने की पद्धति को गुरु ने श्रेष्ठ माना। आदर्श पुरुष गृहस्थ को अपना कर भी इससे निर्लिप्त रहते है।

जैसे जल माटिकमल निरातमु भुरगाई नैसाणे।
सुरति सबद भवसागरतरीऐ नानक नाम बखाणे।।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 939)

मायिक प्रपंचों में रहकर भी मोक्ष-प्राप्ति हो सकती हैं।

सचि सिमरिऐ होवे परगासु। ताते बिखिआ महि रहे उदासु।
सतिगुरु की ऐसी वडिआई। पुतरू कलज विचे गति पाई।।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 661)

व्यक्ति मोक्ष इसी जीवन में प्राप्त कर सकता है। गुरु नानक देव जी द्वारा प्रतिपादित मोक्ष का राह सद्मार्ग, शुभ कर्मों और सदाचार पर आधारित है। इसी दुनिया की जिम्मेदारियाँ उठाते हुए प्रभु के मार्ग पर चलना ही मोक्ष का मार्ग है। गुरु जी के अनुसार कर्मकांडो, कट्टरता और संकीर्णता का मार्ग त्याग कर, आचार और विचार कर समन्वय करना चाहिए।

मनुष्य के जीवन में सांसारिक पदार्थों की प्रीत की जगह परमात्मा के प्रेम की प्रधानता होनी चाहिए। गुरु नानक देव ने परमात्मा के लिए 'सतिनाम' शब्द का प्रयोग किया। जपुजी साहिब की चौथी पउड़ी में गुरु जी ने उच्चारण किया - अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचार।

सर्वशक्तिमान परमात्मा ने सारे ब्रह्मांड की रचना की। अन्य धार्मिक सुधारकों से आगे बढ़कर उन्होंने अवतारों की कल्पना का भी खण्डन किया। गुरु जी की विलक्षणता इनमें भी नजर आती है कि उन्होंने स्वयं भी ईश्वर होने का दावा नहीं किया। उनका कथन था -

गुण इहो होरू नाही कोई।
न को होआ न को होई। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 349)

परमात्मा 'करता पुरख' है जिसके एक हुक्म से समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ है। 'कीता पसाऊ एकै कवाओ' (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 169) एवं 'घट-घट जोत सवई (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 597)।

सृष्टि का अद्भुत कर्तृता होने के साथ परमात्मा उसके कण-कण में व्याप्त है एवं समस्त सृष्टि का संचालक भी है। इस सारी सृष्टि का रहस्य भी परमात्मा स्वयं ही जानता है क्योंकि उसी का प्रसार हम समस्त सृष्टि के विस्तार में देखते हैं।

आपे करता पुरखु विधाता। जिनि आपे आपि उपाइ पछाता।
आपे सतिगुर आपे सेवक आपे स्त्रिसटि उपाई हे।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 1025)

''परमात्मा के एकत्व का विश्लेषण करते हुए मल्हार गना में गुरु नानक देव जी का कथन है कि परमात्मा आप ही पट्टी है, आप ही लेखनी है तथा उसके ऊपर लिखा हुआ लेखक भी वह स्वयं ही है।'' (जग्गी, डॉ गुरशरन कौर, 2002)

परमात्मा 'सरब शक्तिमान, सख सम्रंथ, सरब व्याप्त और सरब रूपी' है। परमात्मा निरवैर यानि वैर रहित है और सदा सलायित निरंकार है। परमात्मा का परम गुण 'अंजुनी' है अर्थात् वह न ही जन्म धारण करता है और न ही मृत्यु को प्राप्त होता है। परमात्मा का वास सापू, पवित्र और सच्चे हृदय में होता है। जब माया रूपी पर्दा हटता है, मन पवित्र और सच्चा हो जाता है और ईश्वर ऐसे ही सच्चे हृदय में निवास करता है। इस संसार में सदाचारी मनुष्य ही सद्गति को प्राप्त कर सकते है।

राती रूती थिती वार। पवन पाणी अगनी पाताल।
हिल विच धरती थापि ररदो धरम साल।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 7)

जो व्यक्ति नाम स्मरण करके आनन्दित होता है वह मोक्ष का द्वार पाता है। गुरु जी के उपदेश अनुसार जीवात्मा का मुख्य उद्देश्य है परम तत्व परमात्मा में विलीन होना जो शाश्वत प्रभु की स्तुति करने से प्राप्त होता है। शरीर रूपी जीवन की सफलता चं. चलता को त्याग कर, सत्य के मार्ग पर अग्रसर होकर सम्पूर्ण हरि को पाने में है।

गुरमुख एवं मनसुख व्यक्ति में अंतर है, ''दुर्वृतियों में अधिक रूचि रखने वाला व्यक्ति 'मनमुख' है तथा इसके विपरीत सद्वृत्तियों में रूचि रखने वाला एवं सन्मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति 'गुरुमुख' है। (जग्गी, डॉ गुरशरन कौर, 2002) गुरमुख व्यक्ति वह है जो ईश्वर के समीप रहता है।

सच्चरित्रता से आत्मा की शुद्धि होती है और गुरुमुख आध्यात्मिक शिखर पर पहुँच जाता है। गुरु नानक ने गुरमुख एवं मनसुख व्यक्ति के भेद को स्पष्ट रूप से समझाया। गुरमुख व्यक्ति के विपरीत मनसुख व्यक्ति की कड़ी ईश्वर से टूटी होती है। इसलिए जन्म-मरण के फेर में पड़ कर उनको भटकना पड़ता है।

मनमुखि सोझी ना पवै बीछुड़ि चोटा खाइ।

(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 60)

गुरमुख परम ज्योति को पहचानते है और मनसुख अंधकार में भटकते है। मनुष्य के हृदय में माया का वास होता है।

मनमुखि मूड़ माइआ चित वासु। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 22)

मनसुख का विनाश अवश्यंभावी है।

मनमुखि विनसै आवै जाइ। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 939)

मनमुख आपना सब कुछ हार बैठते है और गुरमुख प्रफुल्लित होते है।

मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा।(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 939)

अतः बुरे एवं अशुभ बंधनकारी कर्म जो विषय-वासनाओं के अधीन किए जाते है, और जो मनुष्य को सांसारिक प्रपंच से बाहर नहीं निकलने देते है, का त्याग करना चाहिए। मनुष्य का जीवन सार्वलौकिक मूल्यों जैसे सच (सत), संतोष एवं विचार पर आधारित होना चाहिए। अपने अहमं को त्याग कर अपने जीवन कर्ता के साथ अटूट सम्बन्ध बनाना चाहिए। संसार में निर्लिप्त रहते हुए मनुष्य को नाम स्मरण में लीन रहना चाहिए। मनुष्य को कमल पुष्प की भाँति होना चाहिए जो यद्यपि गंदले पानी में उगता है, मलीनता से निर्लिप्त रहता है। अपने कर्मों और कथनी में समन्वय करके मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य स्वरूप में एकात्मिकता स्थापित की जा सकती है। नाम स्मरण, सच्ची साधना और सेवा से मनुष्य अपने लौकिक एवं पार-लौकिक जीवन को सफल बना सकता है। गुरु जी ने समाज में लोगों के चरित्र निर्माण एवं आध्यात्मिक पुनजी. ‘वन पर बल दिया। व्यक्ति ही मिल-जुल कर समाज का निर्माण करते है। आत्मा को शुद्ध करके और सच्चे आचरण से मनुष्य लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता है। ‘सच कभी पुराना नहीं होता। एक बार मन लग जाए तो फिर कभी पृथक नहीं होता।’ (सिंह, जोध 1969) नाम जपने से ही परम तत्व अर्थात् आत्मा सत्य का अनुभव कर सकती है। साधक की प्रगति के मार्ग को सीढ़ी के वर्णन में गुरु नानक की स्वतन्त्र कल्पना दिखलाई देती है। ‘‘सगुण-निर्गुण का विवेचन, योगसाधन, गुण-विकास, नाम-जप वगैरह सबका समन्वय करने में, नानकजी की कुशलता दिखती है’’ (विनोबा, 2010)। परमात्मा के गुण जो कि अमूल्य हैं उन्हें आत्मसात् करके जो कार्य करते है वे अनन्त गुण लेकर ईश्वर में समा जाते हैं। अतः नानक की वाणी से यह प्रेरणा मिलती है कि सतत् परमेश्वर के गुण गाए जाए क्योंकि ईश्वर की कृपा से ज्ञान अर्जित होगा एवं मुक्ति प्राप्त होगी।

गुरु नानक देव जी ने थोथी रस्मों, मूर्ति-पूजा, दिखावे और अनाचार का खण्डन किया। गुरु जी पहले धर्म के प्रवर्तक थे, जिन्होंने सामाजिक जीवन में सारे मनुष्यों की बराबरी का सिद्धांत स्वीकार किया और नीची जात वाले लोगों को अहसास करवाया कि सब ईश्वर की संतान है और सब में ईश्वर की ज्योति समाई हुई है। ‘‘इस तरह हिंदू ध र्म मे वर्ण-आश्रम को ही गुरु जी ने सिद्धांतक रूप में अस्वीकृत किया।’’ (भट्टी, सुरजीत सिंह, 2014)

वेईं नदी में स्नान करने के पश्चात् उन्होंने कहा, ‘न कोई हिन्दू, न कोई मुसलमान’ और उन्होंने दोनों धर्मों के आडम्बर और पाखण्ड से दूर रहने को कहा। गुरु जी ने केवल निरंकार ईश्वर की आराधना की और वे जहाँ भी गए उनके बहुत से अनुनायी बन गए।

‘‘बाबा नानक ने कहा कि समाज काजी, ब्राह्मण और जोगियों की दिशा-निर्देश में हैं, परन्तु उन सब का नैतिक पतन हो चुका है।’’ इसके साथ, इन तीनों ने अपना नाश दुराचरण द्वारा निश्चित कर लिया था। नानक ने उन्हें आचार का पथ दर्शाया जो कि गुरु की कृपा के बिना संभव नहीं है क्योंकि वह ही एक ईश्वर की महिमा जानता है। वह स्वयं भी पार हो जाता है और अपनी सारी पीढ़ी को भी पार करता है। (हबीब, डॉ मोहम्मद, 2018)

सच्चे मुसलमान के गुण उन्होंने बतलाए, जो कि धर्म में अटल विश्वास, अहंकार का त्याग और अल्लाह की आज्ञा में रहना है। गुरुदेव ने कहा कि सच्चा मुसलमान वह है जो बुराईयों से दूर है।

मुसलमाणु सोई मल खोवै। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 662)

गुरु जी उन्हें सच्ची शरियत और कलमें को पालन करने को कहा। शरई कर्मकाण्ड को समझाने हेतु उन्होंने वाणी का उच्चारण किया कि –

पंजि लिवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ।
पहिला सचु हलालु दुइ तोजा खैर खुदाइ।
चउथी नीअति रास मनु पंजाबी सिफति सनाइ।
करणी कलमा आखि के ता मुसलमाणु सदाइ।
नानक जतै कुड़िआर कूड़े, कूड़ी पाइ। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 141)

एक दिन गुरु नानक देव जी मस्जिद गए। वहाँ नावाब और काजी, दोनों को उन्होंने पाखंडों से सचेत किया और समझाया कि अल्लाह के एकाग्र चित्त होकर याद करके ही पाया जा सकता है। इसी प्रकार गुरुदेव ने हिन्दू धर्म के तीन आधारभूत स्तंभों, पुजारी, जाति और वेद के बारे में आलोचनात्मक रवैया किया (सिंह, सतबीर, 1996)।

समाज के ठेकेदार ब्राह्मणों के धार्मिक पाखंडों को उन्होंने निम्न. लिख्ति श्लोक में उजागर किया है।

दइआ कपाह संतोखु सूतु जत गंढी सतु वटु।
एहु उनेउ जीआ का हइे न पाइे धतु।
ना ठहु तुटै न मुल लगै न एहु जलै न जाइ।
धनु सु मागस नानका जो गलि चले पाइ।(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 471)

गुरु जी अपनी वाणी में बाहरी आचारों और आडम्बरों का खुल कर खण्डन किया और जनसाधारण को इन बेकार की रूढ़ परम्पराओं से दूर रहने को कहा –

मूजि सिला तीरथ बनवासा भरमत डोलत भए उदासा
मनि मैले सूचा किउ होई साचि मिलै पावै पति सोई।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 686)

गुरु नानक देव जी के अनुसार तीर्थ स्थान में स्नान करने जितना पुण्य गुरु के दर्शन करने से प्राप्त हो जाता है।
अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु पशपति होई।।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 597)

तीर्थ यथार्थ में लोगों के मन में ही है और आत्मविश्लेषण से पाया जा सकता है।
मनु मंदरू तनु केस कलंदरू घट ही तीरथि नावा।
एकु सबदु मैरे प्रानि बसतु है, बहुड़ि जनमि न आवा।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 795)

गुरुदेव ने योग संबंधी सभी विश्वासों को पाखंडपूर्ण साबित करके अस्वीकार कर दिया। मन के विषय-विकारों को नियंत्रित करके और गुरु शब्द के द्वारा ही आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति हो सकती है। योग साधना नाम साधना के बगैर नहीं हो सकती है।यौगिक कर्मकाण्ड का खण्डन गुरु नानक देव जी ने इन शब्दों में किया –
मुंदा संतोखु सरम पतु झोली विभाजन की करहि विभूति।
खिंथा कालु कुआरी काराया जुगति डंडा परतोति।
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु। (जपुजी, पउडी, 8)

योगियों के ऊपरी दिखावे जैसे कानों में कुण्डल पहनना, बालों को मुंडा लेना एवं शरीर पर भस्म मल लेना इत्यादि व्यर्थ और नाम स्मरण और शब्द द्वारा ही शारीरिक शांति और पारलौकिक मुक्ति प्राप्त हो सकती है। गुरु जी ने योगियों को समझाया कि तांत्रिक चिन्हों को अपनाने एवं असाधारण शक्तियों को दिखाने के स्थान पर आध्यात्मिक और नैतिक गुणों को ग्रहण करने चाहिए। इन कर्मकाण्डों ने जो धर्म की बाहरी प्रक्रियाएँ हैने धर्म के वास्तविक स्वरूप को भुला दिया था।

मानव द्वारा कृत जातिगत मतभेदों का पुरजोर खण्डन किया। गुरुदेव की वाणी में अंकित है –
फकड़ जाती फकडु नहऊ।
सभना जीआ एका थाउ।। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 83)

गुरु नानक ने कहा कि परमात्मा के हुक्म को पहचान कर उस पर चलना ही सच्चे जीवन का सार है। परमात्मा ने सभी मनुष्यों को बराबर बनाया है।
जागहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 349)

परमात्मा के समक्ष जाति-पांति को कोई मतभेद नहीं है। गुरु जी ने कहा कि कृत कर्मों से ही मानव जीवन का विकास होता है और अपने किरत (कृत) कर्म का फल मनुष्य को भोगना पड़ता है। यहाँ तक की मर्यादा पुरुषोत्तम राम को भी अपनी पत्नी ओर भाई का वियोग सहना पड़ा था। अतः कृत कर्मों की प्रधानता है परन्तु फिर भी 'कर्मवाद' का महत्व है क्योंकि मनुष्य की कामनाओं का निपटारा कर्मों पर निर्भर है।
करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुई लेख पए। जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाहं अंतु हरे।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 990)

परमात्मा का वास मनुष्य के हृदय में होना चाहिए और परमात्मा को भुलाने से मनुष्य के गुणों का ह्रास हो जाता है।
चित चेतसि की नहीं बावरिआ।
हरि बिसरत तेरे गुण गलिया।। रहाउ। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 99)

गुरु नानक और भाई परदाना का आजीवन साथ यह दर्शाता है कि वह 'मरासी' थे परन्तु जब गुरु जी वाणी का उच्चारण करते थे तो भाई मरदाना रबाब की मधुर धुन बजाते थे। वाणी और रबाब के मेल से सारा वातावरण सुरमयी और स्वर्णिम हो जाता था। भाई लालो जो की नीची जात के थे। के घर गुरुदेव ने रूखा-सूखा खाना पसंद किया क्योंकि उसकी कमाई पवित्र थी। गुरु नानक द्वारा स्थापित लंगर की संस्था ने समाज में एकता स्थापित करने का कार्य किया। करतारपुर में सभी श्रद्धालु एक पंक्ति में बैठकर भोजन ग्रहण करते जो कि बराबरी का व्यवहारिक उदाहरण था।

गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित समाज में ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान था। गुरुदेव का कथन है कि व्यक्ति ब्रह्म ज्ञान द्वारा ही आदर्श समाज की स्थापना कर सकता है। ज्ञान, शिक्षा इत्यादि द्वारा व्यक्ति की क्षमता और आंतरिक शक्ति का संवर्धन होता है। इसके साथ समाज की परिवृद्धि भी होती है। विद्या और परोपकार के सुमेल से मनुष्यों के उत्कृष्ट एवं समाज सेवी व्यक्तित्व का संवर्धन होता है जिसके द्वारा ही समाज का लोक कल्याणकारी स्वरूप संभव है।
गुरु मनुष्य के लिए ज्ञान का माध्यम है। गुरु की महिमा स्पष्ट करते हुए, गुरु नानक देव जी ने कहा कि आध्यात्मिक क्षेत्र में कोई भी कथन गुरु के बगैर संभव नहीं है।
अठसठि तीरथ मनना, गुरु दुस्सु पशपति होई।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 597)

गुरु जी जिज्ञासु के मन के अंधकार को दूर करके ज्ञान का बोध करवा सकता है। गुरु जीवात्मा को परमात्मा से मिलाप का राह दिखलाता है। गुरु के समक्ष समर्पण के बिना सुख प्राप्त करना संभव नहीं है।
बिन गुर भगति नाही सुखु थीआ। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 832)
एवं जो गुरु से मुख फेर लेते है, वे जन्म-मरण के चक्र में फँसे रहते हैं।
गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोति भवाईऐ। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 832)
गुरु के बगैर ज्ञान अर्जित करना संभव नहीं है।
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होई।
(गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 469)

गुरु रूपी बेड़ी पर चढ़ने वाले व्यक्ति भवसागर से पार हो जाते हैं।
गुरु सरू सागर बहिथो गुरु तीरथ दरीआउ। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ17)

बारहमाहां (बारहमासा जो कि वर्ष के बारह महीनों पर आधारित प्रेम-गीत है) में गुरुदेव ने स्वयं को प्रभु की नवविवाहित के रूप में चित्रण किया है। पतिसूचक कई नामों के द्वारा परमात्मा को दम्पत्ति प्रेम के अधीन अति मनमोहक स्वरूप से चित्रित किया। जीवात्मा रूपी स्त्री अपने पति के वियोग में व्याकुल है जो नाम रूपी अमृत गुरु के उपदेश द्वारा ही ग्रहण करती है।

गुरु की प्राप्ति परमात्मा की कृपा दृष्टि द्वारा ही संभव है। गुरु में परमात्मा के उच्च गुणों का निवास है एवं मानवता का उद्धार गुरु के माध्यम द्वारा ही संभव है। गुरु माध्यम है जिसके द्वारा परमात्मा का मिलन संभव है। सति संगत में नाम स्मरण और कीर्तन प्रभु प्राप्ति के माधव है। सति संगत पारस पत्थर की भाँति है जिसके स्पर्श मात्र से मनमुख रूपी लोहा गुरुमुख रूपी सोने में परिवर्तित हो जाता है। सति संगत में परमात्मा का वास है और जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मिल जाती है।

साध-संगति महि हरि रसु पाईऐ।
गुरि मिलिऐ ऐ जम भउ भागा।
नानक राम नामु जांति गुरमुखि
हरि पाए मसतकि भागा।

नाम साधना से व्यक्ति के दुखों और पापों का विनाश होता है और आवागमन के फेर से मुक्ति प्राप्त करके व्यक्ति भवसागर के पार हो जाता है। साधक निर्लिप्त रह कर एवं साधना में तल्लीन रहकर भवसागर के पार जा सकता है।

सो गिआनी जिनि सबद लिव लाई। (गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 83)

उपसंहार

गुरु नानक देव जो अलौकिक व्यक्तित्व के धनी थे एवं उनके विचार क्रांतिकारी थे। गुरुदेव के आध्यात्मिक दर्शन ने नवीन समाज की संरचना की जो भेदभाव रहित था। मानव के जीवन में प्रेम, शांति और संतुलन स्थापित करने हेतु नवीन दृष्टि प्रदान की। गुरु नानक जगत गुरु और अमन स्थापित करने वाले थे (सिंह, सुरिंदर, 2019)।

गुरु के उपदेश द्वारा वर्षों से दबे लोगों में आत्म गौरव और नवीन चेतना का संचार हुआ। समाज और धर्म में व्याप्त बुराइयों का समूल विनाश करने के लिए गुरु जी ने धर्मयुद्ध शुरू किया। समाज में व्याप्त बुराइयों जैसे कट्टरता, पाखंड, अंधविश्वास इत्यादि से जन-साधारण को मुक्त किया। अपने अनुयायियों को परमात्मा से जोड़ कर सांसारिक तृष्णा, बैर और भय के बंधन से मुक्ति कर दिया। करतारपुर में बसने के पश्चात् गुरुजी ने अपने द्वारा प्रचारित सिद्धांतों को व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन में ढाल कर आदर्श एवं उत्कृष्ट समाज की नींव रखी। जो कि व्यक्तिगत और सामाजिक आचरण और आचार के तत्व एवं मूल्थ कौम के लिए और संसार भर के लिए मार्गदर्शक का कार्य करता है। (कौर, हरप्रीत, 2018)

अतः गुरु नानक देव जी का विलक्षण समन्वयवादी दर्शन मनुष्य के बाहरी आडम्बरों से हटकर एक उत्कृष्ट समाज की रचना करने की प्रेरणा देता है। अलग-अलग धर्मों और सम्प्रदायों को प्रेमपूर्वक जीवन जीने को प्रेरणा देकर, उन्हें बंधुत्व के अमिट बंधन में बाँध कर जीवन जीने की ओर आकृष्ट करता है। गुरु जी के गूढ़ दर्शन का प्रभाव आज भी कायम है और लोगों को आदर्श जीवन जिसकी नींव भाईचारे, आदर्शवाद, सच्चाई, सेवा, सहनश. ीलता, सद्भावना और बलिदान पर आधारित है की ओर प्रेरित कर रहा है। सिख धर्म के साढ़े पाँच सौ वर्ष का उत्सव 2019 में मनाते हुए, गुरु नानक देव जी की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाना ही मानवता का उद्देश्य होना चाहिए।

प्रो हरप्रीत कौर
प्रधानाचार्या
माता सुंदरी कॉलेज फॉर वूमेन
दिल्ली विश्वविद्यालय

संदर्भ

1- सिंह, सत्यनारायण, 'गुरु नानक की सांस्कृतिक देन', गुरु नानक प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1969-

2- सिंह, जोध, 'गुरु नानक की सांस्कृतिक देन', गुरु नानक प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1969-

3- Kohli] S-S-] ^Philosophy of Guru Nanak^] Punjab University] Chandigarh&I] 1969-

4- जाली, राजिन्द्र सिंह, 'भूले मारग जिन्हें बताईआ शब्द फाउंडेशन, अमृतसर, 2019-

5- जग्गी, डॉ गुरशरन कौर, 'गुरु नानक की प्रेम-भक्ति', वेलविश पब्लिशर्स, दिल्ली, 2002-

6- विनोबा, जपुली, 'सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन', राजघाट, वाराणसी, तेरहवां संस्करण, 2010-

7- भट्टी, सुरजीत सिंह, 'श्री गुरु नानक देव अते उनां दा समां', संपादक-कौर, डॉŒ हरबंस, 'गुरु नानक देव जीः जीवन ते विचारधारा, अरशी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2019-

8- Habib] Dr- Mohd] ^Guru Nanak % The Pioneer of Universal Values^] in Studies in Sikhism and Comparative Religion] Vol- XL] No-1] January&June] 2018

9- सिंह, सतबीर, बालियो चिरागा (जीवनी गुरु नानक देव जी), न्यू बुक कम्पनी, जालंधर, 1996

10- Kaur] Harpreet] ^Guru Nanak^s Model Community % Kartarpur and its Relevance^] in Studies in Sikhism and Comparative Religion] Vol- XL] No-1] January&June] 2018-

11- Singh] Surender] ^The Seed of Sikhism % How it Flourished Under The First Five Gurus^] in The Sikh Review] Vol- 67%05] No- 785] May 2019-

जन्म शताब्दि वर्ष शकुंत माथुर

हिंदी साहित्य में लेखकों की जन्म शताब्दी मनाने का बहुत प्रचलन है परंतु अभी तक स्त्री रचनाकारों के संदर्भ में इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है। आज मैं ऐसी ही स्त्री रचनाकार की चर्चा करूंगी, वह है शकुंत (शकुंतला) माथुर । स्त्री उपेक्षा सदैव से होती रही है और रचनाकारों के संदर्भ में भी यह पुरुषात्मक सामंतवादी प्रवृत्ति सदैव विद्यमान रही है। यही कारण है कि स्वयं गिरिजाकुमार माथुर ने अपनी पत्नी की रचनाओं को हिंदी साहित्य के पाठकों के सम्मुख लाने में योगदान नहीं दिया। दूसरा सप्तक के अपने वक्तव्य में शकुंत माथुर कहती हैं कि गिरिजा कुमार माथुर उनकी बातों को हंसी में उड़ा देते थे। हिंदी साहित्य का इतिहास इस अर्थ में अज्ञेय का ऋणि है कि उन्होंने दूसरे तार सप्तक में शकुंत माथुर को स्थान देकर हिंदी साहित्य की धारा में उनकी कविताओं को जोड़ा।

इनका वास्तविक नाम तो शकुंतला माथुर है परंतु इनकी पुत्री बीना बंसल के अनुसार उन्हे शकुंत नाम ही प्रिय था। बीना जी के अनुसार इनका जन्म 24 फरवरी 1920 को दिल्ली में हुआ और इनका निधन 12 सितंबर 2004 को हुआ था। यही तथ्य मुझे शकुंत जी पर हुए शोध ग्रंथो से भी पता चला है। गूगल पर उपलब्ध सामग्री में इनका जन्म 20 मार्च 2022 बताया गया है।

शकुंत जी ने बाल्यावस्था से ही लेखन प्रारम्भ कर दिया था और तमाम पत्र पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती थी। इन्होने अपने उत्कृष्ट योगदान से हिंदी साहित्य की अपूर्व सेवा की है। तत्कालीन परिस्थिति में जब स्त्री शिक्षा, स्वतंत्रता और लेखन कठिन ही नहीं दुष्कर कार्य था तब शकुंत जी ने अपने लेखन और जीवन में साहसिक कार्य करते हुए बिना किसी स्त्री विमर्श के स्त्री जागरूकता के लिए प्रयास किया।

शकुंत माथुर दूसरा तार सप्तक की एकमात्र कवयित्री रही हैं। इन्हे नई कविता की पहली कवयित्री भी कहा जाता है। इनके प्रमुख काव्य संग्रह चांदनी चुनर (1960), अभी और कुछ (1966), लहर नहीं टूटेगी (1990) हैं। चांदनी चूनर साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड से और लहर नहीं टूटेगी नेशनल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशित हुई।

किसी वाद अथवा विमर्श के दायरे में हम जब भी रचनाकार को बांधते हैं तो उसके साथ अन्याय करते हैं। शकुंत माथुर के साथ भी ऐसा ही हुआ। उन्हें प्रयोगवाद और नई कविता की सीमाओं के आध ार पर सदैव आंकने का प्रयास किया गया है। परंतु उनके समग्र रचना कर्म को हम देखें तो यह कह सकते हैं कि उनमें प्रयोगवाद तथा नई कविता की प्रवृत्तियां समाहित है परंतु वह इससे आगे की रचना भी करती हैं। शकुंत जी का मानना है कि कविता वास्तविक जीवन के साध ारण उत्तम सत्य पर आधारित है, इसलिए निष्पक्ष है।

चांदनी चुनर की भूमिका में उन्होंने प्रयोगवाद और नई कविता पर अपने वक्तव्य को भी लिखा है। अपनी कविताओं के संदर्भ में भी वह कहती है कि ---- ”इस सहज सत्य की खोज में लगे स्वाभाविक व्यक्ति के छोटे-छोटे सुख-दुख उसकी सामाजिक पारिवारिक अनुभूतियां मेरी कविता की विषय वस्तु है। ”

“घर आंगन चौकी से जो संस्कृति, विवेक, अनुशासन तथा रसज्ञता जन्मती है, वह बेसिक होती है, स्थाई होती है। इसी कारण समाज की जिस पूर्ण - खंड इकाई में मैं रमी हूं उसके सुख दुख की आनंदयी अनुभूतियों को साधारण इंगित करने की चेष्टा मैंने की है बरगद या सितंबर में आई थी नामक कविताएं इसका उदाहरण है। मेरी कविताएं एक पैटर्न की नहीं है। उपमान घरेलू जीवन से उठाए हैं। भाषा और मुहावरे एकदम गृहस्थी की बोलचाल वाले हैं। (चांदनी चूनर : वक्तव्य, पृ0 07- 08)

शकुन्त माथुर की रचनाओं में सामान्य घर गृहस्थी से उठाए हुए आनंद के कुछ टुकड़े हमें दिखाई देंगे। इनकी कविताएं घर की देहरी से संसार को देखने की प्रवृत्ति की ओर इंगित है। शकुंत माथुर की कविताएं आदर्श यथार्थ इत्यादि सांचो में फिट नहीं बैठती हैं। इन सब से दूर इनकी कविताएं मन की सहज अनुभूतियां है। यह ऐसी अनुभूतियां हैं जो किसी घटना, किसी तथ्य या जीवन की सामान्य से घटित होने वाली दैनिक क्रिया से भी उपज जाती है। इसके लिए काव्य सिद्धांतों की आवश्यकता अगर महसूस की जाएगी तो कविता का मूल रस ही समाप्त हो जाएगा। शकुंत माथुर की रचनाओं को परखने के लिए काव्य कसौटी के मानदंडों को आरोपित करके देखने में निराशा हाथ लगेगी। वस्तुतः कुछ रचनाकार ऐसे होते हैं जिनके लिए मानदंड की कसौटी बदलनी आवश्यक होती हैं, शकुंत जी ऐसी ही रचनाकार हैं।

शकुंत माथुर की पूर्णमासी रात भर जैसी कविताएं नगरीय भाव बोध की कविताएं हैं। नगरी भाव बोध में संवेदनहीनता, रिश्तो में आई तटस्थता और अपने भीतर एक रिक्तता की जो अनुभूति है वह शकुंत जी की रचनाओं में देखने को मिलती हैं। रिश्तो में आया एक ठंडापन और संवेदना की चोटिल छवि इस कविता में दे खते ही बनती है -

मेरे ही तीन बच्चे
रक्त के टुकड़े
निचोड़ रहे
कपड़ों सा मुझे
प्रतिपल दिन गिरता है
सांस छोड़ गहरी
(मध्यवर्ग कविता : कविताएं संकलन से साभार)

इस जैसी और ऐसी अनेकानेक कविताओं में शकुंत जी सत्य के लिए कभी-कभी सपाट अभिव्यक्ति भी देती हैं। जैसे -

घृणा की गहरी खाई
बर्बरता के पर्वत
रक्त की नदियां
अणु का ह्रास

शकुंत जी की रचनाओं में किसान, मजदूर और निम्न वर्ग अपने संपूर्ण अभावों, विषमताओं, आशा, निराशा, आकांक्षाओं,

अपेक्षाओं के यथार्थपरक रूप में उपस्थित हुआ है इसके साथ ही मध्यवर्गीय जीवन, उसकी पीड़ा, घुटन, सुख, दुख, कड़वाहट इत्यादि को उनके काव्य में बखूबी देखा जा सकता है। शोषण की गहरी जड़ें समाज में व्याप्त है इसकी ओर इनकी रचनाएं इंगित करती है। शकुंत जी की कुछ कविताएं पढ कर के ऐसा लगता है कि प्रेमचंद के कथा साहित्य की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हैं। एक उदाहरण के द्वारा मैं अपनी बात को पुष्ट करना चाहती हूं ---

कभी एक ग्रामीण धरे कंधे पर लाठी
सुख-दुख की मोटी सी गठरी
लिए पीठ पर
भारी जूते फटे हुए
जिनमें से झांक रही गांव की आत्मा
(दूसरा सप्तक से साभार)

शकुंत जी किसानों एवं मजदूरों का चित्रण करते समय उनका एक अलग ही सौंदर्यशास्त्र गढ़ते हैं। केदारनाथ अग्रवाल श्रम में सौंदर्य देखने के कारण अपनी रचनाओं में चर्चित हुए परंतु उसी श्रम को अपनी कविताओं में पिरोने पर भी शकुंत माथुर उपेक्षा का शिकार हुई। वस्तुत श्रम में सौंदर्य देखने का बोध अपने आप में बड़ा अद्‌भुत व निराला है शकुंत जी इस सौंदर्य को बड़ी बारीकी से दे खती हैं और कहती हैं कि -

आज बाहर
गर्म सूरज
फेंकता गर्मी चिलकती धूप खेतों पर
बोते बीज खेतिहर
गर्म लोहू से सी चे विटप सारे

श्रम सौंदर्य को देखते हुए वह इस वर्ग की त्रासदी पर सीधे व सपाट तरीके से बडी सहज भाषा में कह उठती हैं ---

बहती हुई नदी ने चर्चा की थी
आसमान से पाताल तक की
लगातार कहती गई थी
कम अनाज महंगाई की
भयानक अकाल बाढ़ की

स्त्री के संदर्भ में शकुंत जी एक साधारण स्त्री की भांति सोचती हैं। स्त्री का व्यक्तित्व, उसकी स्वतंत्रता इनकी कविताओं में अपनी झलक देते हैं, परंतु स्त्री विमर्श के ढोल नगाड़े पीटते हुए शब्दों में नहीं बल्कि यह अभिव्यक्ति एक सरल व सहज स्त्री की है जो अपने अस्तित्व में संपूर्ण है। स्त्री के संदर्भ में प्रगतिशील सोच के कारण इनका काव्य आधुनिकता के ज्यादा निकट है। स्त्री की दुख आकांक्षा और पीड़ा को स्वर देने के बावजूद भी इनकी रचनाओं में कहीं भी हीनता या कुंठा की झलक हमें नहीं मिलती है। वह कहती है -

ना पूजे पत्थर
ना पूजे चित्र
ना पूजे भाव
पूजा कर ली अपनी ही
फिर
मिटे उसी क्षण
जीवन भर के सभी शाप
(चांदनी चुनर संग्रह से पृ0 85)

स्त्री की पीड़ा उसकी संवेदना बिना किसी विमर्श के शकुंत जी बड़ी सहजता से ही प्रेषित कर देती हैं। इनकी रचनाओं में स्त्री एक साधारण स्त्री है जो अपने मुक्ति का शोर नहीं करती है बल्कि बड़ी सहजता से इस समाज को अपनी स्थिति बताती है। यह सहजता और सरलता ही शकुंत जी की विशेषता है। वह कहती हैं -

मैं टूट गई हूं
तुम्हारी नजर में
नहीं मैं
बंट गई हूं
मैं अपने स्वरूप को
पूरा नहीं देख पाती हूं
जान लेती हूं टुकड़ों में
मैं कट गई हूं
(तुम्हारी नजर में : अभी और कुछ काव्य संग्रह, पृष्ठ 19)

एक मध्यवर्गीय सामान्य स्त्री जो जीवन को संपूर्णता में जीना चाहती है। अपनी स्वतंत्रता, अपनी मुक्ति, अपने प्रेम में वह समग्र है और इसमें उसे किसी का दखल मंजूर नहीं है। जीवन को भोगना और जीवन के प्रति गहरी आस्था शकुंत की रचनाओं में देखने को मिलती है -----

जी लेने दो मुझे
वह पूरा अर्थ
जो मेरे लिए सच्चा है
रख लेने दो मुझे
वही मेरे पास
जो नितांत मेरा अपना है
(जी लेने दो : लहर नहीं टूटेगी काव्य संग्रह, पृष्ठ 1)

इनकी रचनाओं में हमें मन की विभिन्न पर्तों का आकलन और विश्लेषण प्रचुरता में देखने को मिलता है। इनकी कविताओं में एलिस, फ्रह्यड आदि का प्रभाव दिखता है। कांच, खोखर, अर्थ, तुमसे भी ज्यादा इत्यादि कविताएं इसकी प्रामाणिक साक्ष्य हैं।

एक साधारण मनुष्य का संघर्ष, जिजीविषा, उसकी शक्ति शकुंत जी की कविताओं की केंद्रीयता है। इनकी रचनाओं में अनकहा कुछ भी नहीं है हां सांकेतिकता अवश्य है। शकुंत जी की प्रेम परक रचनाओं में छायावादी रूमानियत नहीं है और ना ही नई कविता के समान तल्ख अभिव्यक्ति है। वास्तव में इनकी प्रेमपरक कविताओं में मन की पर्त ज्यादा उभर कर आई है। प्रेम का सहज रूप हमें इनकी

रचनाओं में देखने को मिलता है। वह कहती हैं -

तुम्हें
यदि कुछ मिला हो तो
स्वीकार लेना
जिए हुए साथ साथ
दुख सुख के क्षणों में से
कोई भी क्षण
फूल सा मेरी समाधि पर
गिरा देना
(समाधि कविता : अभी और कुछ काव्य संग्रह पृष्ठ 28)

इन्होंने अपनी कविताओं की शैली में नवीन प्रयोग किए हैं जो तत्कालीन समय में नहीं पाए जाते हैं, जैसे उलट बांसी का प्रयोग, फेंटेसी शिल्प का प्रयोग, ग्राम प्रतीकों का प्रयोग इत्यादि। इनकी एक कविता है विपर्यय की दुनिया जिसमें वह स्पष्ट रूप से लिखती हैं कि यह उलटबांसी का प्रयोग है। शकुंत जी ने अपनी रचनाओं में धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक इत्यादि अनेक प्रकार के प्रतीकों का उपयोग किया है।

अभी और कुछ संग्रह की कविताओं में जीवन के मधुर पक्ष, सौंदर्य, प्रेम और प्रकृति की रचनाएं हैं। यह रचनाएं माननीय प्रेम, मानवीय संवेदना और जीवन के प्रति आसक्ति का रसास्वादन कराने वाली रचनाएं हैं। प्रेम की यह नवीन भूमि शकुंत जी के काव्य क कोमल पक्ष प्रस्तुत करती हैं ---

आओ
भीतर इसके झरना है
बहुत से मंदिर भी
देवता भी
सोचा चलूं
दर्शन कर लूं

अपनी रचनाओं से हिंदी साहित्य को व्यापक फलक देने वाली शकुंत माथुर की जन्म शताब्दि पर उन्हे नमन है। गिरिजा कुमार माथुर की जन्म शताब्दि मनाने वाले लोग शकुंत माथुर पर मौन है। स्त्री रचनाकारों की उपेक्षा का इससे बड़ा प्रमाण और क्या होगा।

डॉ0 शुभा श्रीवास्तव
प्रवक्ता
राजकीय क्वींस कालेज
वाराणसी (9455392568)

सतगुरु नानक प्रगट्या, मिट्टी धुंध जग चानन होया..

"World Peace begins with inner peace....."

Dalai Lama

साहित्यिक गलियारे गवाह हैं कि शांति के अग्रदूत हिंसकों के महलों में गुलामी नहीं किया करते...।

'विश्व शांति' की संकल्पना (Concept) के जन्म के साथ ही इसके प्रतिपक्ष का भी निर्माण हो चुका था। वै.श्विक इतिहास टटोलकर देख लीजिए। यह **फ्रेडरिक नीत्शे** **[Friedrich Nietzsche]** (1844-1900) तथा **विल्फ्रेडो पैरेटो** [Vilfredo Pareto] (1848-1923) जैसी **'विभूतियों' (व्यंग्य)** से अटा पड़ा है।

वैसे ... ज्ञान-गंगा से आप्लावित कोई भी मनीषी इन 'विभूतियों' **(व्यंग्य)** के **तआरूफ़** का मोहताज़ नहीं है। "God is dead" के जुमले से प्रकाश में आया वह जर्मन दार्शनिक, जहाँ युद्ध को महिमामंडित करने का पक्षधर था वहीं दूसरी तरफ इसका समकालीन **विल्फ्रेड पैरेटो 'ताकत के हिंसक इस्तेमाल'** का घोर पक्षधर! परिणामतः इतिहास **फ़ासीवाद, नाजीवाद** की पीढ़ियों पर चढ़कर अंततः विश्व युद्ध ;World War) की प्रचंड विभीषिका अपनी सहमी आँखों से देखता है।

परिणामस्वरूप, एक **आण्विक हमले** मात्र से मौत ताण्डव करती हुई आती है और स्थान **(हिरोशिमा तथा नागासाकी)** से **९५ प्रतिशत** मूल निवासियों को अपने आग़ोश में समेट ले जाती है।

एदिता मॉरिस ;Edita Morris) का उपन्यास **'हिरोशिमा के फूल'** ;The Flowers of Hiroshima) इसका जीवट साहित्यिक दस्तावेज़ है।

भारतीय संविधान हमारा श्रेष्ठ विधि दस्तावेज़ है। इसके उल्लेखानुसार हमें **मौलिक अधिकारों** के तहत **'समानता का अधिकार' (अनु. १४ से १८ तक)** तो उपलब्ध करा दिया गया किंतु खेद इस बात का रहा कि वर्तमान समय में भी **'अनुच्छेद-१५' (धर्म, वंश, जाति, लिंग और जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव रहित समाज)** तथा **अनुच्छेद-१७ (अस्पृश्यता का अंत)** अंशतः निष्प्रभावी ही अधिक नज़र आते हैं।

"मैं" साहित्यिक चिंतन के मोह से बंधा होने के कारण इस बात को कहने से कदापि गुरेज़ नहीं करता कि भारतभूमि इस प्रकार के आदर्शों से प्रत्येक युग एवं काल में परिपूरित रही है। यह हमारे गर्व का हेतु भी है।

संत गुरु नानक देव इस रूप में सिरमौर हैं।

भारतीय इतिहास में **तैमूरी राजवंश** के संस्थापक **तैमूरलंग (१३३६-१४०५)** द्वारा किए गए हिंदुओं के जनसंहार से साधारण जनता के हृदय पर भय **चस्पा** हो गया था।

इस माहौल को देखकर **संत शिरोमणि रामानंद (१४१० ई.)** के समस्त शिष्यों एवं विभिन्न वर्गीय योगियों ने **"संसार त्याग"** की भावना को प्रमुखता दी।

तत्पश्चात्; **लोदी वंश** के द्वितीय शासक **सिकंदर लोदी (१४८६-१५१७)** जैसे धर्मांध शासक ने जीवन के अंतिम वर्षों तक सिक्खों पर क्रूरता बरपाने का प्रयास किया। इन परिस्थितियों से आहत होकर गुरु नानक देव कहते हैं -

"कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिया।
कूड़ु अमावस सचु, चन्द्रमा
दीसै नाहीं कह चड़िआ।।"

अर्थात्; कलियुग एक छुरी के समान है जहाँ **शासक** बूचड़ बन चुके हैं। **धर्म** पंख लगाकर उड़ गया है। **झूठ**-असत्य की भयानक काली रात का अखंड शासन जग चुका है और **सत्य** का चंद्रमा कहीं भी उदय होता दिखाई नहीं देता।

गुरु नानक देव द्वारा **विश्व शांति** की स्थापना हेतु समाज के **दमित वर्ग** के उद्धार हेतु जीवट प्रयास किए गए - **"स्त्रियों का उद्धार"** इनमें प्रमुख था। यह प्रमुख कारण भी था कि **सय्यदपुर** में मुसलमान स्त्रियों के साथ किए गए दुर्व्यवहार का वह प्रखर विरोध करते नज़र आते हैं। जिसे **स्वामी दयानन्द** ने विश्व प्रसिद्ध कृति **"सत्यार्थ प्रकाश"** में इस रूप में बानगी प्रदान की -

"यह सच है कि जिस समय नानक जी पंजाब में हुए थे, उस समय पंजाब संस्कृत विद्या से सर्वथा रहित, मुसलमानों से पीड़ित था। उस समय उन्होंने लोगों को बचाया।"

- (सत्यार्थ प्रकाश, हिंदी संस्करण, पृ. ३७८)

परिणामस्वरूप; शीघ्र ही **गुरु नानक देव** समस्त **उत्तरी भारत के लोकप्रिय नेता** के रूप में उभरकर सामने आते हैं।

गुरु नानक जी, देव प्रेम के महात्मय पर विशेष ज़ोर देकर कहते हैं -

'जउ तउ प्रेम खेलण का चाऊ।
सरू धरि तली गली मेरी आउ।।"

- (आदि ग्रन्थ, पृ. १४१२)

अर्थात्; यदि तुम सचमुच प्रेम का खेल खेलना चाहते हो, तो सर हथेली पर रख कर आओ, तभी तुम मेरे सत्य के रास्ते पर पग बढ़ा सकते हो।

एक **अष्टपदी (राग गौड़ी, पृ. २२३)** में **गुरु नानक देव** कहते हैं -

"राह दोवै खसमु एको जाणु।"

अर्थात्; पथ बेसक दो हों किंतु ईश्वर तो एक ही हैं।

मि. हाल्ड वीरम वोल्टर अपनी पुस्तक **"सिखिज़्म लिविंग स्कूल्ज़ ऑफ रिलीजन"** में लिखते हैं -

"गुरु नानक ने कठोर साम्प्रदायिकता और जातिगत अलगाव का घोर विरोध किया।" वह निम्न तथा दलित-वर्ग से अपना संपर्क बनाए रखने में गर्व अनुभव करते रहे -

"नीचा अन्तरि नीच जाति, नीचीहू अति नीचु
नानकु तिनकै संगि साथि, वडिआ सिउ किआ रीस।"

- (श्री राग, पृ. १५)

अर्थात्; नानक ऐसे लोगों के सदैव संग हैं। ऊँचे लोगों के साथ कोई संबंध या उनके साथ कोई तुलना नहीं है।

गुरु नानक देव ने **विश्व-शांति** की प्राप्ति हेतु पथ की बाधा (सामाजिक विषमता) का पुरज़ोर खण्डन किया -

"भ्रम का संगलु तोड़ि निराला,
हरि अन्तरि हरि रसु पाइआ।"

अर्थात्; भ्रम तथा अन्धविश्वासों की कड़ियाँ निराले ढंग से तोड़ दी गई हैं- यह ज्ञान प्राप्त करें कि ईश्वर तो सर्वदा हृदय में ही स्थित हैं।

वह पुनः कहते हैं -

"नानक उत्तमु नीचु न कोइ।" - (जपुजी साहब, पद ३३)

(नानक कहते हैं कि सभी उत्तम हैं, यहाँ नीच तो कोई है ही नहीं।)

'मोक्ष' की लालसा प्रायः आधुनिक मानव के मोह का विषय बनी हुई है। वह बिना कर्म के ही इसे प्राप्त कर लेना चाहता है। **गुरु नानक देव** कहते हैं। यदि व्यक्ति ईश्वर के नाम का जाप करे तो मोक्ष की प्राप्ति होती है -

"मुक्ति महासुख गुर सबदु बीचारि।" - (आदि ग्रंथ, ६४२)

स्मरण रहे... **जपुजी के चौदहवें पद** में वह स्पष्ट शब्दों में कहते हैं -

"**बुद्धिमान** व्यक्ति कभी भी साम्प्रदायिकता के घेरे में नहीं बंधता क्योंकि उसका सच्चा संबंध धर्म के साथ है।"

अपनी एक अन्य रचना में **नानक** देव लिखते हैं -

"जेते जिआ तेते बाटानु"

सांस्कृतिक ऐक्य की धरा पर गुरु नानक देव के प्रयासों का समस्त विश्व साक्षी रहा है।

जॉन मैलकॉम ;John Malcolm) को अपनी पुस्तक **"स्कैच ऑफ दी सिख्ज (Sketch of the Sikhs)** में लिखना पड़ा -

"ब्रह्म तथा मुहम्मद के एकदम प्रतिकूल विश्वासों में समत्व स्थापित करने की महान् तथा उपकारक भावना से प्रेरित होकर नानक ने हिंदुओं तथा मुसलमानों को अपने सिद्धांतों के झण्डे तले एकत्र करने का प्रयास किया। इस प्रयास में उन्होंने दोनों पक्षों को अपने-अपने विश्वासों तथा रिवाजों के उन अंशों को त्यागने के लिए प्रेरित किया जिन्हें वह उनके पूज्य ईश्वरों के प्रति अशोभनीय समझते थे।"

'Secularism' **(धर्मनिरपेक्षता)** की चर्चा ज़ोरों पर होती है। उसके सात्विक रूप को गुरु नानक देव पूर्णतः अपनी कृतियों पर चस्पा करते नज़र आते हैं। उनका दृष्टिकोण इतना उदार था कि उन्होंने अपनी रचनाओं में ईश्वर के इस्लामी संबोधनों का खुला प्रयोग किया।

यथा –

"अलाहु, अलखु, अंगम, कादरू, करणहारू, करीमु।
सम दुनी आवण-जावणी, मुकामु एकु रहीमु।।"
– (आदिग्रंथ, पृ. १४२)

'शांति के दूत' गुरु नानक देव **घोर नास्तिक 'फ्रेडरिक नीत्शे'** ;Friedrich Nietzsche) कथित **'सुपर ह्यूमन'** ;Super Human) की अपेक्षा **"गुरमुख आदर्श-पुरुष"** का आदर्श विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं –

**'सुख-दुखु जिह परसे नहीं लोभ, मोह, अभिमानु।
कहु नानक सुन रे मना, सो मूरत भगवान।।"**

अतः वर्तमान समय में वैश्विक शांति सूचकांक (Global Peace Index 2019-GPI) संसार के १६३ देशों की दृष्टि अमुक संक्रमित मुद्दों की तरफ आकृष्ट कर रही है –

- **सामाजिक सुरक्षा।**
- **आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा।**
- **राजनीतिक त्रासदी।**

इसके समाधान स्वरूप **'विश्व-शांति के अग्रदूत'** गुरु नानक देव नवीन सेतू की सर्जना करते नज़र आते हैं –

**"फूटो आंडा भरम का मनहिं अइओ परगासु।
काटी वेरी पगह ते, गुरि कीनी बंदि खलासु।"''– (आदि ग्रंथ)**

(अर्थात्; भ्रम का अण्डा फूट गया है। मन में प्रकाश व्याप्त हो गया है। गुरु ने पांव की बेड़ियाँ काट दी हैं और मन समस्त बंधनों से मुक्त हो चला है।)

निःसंदेह, विश्व शांति के आदर्शों में **गुरु नानक देव** का स्थान श्रेष्ठ पद का अधिकारी है...।

विवेक शर्मा

'शोभना फिल्म फेस्टिवल 2020 का हुआ सफल आयोजन'

'देश भर से आयीं थीं प्रविष्टियाँ'

शोभना वेलफेयर सोसाइटी, दिल्ली के तत्वावधान में 'शोभना फिल्म फेस्टिवल-2020' का आयोजन सफल रहा। फेस्टिवल के संस्थापक एवं निदेशक सुमित प्रताप सिंह ने बताया कि शोभना वेलफेयर सोसाइटी रजि., दिल्ली ने 'शोभना फिल्म फेस्टिवल-2020' के नाम से पहला फिल्म फेस्टिवल आयोजित किया है। इस फिल्म फेस्टिवल का आयोजन ऑनलाइन किया गया। इसमें पूरे देश से प्रविष्टियाँ आयीं। इस फेस्टिवल में भाग लेने का कोई शुल्क नहीं रखा गया था।

फेस्टिवल की चयन समिति में क्रमशः डॉ. रमाजय शर्मा (जापान), सुमि लोहानी (नेपाल), सुमंत विद्वान्स (संयुक्त राज्य अमरीका), गुलशन कुमार (इटावा, उत्तर प्रदेश) गौरव त्रिपाठी (हल्द्वानी, उत्तराखंड), अमिय भानु ढल (उड़ीसा) सम्मिलित रहे तथा निर्णायक की भूमिका क्रमशः अशोक मेहरा (उत्तर प्रदेश), डॉ. प्रीति प्रवीण खरे (भोपाल, मध्य प्रदेश) एवं भरत शितोले (मुंबई, महाराष्ट्र) ने निभाई।फिल्मों का श्रेष्ठ फिल्म, श्रेष्ठ निर्देशक, श्रेष्ठ कहानी, श्रेष्ठ अभिनेता व अभिनेत्री, श्रेष्ठ संगीतकार, श्रेष्ठ बाल-बालिका कलाकार, श्रेष्ठ छायांकन इत्यादि वर्गों में प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणियों में चयन किया गया व उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

'शोभना इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (ऑनलाइन) का परिणाम' (हिंदी में)

***बेस्ट फिल्म**

1- शुद्धि
2- बलरामपुर टू बॉलीवुड
3- एक इडियट

***बेस्ट डायरेक्टर'**

1- सौमित्रा कुमार - शुद्धि
2- सनोज मिश्रा - बलरामपुर टू बॉलीवुड
3- दीपक टम्टा - तांडव

***बेस्ट एक्टर'**

1- रौनक मिश्रा - बलरामपुर टू बह्लीवुड
2- आशिक - फरेब
3- सर्वत नियाजी - मैं हूं जिहादी

***बेस्ट एक्ट्रेस'**

1- नाज - शुद्धि
2- सूफी रेजी - बलराम टू बह्लीवुड
3- रवीना बिश्नोई - आजादी के आँसू

***बेस्ट चाइल्ड एक्टर'**

1- हीरो - आइडेंटिटी
2- रुविन - लिटिल स्टार
3 दिनेश कुमार - माउथ अहर्गन

***बेस्ट फीमेल चाइल्ड'**

अंशिका शेखावत - रागा

***बेस्ड स्टोरी राइटर'**

1. सौमित्र कुमार - शुद्धि
2- सतीश कुमार - राघव
3- आनंद प्रकाश - आजादी के आँसू

***बेस्ट सिनेमेटोग्राफर'**

1- अनुपम शुक्ला - बलरामपुर टू बह्लीवुड
2- मिर्जा आमीन बेग - पेंट
3- ओंकार मने व दीपक टम्टा - रागा

***बेस्ट एडीटीर्स'**

1- सरवत नियाजी - मैं हूं जिहादी
2- रुशि नरेश दवे - माई मेट्रो मिस्ट्री - टकटकी
3- रोहित राजपूत - कलाकार अंडर कंस्ट्रकशन

***बेस्ट म्यूजिक'**

1- अभिनव पाण्डेय, दीपक टम्टा व रोहित राजपूत - तांडव
2- रोहित राजपूत - कलाकार अंडर कंस्ट्रक्शन
3- एंटरटेनमेंट मेकर्स - मैं हूं जिहादी

***बेस्ट एक्टर इन नेगेटिव रोल'**

1- रोहित राजपूत - आई विश
2- अमित सोनी - शुद्धि
3- दीपक प्रकाश - सहरी अम्मा

***बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर'**

1- मनीष कुमार - शुद्धि
2- भगवान सिंह परिहार - राघव
3- अतुल लंगया - आजादी के आँसू

***बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस'**

1- पूनम चावला सहरी अम्मा

***डॉक्यूमेंट्री फिल्म्स'**

1- अर्धशक्ति
2- फिशरमैन ऑफ वर्सोवा
3- होमलेस कर्स

***बेस्ट कोरियोग्राफर'**

ज्योति सोनी फिल्म कैथार्सिस

***बेस्ट एक्सपेरिमेंट फिल्म'**

कैथार्सिस

मन से बचपन नहीं गया है

असली के चक्कर में नकली
माल बाँधकर घर को लाते ।
छायी देख सफेदी ऊपर
लोग हमेशा शीश झुकाते ॥

सेविंग कर गालों पर अपने
महंगे -महंगे लेप सजाते ।
हैं तो नकली फिर भी अपने
बिन बोले ही दाँत दिखाते ,
गंजे सिर के ऊपर अक्सर
काला -काला रंग लगाते । ।

तन से उम्र ढली है लेकिन
मन से बचपन नहीं गया है ।
बनकर घूमे छैलबिहारी ,
मानो यौवन नया -नया है ।
युवती के सिर अपने दोनों
धीरे -धीरे हाथ घुमाते ॥

बाहर से है धवल चाँदनी
पर अन्दर मावस की रातें ।
सुना रहे हैं अपनी बीती
झूठी सच्ची सारी बातें ।
पतझड़ का मौसम है फिर भी
घोर बसंती तीर चलाते ॥

डॉ जयप्रकाश मिश्रा
गाजियाबाद(उ प्र)

दीप जलाने आ जाना

मेरे मन के इस दीपक को
तुम आज जलाने आ जाना ।
जैसे भी सम्भव हो तुमको
तुम उसी बहाने आ जाना ॥

माना की हूँ खंडर जैसा
पर काम सभी के आता हूँ ।
जो जन जैसा कहते मुझको
मैं वैसा ही बन जाता हूँ ।
मेरे इस सूने आँगन में
तुम फूल चढ़ाने आ जाना ॥

जो छुपी हुई है घूँघट में
कल जाने भीत कहाँ होगी ।
हृदय में राज तमस का तो
आभा की ज्योति कहाँ होगी ॥
वीराने पनघट के तट पर
तुम गीत सुनाने आ जाना ॥

उन विगत दिनों की आभा को
मैंने ही पल -पल देखा है ।
कितने ही राजघरानों को
आते औ जाते देखा है ।
मेरे अंतस में छुपे हुए
तुम राज बताने आ जाना ॥

जैसे भी सम्भव हो तुमको
तुम उसी बहाने आ जाना ॥

• **डॉ जयप्रकाश मिश्रा**
गाजियाबाद(उ प्र)

बन सौरभ तू बुद्ध !!

मतलबी संसार का, कैसा मुख विकराल !
अपने पाँवों मारते, सौरभ आज कुदाल !!

सिमटा धागा हो सही, अच्छे है कम बोल !
सौरभ दोनों उलझते, अगर रखे ना तोल !!

काँप रहे रिश्ते बहुत, सौरभ हैं बेचौन !
बेरूखी की मार को, झेल रहें दिन-रैन !!

जहर आज भी पी रहा, बनता जो सुकरात !
कौन कहे है सत्य के, बदल गए हालात !!

दिला गयी है ठोकरें, अपनों का अहसास !
सौरभ कितने साथ है, कितने खासमखास !!

होते कविवर कब भला, वंचित और उदास !
शब्दों में रस गंध भर, संजोते उल्लास !!

विचलित करते है सदा,मन मस्तिक के युद्ध !
अगर जीतना स्वयं को, बन सौरभ तू बुद्ध !!

✍ - **डॉ सत्यवान सौरभ,**
कवि,स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार,

भिखारी

हाथ में लेकर कटोरा,मांगता वह भीख है।
भूख से लाचार दिखता,दे रहा कुछ सीख है।।
कह रहा कुछ भी कहाँ वह,बस रहा वह चीख है।
बस उदर की तृप्ति खातिर,कर रहा वह कीक है।।

फट गये परिधान उसके,गंदगी की छींट है।
उठ रही दुर्गन्ध तन से,पर जमा वह ढीठ है ।।
रंग काला हो गया है, आँख उसकी पीत है।
देह में हड्डी बची बस,पेट में ही पीठ है।।

रोटियों की याचना में ,डालता वह दीठ है।
गर न मिलती रोटियाँ है, वह सुनाता झीख है।।
नहीं चहिए राजगद्दी,ना बनानी पीठ है।
पेट भरने के लिए ही,बन गया वह नीच है।।

अमिताभ पाण्डेय
सर्वोदय किसान पीजी कालेज
कौड़ीराम गोरखपुर ।

हौसला

क्षितिज की ओर जब जब देखूँ
प्रकृति और भी रोचक सी लगे
जिन्दगी सीमाओं में बाधित नहीं
प्रकृति दायरों में सीमित नहीं
तकदीरें हवाओं में लिखी जाती हैं
सपने बंद दरवाजों में भी
आसमानों की उड़ान भरते हैं
सागर भी नापे , धरा भी तोली जाती है
होंसलों में होती जान जब , नभ भी सध जाते हैं
मन की शक्ति ,दिल की सच्चाई हो साथ अगर
तो नामुमकिन भी मुमकिन हो जाते हैं

ज्योति

गांधी तेरे देश में

बड़े बड़े घड़ियाल पड़े हैं
धन से मालामाल बड़े है
लूट रहे हैं रोज देश को
नित्य नए गणवेश में ।। गाँधी तेरे ......

चोरी या पाकिटमारी है
घोटालों की बीमारी है
बात बात में पैसा चाहिए
सरकारी निवेश में ।। गाँधी तेरे ...

कोई आता धमका जाता
नेताओं को दिल्ली भाता
निंदा फिर कड़ी ही करते
संसद वाले केस में ।। गाँधी तेरे ......

राहजनी और हिंसा होती
कड़वाहट के बिरवा बोती
ऊँच नीच भी छुआ छूत भी
धर्म जाति के रेस में ।। गाँधी तेरे ......

भाषण और भड़ैती होती
दिन में रोज डकैती होती
इज्जत की ही बोली लगती
दिल्ली के परिवेश में ।। गाँधी तेरे ......

हिन्दू मुस्लिम बात पुरानी
पीकर घाट घाट का पानी
नियम बनाते सांसद आकर
बापू तेरे भेष में ।। गाँधी तेरे ....

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
गाजियाबाद

अंतरराष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता में श्रीमती रितु कुलश्रेष्ठ रही प्रथम

चीफ जूरी डॉ.आलोक सोनी ने किया रिजल्ट घोषित

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त "साहित्य समाचार" के संरक्षक इंद्रजीत शर्मा (अमेरिका), अध्यक्ष कपिल कुमार (बेल्जियम), उपाध्यक्ष रमा शर्मा (जापान), महासचिव विनोद पाण्डेय (भारत) द्वारा, संपूर्ण विश्व के हिंदी प्रेमियों से , अभिव्यक्ति भावनाओं की पारिवारिक विषयों पर, अंतरराष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता में, ३१दिसम्वर २०२० तक स्वरचित कविता की वीडियो बनाकर, सभी कवियों से अपनी प्रविष्टि निशुल्क भेजने हेतु आग्रह किया गया था । जिसमें चीफ जूरी सदस्य के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हिंदी विद्वान डॉ आलोक सोनी (भारत) को रखा गया और अन्य जूरी सदस्य के रूप में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विचारक तुफेल अहमद (ओमान) ,श्रीमती सरोज सिंह परिहार (भारत), श्रीमती पूनम के सूजीबेन (मॉरीशस), डॉ.कामराज गुरूजी (भारत) को रखा गया था । इस प्रतियोगिता में ३ देशों की हिन्दी के १२७ कवियों ने अपनी प्रविष्टियां भेजी । सम्मानीय चीफ जूरी डॉ. आलोक सोनी ने,सभी सम्मानीय जूरी सदस्य तुफेल अहमद , श्रीमती पूनम के सूजीबेन, डॉ सरोज सिंह परिहार के द्वारा दिये गये निर्णय का मिलान करके ,सर्वसम्मति से बने निर्णय को आज अपना बीडियो बनाकर रिजल्ट घोषित किया। अन्तर्राष्ट्रीय कविता प्रतियोगिता में निम्न प्रतिभागी निम्नानुसार स्थान पर रहें-

(१) **श्रीमती रितु कुलश्रेष्ठ** फरीदाबाद (हरियाणा) **प्रथम पुरस्कार**
(२) श्री विष्णु बाजपेई ,कटनी (मध्य प्रदेश) **द्वितीय पुरस्कार ,**
(३) श्रीमती मोनिता मलिक (दिल्ली) **तृतीय पुरस्कार**

क्रमशः श्रेष्ठ दस सांत्वना पुरस्कार

(१) प्रदीप मिश्रा लखनऊ (उ.प्र.),
(२) श्रीमती नीति उपरित भोपाल (मध्य प्रदेश),
(३) श्रीमती आशा ज्योति ,गाजियाबाद (उ.प्र.),
(४) श्रीमती सरिता बाजपेई ,शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश),
(५) डॉ शीला गोयल ,रामपुर (छत्तीसगढ़),
(६) श्रीमती सरला भारद्वाज ,आगरा (उत्तर प्रदेश),
(७) सचिन राणा हीरो , हरिद्वार (उत्तराखंड),
(८) अनिल मिश्रा ,रांची (झारखंड),
(९) श्रीमती कमलेश सूद, पालमपुर (हिमाचल प्रदेश) ,
(१०) डॉ.सोनी प्रसाद , सोनीपत (हरियाणा),

को चयनित किया गया ।

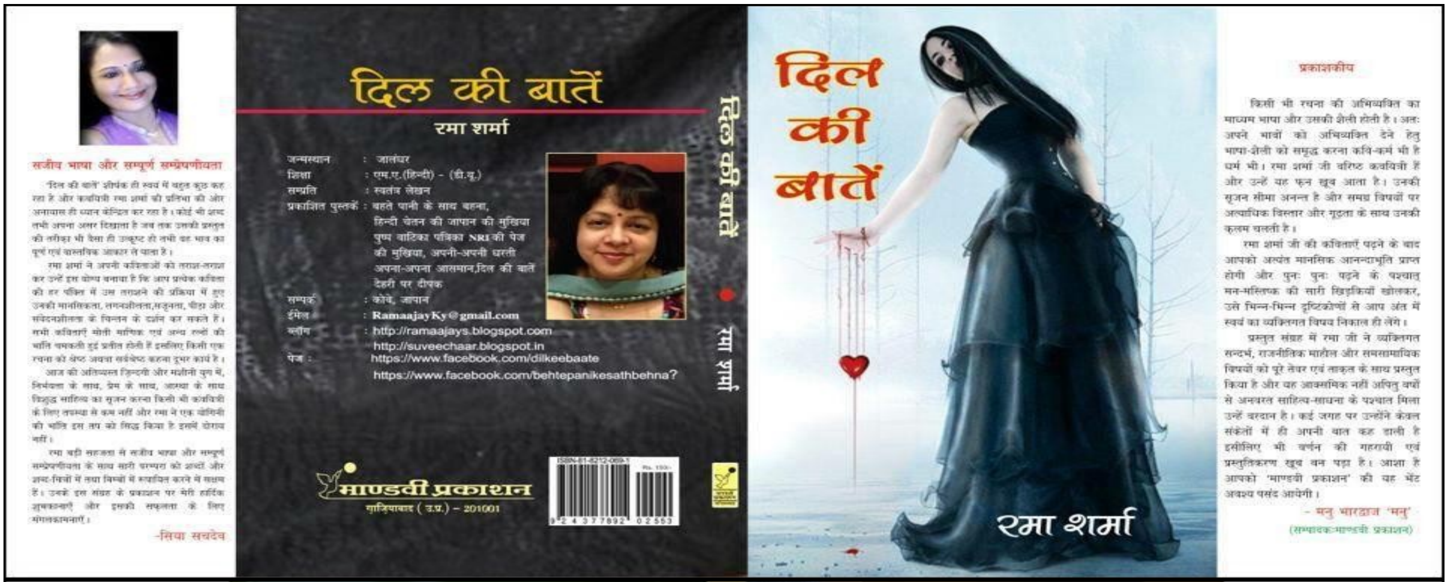

दिल की बातें
रमा शर्मा
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
ISBN-81-8212-069-1
प्रकाशकीय

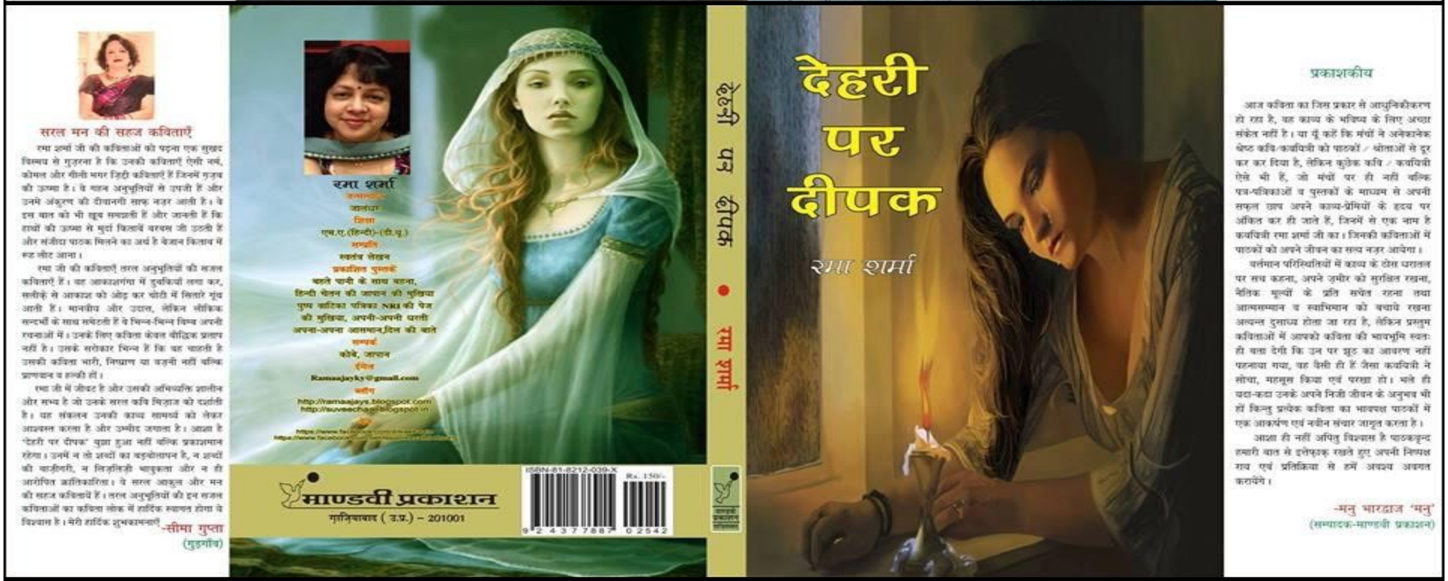

देहरी पर दीपक
रमा शर्मा
सरल मन की सहज कविताएँ
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
ISBN-81-8212-039-X
Rs. 150/-
प्रकाशकीय

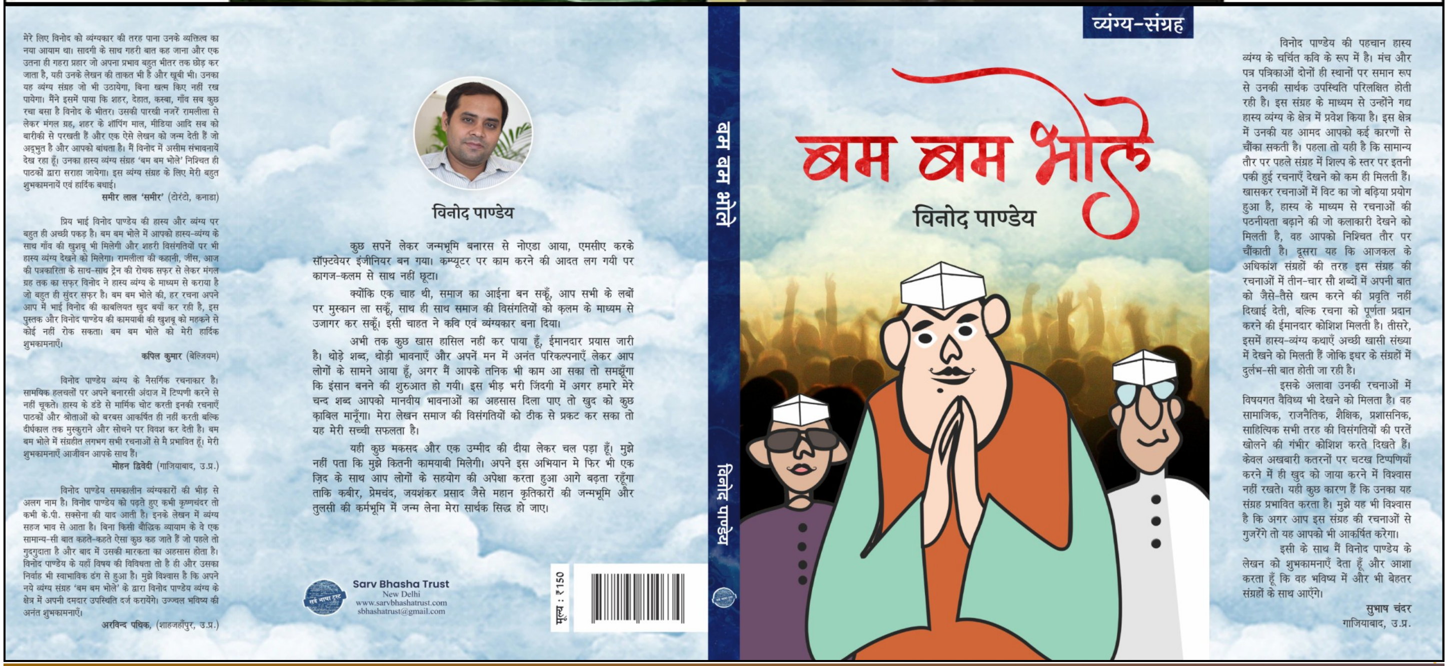

व्यंग्य-संग्रह
बम बम भोले
विनोद पाण्डेय
विनोद पाण्डेय
कुछ सपनें लेकर जन्मभूमि बनारस से नोएडा आया, एमसीए करके सॉफ़्टवेयर इंजीनियर बन गया। कम्प्यूटर पर काम करने की आदत लग गयी पर कागज-कलम से साथ नहीं छूटा।
क्योंकि एक चाह थी, समाज का आईना बन सकूँ, आप सभी के लबों पर मुस्कान ला सकूँ, साथ ही साथ समाज की विसंगतियों को क़लम के माध्यम से उजागर कर सकूँ। इसी चाहत ने कवि एवं व्यंग्यकार बना दिया।
अभी तक कुछ खास हासिल नहीं कर पाया हूँ, ईमानदार प्रयास जारी है। थोड़े शब्द, थोड़ी भावनाएँ और अपनें मन में अनंत परिकल्पनाएँ लेकर आप लोगों के सामने आया हूँ, अगर मैं आपके तनिक भी काम आ सका तो समझूँगा कि इंसान बनने की शुरुआत हो गयी। इस भीड़ भरी जिंदगी में अगर हमारे मेरे चन्द शब्द आपको मानवीय भावनाओं का अहसास दिला पाए तो खुद को कुछ क़ाबिल मानूँगा। मेरा लेखन समाज की विसंगतियों को ठीक से प्रकट कर सका तो यह मेरी सच्ची सफलता है।
यही कुछ मकसद और एक उम्मीद की दीया लेकर चल पड़ा हूँ। मुझे नहीं पता कि मुझे कितनी कामयाबी मिलेगी। अपने इस अभियान मे फिर भी एक ज़िद के साथ आप लोगों के सहयोग की अपेक्षा करता हुआ आगे बढ़ता रहूँगा ताकि कबीर, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद जैसे महान कृतिकारों की जन्मभूमि और तुलसी की कर्मभूमि में जन्म लेना मेरा सार्थक सिद्ध हो जाए।
Sarv Bhasha Trust
New Delhi
www.sarvbhashatrust.com
sbhashatrust@gmail.com
मूल्य : ₹150

हिन्दी की गूँज

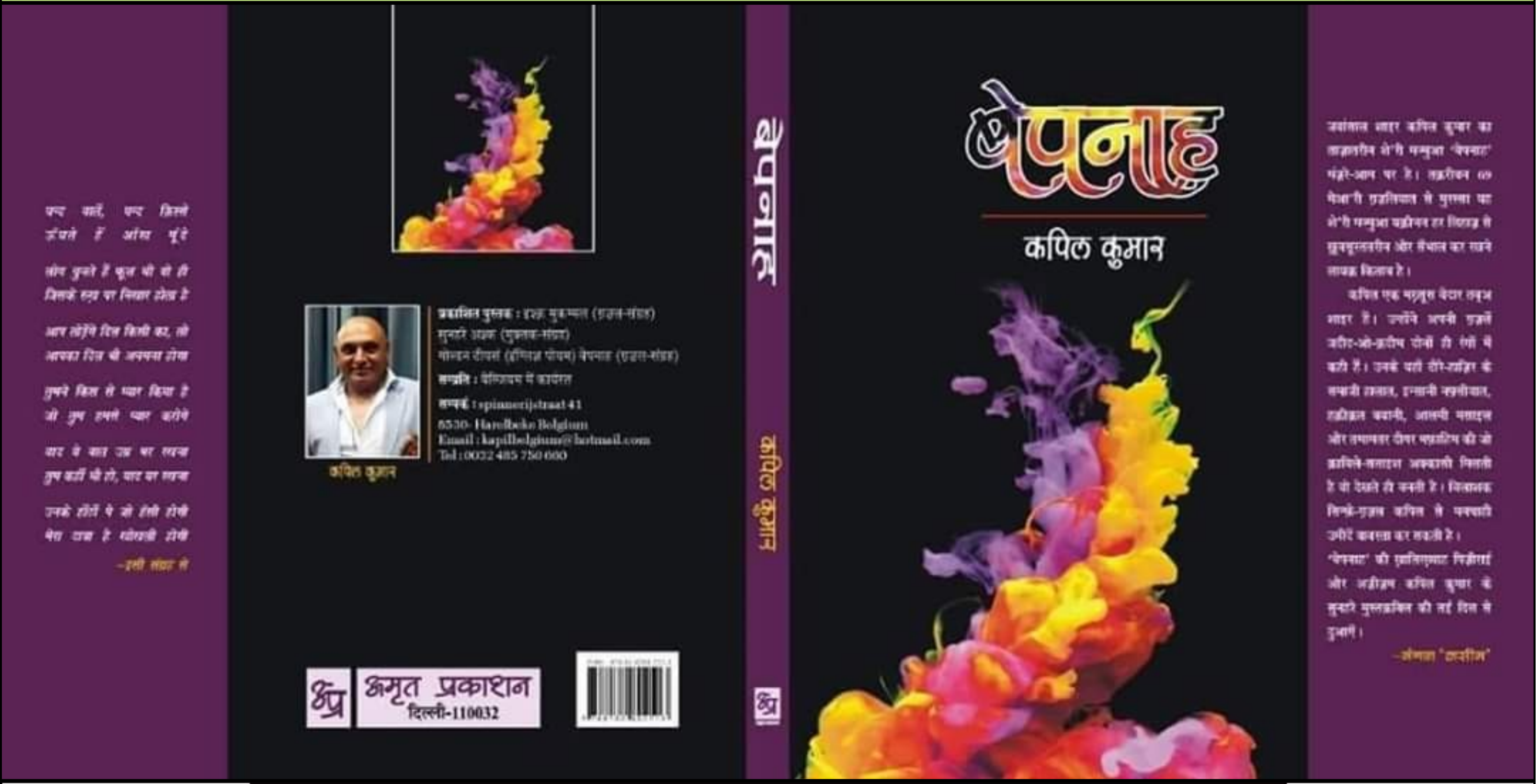
बेपनाह
कपिल कुमार
बेपनाह
कपिल कुमार
कपिल कुमार
अमृत प्रकाशन
दिल्ली-110032

प्रकाशकीय
हिन्दी साहित्य की सशक्त कवयित्री आदरणीया रमा शर्मा जी द्वारा सम्पादित यह संग्रह 'अपने-अपने सपने' माण्डवी प्रकाशन द्वारा उनकी तीसरी सफ़ल भेंट है। इससे पूर्व 'अपना-अपना आस्मान' एवं 'अपनी-अपनी धरती' को प्रबुद्ध पाठकों ने केवल सराहा बल्कि अपनी अपार शुभकामनाओं से भी सराबोर किया।
प्रस्तुत संकलन की कई कविताएँ आत्मपरक हैं और कवयित्रियों की सहज मानवीय अनुभूतियों को प्रतिबिम्बित करती हैं, इनमें भी है दार्शनिकता और वैचारिकता भी परिस्थितियों का तथा बदली मानसिकता का आदर्शीकरण भी है। ये दैनिक जीवन के आत्मीय संस्पर्शों की अभिव्यक्ति हैं, जो विभिन्न कारकों से दूषित होते जा रहे हैं। यह मानवीय दृष्टिकोणों को दृष्टि के समक्ष रखकर लिखी गई हैं। इन कविताओं की सार्थकता भी इसी में है कि ये कवयित्री के मनोभानों से विदित होकर समाज के हित में सोचने पर विवश करें।
हमें आशा ही नहीं वरन् विश्वास है कि हमेशा की तरह इस बार भी पाठकवृन्द अपनी अमूल्य राय एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करायेंगे।
-मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादकः माण्डवी प्रकाशन)
editormandviprakashan@gmail.com
नीलम स्वर्णकार
मीनाक्षी सुकुमारन
पूनम माटिया
सखी सिंह
आशा शर्मा डोहरू
मनीषा जोशी
सुमन मलिक तनेजा
वंदना दुबे
बबली वशिष्ठ
डॉ. रज़िया आरिफ़
संगीता कुमारी
डेज़ी जैसवाल
नीलिमा शर्मा
राखी शर्मा
कविता राठी
प्रिया वाच्छानी
रजनी अनिरुद्ध राठी
अर्पणा साह
एकता सरदा
आकांक्षा यादव
मंजुला रिशी
नैनी ग्रोवर
नीरजा अरोरा
उपासना सियाग
माण्डवी प्रकाशन
ग़ाज़ियाबाद (उ.प्र.) - 201001
अपने-अपने सपने • सम्पादिका : रमा शर्मा
सम्पादिका : रमा शर्मा
अपने-अपने सपने
सम्पादकीय
ईश्वर ने नारी की सृष्टि करी और नारी ने सृष्टिमात्र की। पति को देवता समझने वाली नारी, पति के लिए प्रेम-पुष्प, संतान के लिए वात्सल्य, भाई के लिए स्नेह और अपने पूज्य के लिए आदर, आने नन्हें से कोमल हृदय में संजोये रखती है और जब जैसा उसके जीवनक्षेत्र में समय आता है तब तैसा दया, स्नेह, करुणा, सहानुभूति का वह उपयोग करती रहती है। स्त्री का वास्तविक सौन्दर्य उसके शुद्ध एवं निष्कपट आचरण तथा उसके चारूचरित्र पर है। वह सद्व्यवहार और शुद्ध चरित्र से सौम्यता उसके चेहरे पर निखर उठती है और उसमें एक अद्भुत आकर्षक का निर्माण हो जाता है और तब हम अवस्था की आलौकिक नारी को किसी योगिनी की श्रद्धा से देखने लगते हैं, यही नारी की कसौटी है और योगिनी से मेरा अभिप्राय नारी के कवयित्री बन जाने से है, जिसके विविध रंग आप इस संकलन में पाकर मेरी कही उपरोक्त बात से अवश्य सहमत होंगे, ऐसा विश्वास है।
-रमा शर्मा